प्रकाशक
आरोग्य-मंदिर
गोरखपुर

पहली बार १९६१
पुस्तकालय-संस्करण
मूल्य
दो रुपये

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

दो शब्द

मैंने प्राकृतिक चिकित्साकी प्रगतिका अध्ययन करने, प्राकृतिक चिकित्सा-सबधी सस्थाओ, शिक्षणालयोको देखने और प्राकृतिक चिकित्साके विशेषज्ञोमे मिलनेके लिए सन् १६५५ मे यूरोपके कुछ देशोकी यात्रा की थी। इस सबधके सारे अनुभव कलमबद करनेकी कोशिश मैंने इस पुस्तक-मे की है। पर आदमी जो देखना चाहता है, वही तो उसे दिखाई नही देता, और भी बहुत-कुछ वह देखता है और इन सबकी अनुभूति उसे होती है। इस यात्रामे जो अनुभूतिया मुझे गहराईसे हुई वे स्वत कलमकी नोक-पर आ गई और कागजपर उतर गई। इनमे कई बडी मजेदार है और मेरा खयाल है कि वे पाठकोके लिए बडी रोचक सिद्ध होगी।

इस पुस्तकके बारेमे और क्या लिखू। आप स्वय पढिये। मुझे आशा है कि यह आपको पसद आयगी और आनददायक सिद्ध होगी।

आरोग्य-मदिर
१ फरवरी १९६१

विट्ठलदास मोदी

विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ
१	यात्राकी प्रेरणा और प्रस्थान	७
२	बंबईसे काहिरा	१०
३	प्राचीन सभ्यताके केंद्र मिस्रमे	१४
४	पोर्टसईद पहुचे	२४
५	जिब्राल्टरसे लदन	२७
६	लदनमे	३०
७	लदनके विभिन्न स्थान	३५
८	लदनके जीवनकी कुछ विशेषताए	४१
९	डाक्टर लीफके परीक्षा-गृहमे	४५
१०	ब्रिटिश कालेज आव नेचरोपैथी	४८
११	डाक्टर लीफका चिकित्सालय	५२
१२	डा० लीफका जीवन और कार्य	५६
१३	डाक्टर डमरके साथ	६२
१४	एडिनबराकी यात्रा	६९
१५	डा० थामसन और उनका चिकित्सालय	७८
१६	शेक्सपीयरके गावमे	८८
१७	टावरलेजमे एक दिन	१००
१८	पेरिसमे	१०६
१९	भारत-प्रेमी प्राकृतिक चिकित्सक	११९
२०	स्विट्जरलैडमे	१२८
२१	सुदर झीलवाला नगर जिनेवा	१३६
२२	अगूरवालोका मेला	१४४
२३	स्विट्जरलैडका गाव	१५१
२४	प्राकृतिक चिकित्साकी जन्म-भूमि जर्मनीमे	१६०
२५	उपसहार	१८१

: १ :

यात्राकी प्रेरणा और प्रस्थान

लदनसे प्रकाशित होनेवाला मासिक 'हेल्थ फॉर ऑल' बीस वर्षोसे पढता आ रहा हू। उसमे प्रतिमास छपनेवाले तीन-चारसौ प्राकृतिक चिकित्सकोके पते और उनकी बढती सख्या देखकर मुझे आश्चर्य होता रहा है। यहा तो लाख कोशिश करनेपर भी पढे-लिखे युवक रोटीका निश्चित जरिया न समझकर प्राकृतिक चिकित्सा सीखना नही चाहते, फिर क्षेत्रफलमे उत्तरप्रदेशसे भी छोटे इग्लैडमे इतने प्राकृतिक चिकित्सक कैसे पलते है ? जब इग्लैडके एक कलमी दोस्तसे यह पता चला कि इग्लैड-के अधिकाश प्राकृतिक चिकित्सकोने अमरीकाके प्राकृतिक चिकित्सा सिखानेवाले कालेजोमे और कुछने स्काटलैडके प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक थामसनके कालेजमे शिक्षा पाई है और दोनो जगह ही शिक्षा चार वर्षतक होती है तो मेरा आश्चर्य और बढ गया। मैने इग्लैडके अनेक प्राकृतिक चिकित्सकोसे पत्र-व्यवहारद्वारा सपर्क स्थापित किया, उनसे वहाकी प्राकृतिक चिकित्साकी स्थितिके सबधमे जानकारी प्राप्त की और धीरे-धीरे इग्लैडकी यात्रा करने और इन मित्रोसे मिलकर इग्लैडमे प्राकृतिक चिकित्साके विकासका अध्ययन करनेकी इच्छा बलवती होती गई। इस इच्छाने तब और जोर पकडा जब 'हेल्थ फॉर ऑल' के सपादक डाक्टर स्टैनली लीफने इग्लैड आनेके लिए मुझे निमत्रित किया। उनका चिकित्सालय, जिसमे सौ रोगी बराबर रहते है, देखनेकी इच्छा तो थी ही, मै उनका कालेज भी देखना चाहता था, इसलिए मै अपनी यात्रासबधी सभावनाओपर विचार करने लगा।

जब यह ज्ञात हुआ कि इग्लैंडके अलावा फ्रासमे भी जलोपचारक है और जर्मनीमे कूनेके तो नही, पर उनके समकालीन प्राकृतिक चिकित्सक फादर क्नाइपके ऐसे कई अनुयायी है, जो सफलतापूर्वक चिकित्सालय चला रहे है और स्विट्जरलैंडके जूरिख स्थानमे बिर्चर बेनर भी एक अच्छे आहारशास्त्री है, जिनका एक अच्छा चिकित्सालय है, तो इन लोगोमे मिलने और इनके चिकित्सालय देखनेकी भी इच्छा हुई।

इस प्रकार यात्राके लिए मेरे सामने आकर्पणके कई विपय थे। यह आकर्पण अपनी चरम सीमापर तब पहुचा जब प्राकृतिक चिकित्सा-की विधिवत् शिक्षाके लिए एक शिक्षणालयका आरभ करनेकी इच्छा मेरे मनमे पैदा हुई। इसका आरभ करनेके लिए कुछ शिक्षणालयोको देखना और उनके पाठ्यक्रमका अध्ययन करना आवश्यक था, अत. मैने साहस कर नवबर, १९५४ मे पासपोर्टके लिए लिख दिया और दिसबरमे पासपोर्ट आ भी गया। कही जाना टालता न जाऊ, अत मैने अपनेको बाधनेके लिए यात्राकी तिथि भी निश्चित कर दी।

मैने तुरत अपने मित्र श्रीगौरीशकर तोशनीवालको, जो बबईमे रहते है, लिखा कि जिस तरह भी हो अप्रैलमे साउथ हैम्प्टन जानेवाले किसी जहाजमे मेरे लिए जगह ले दे। पहले तो उन्हे किसी इटली जानेवाले जहाजमे जगह मिल रही थी, फिर साउथ हैम्प्टन जानेवाले मालके जहाजमे, पर मै तो यह यात्रा जहाजी जीवनका भी अध्ययन करनेके लिए करनेवाला था, अत माल ढोनेवाले जहाजमे जगह कैसे लेता और उसमे समय भी तो ज्यादा लगता। आखिर उन्हे एम० एस० बटोरी जहाजमे, जो १५ मईको बबईसे छूटनेवाला था, कोई छोडी हुई जगह मिल गई। मै जगह चाहता था टूरिस्ट क्लासमे, पर मिली फर्स्ट क्लासमे। टूरिस्ट क्लासके साठ पौड लगते, फर्स्ट क्लासके लिए अस्सी पौड देने पडे। एक महीनेके विलब और बीस पौड अधिकको मैने अपने आलस्य या अज्ञानका जुर्माना समझा और १५ मईको जहाज पकडनेके लिए बबई पहुच गया।

पासपोर्टके अलावा और भी कागज चाहिए थे, पर उनके लिए मुझे बहुत चिंता नहीं करनी पडी। जिस एजेंसीने मेरे लिए जहाजका टिकट खरीदा था वह मुझे सारी हिदायतें भेजती रही। बहुत-से कागज तो उसने मुझे भेजकर दस्तखत करा मगाये और सारे कार्य स्वय कर लिये। जहाज-का टिकट बेचकर कमीशन कमानेवाली सभी एजेंसिया यात्रीकी यह सहायता करती हैं।

: २ :

बंबईसे काहिरा

बवई तीन-चार दिन खूब घूमा, साथ ले चलनेका कुछ सामान कम था, वह इकट्ठा किया और पद्रह तारीखको बारह बजे बदरगाहपर आ गया। वहा बडी भीड थी—पाच-छ सौ यात्री और इसके चौगुने उन्हे विदा देने आये हुए लोग। पहले डाक्टरी जाचके लिए लबी कतार लगी, पर डाक्टर जाच क्या करता था, काडपर मुहर लगाता जाता था, अत यह काम शीघ्र ही पूरा हो गया। इसी तरहकी मुहरे दो-तीन जगह और लगी। फिर सामान कस्टम अफसरके पास गया। डर था कि कही ट्रक न खोलने पडे, पर उसने दो-चार सवाल पूछकर शीघ्र ही छुट्टी दे दी और मेरा कैमरा देखकर बोला, "कैमरा ले जानेकी रसीद ले लीजिये, नही तो आप दूसरा कैमरा साथ न ला सकेगे।"

दो बजे जहाजमे आ बैठा। बहुत-से मित्रोसे नीचे ही विदाई लेनी पडी। बडी मुश्किलसे चार साथ आ सके। जहाजवाले यात्रियोके सिवा किसी दूसरेको ऊपर जाने देना नही चाहते। जहाज देखकर तो मै हैरान हो गया। जहाज क्या है, किसी रईसका मकान—चारो तरफ सजावट, सफाई और रास्तोपर मोटे कालीन, कैबिन बहुत छोटा पर साफ-सुथरा, बढिया कुर्सी, टेबुल, हाथ धोनेका बेसिन, उसपर साबुन और तौलिया, गरम और ठडा पानी, सोनेके लिए साफ मुलायम बिस्तर, चार तरहकी रोशनी, आलमारी, जहाजमे पिगपाग खेलनेकी जगह अलग, तैरनेका बढिया लबा-चौडा हौज, जिमनासियम, पुस्तकालय, भोजनालयमे तीनसौ आदमियोके एक साथ बैठनेका प्रबध और साफ कपडे पहने सेवाका सारा

कोई विशेष कठिनाई नही हुई। आदमीकी दुनिया तो जान-पहचानसे ही बनती है। सभी एक-दूसरेसे परिचित होनेके लिए उत्सुक थे। पुरुषोंसे परिचय तो बात-की-बातमे हो जाता है, स्त्रियोमे परिचित होनेमे कुछ देर लगती है, पर वे भी तो अपना दायरा बढाना चाहती है, अत एक-दूसरेके द्वारा लोग उनसे भी परिचित होने लगे। एक-जैसे विचारके लोगोकी टोलिया बनने लगी। मेरा वक्त जिनके साथ कटा वे थे बिहार सरकारकी मासिक पत्रिका 'जनजीवन'के सपादक श्रीव्रजकिशोर नारायण और इलाहाबाद म्यूजियमके क्यूरेटर श्रीसतीशचद्र काला। कभी-कभी कराचीसे निकलनेवाली एक सिने पत्रिकाके सपादक भी हमारे टेबुलपर आ जाते थे। उर्दू शायरीके शौकीन थे, उन्हे बेशुमार शेर याद थे। बातचीतमे दो-तीन वाक्योके बाद कोई-न-कोई शेर सुना ही देते थे।

यात्रियोमे छात्रोकी सख्या अधिक थी, कुछ व्यापारी थे और कुछ घुमक्कड। छात्रोमे जहा डाक्टरी, इजीनियरिग आदिमे विशेषता प्राप्त करनेके लिए जानेवाले थे वहा इन विषयो या किसी अन्य विषयकी प्रारभमे ही शिक्षा लेनेके लिए जानेवाले भी थे। हिंदुस्तानके सभी प्रातोके लोग तो थे ही, ऐंग्लोइडियन, अग्रेज, जर्मन, अरब, यहूदी भी थे। छात्र पदाकाक्षी थे, अत वे सारे वातावरणको जानदार बनाये रखते थे। वे अपना समय विशेषत खेलोमे, बातचीतमे और पढनेमे लगाते थे। यहा शराबखानेमे बैठनेवालो, सिगरेट फूकते रहनेवालो और ताश खेलते रहनेवालोकी भी कमी नही थी। हर दूसरे दिनकी शामका वे इतजार करते थे जब बॉल-डास होता है और शराब कमाल दिखाती थी। जहाजपर शामको एक दिन सिनेमा दिखाया जाता है और दूसरे दिन नाच होता है।

जहाज पद्रह तारीखको चलकर सत्रह तारीखको कराची पहुचा। कराची शहर देखा। पहले मैने देखा नही था। देखनेवाले बताते है कि इसकी श्री जैसे नष्ट हो गई है। फिर जहाज अदन ठहरा। अदन भी मैने देखा। एशियाके दो देशोके शहरोमे सभवत बहुत अतर नही

होता—थोडे अमीर और बहुत-से गरीब, एक ही तरहका तौर-तरीका। जहाजके रुकते ही लोग अदन शहरमे पहुचे और बाजारोमे भर गये। यहा लोगोने घडिया, कैमरे, कलमे और वे सब चीजे खरीदी, जिनपर हिंदुस्तान और पाकिस्तानकी सरकारोने ड्यूटी लगा रक्खी है। ये चीजे यहा प्राय दो-तिहाई दामोमे मिल जाती है।

जहाज चले एक सप्ताह हो गया, पर इसकी सुख-सुविधासे सामजस्य स्थापित करनेमे अधिक कठिनाई हो रही है।

जहाज स्वेजमे पहुचनेवाला है। वहासे काहिराकी यात्रा करनी है। उम्मीद है, मिस्रके विगत वैभवके दर्शन होगे तथा उसकी हजारो वर्ष पुरानी सभ्यतासे परिचय।

आज तो यहा जहाजपर ईद मनाई जा रही है। साढे दस बजे नमाज पढी गई है और सभी हिंदू-मुसलमान-ईसाई एक-दूसरेसे गले मिल रहे है।

: ३ :

प्राचीन सभ्यताके केंद्र मिस्रमें

जहाज स्वेजमे २४ मईकी रातको पहुचनेवाला था। उमके पहले एक नोटिस लगी कि "स्वेजसे काहिरा और वहासे पोर्टसईदकी यात्रा होगी तथा वहाके दर्शनीय स्थान दिखाये जायगे। यात्री स्वेजमे उतार लिये जायगे और जहाज जब पोर्टसईद चौबीस घटेके बाद पहुचेगा तब वहा उन्हे जहाजपर पहुचा दिया जायगा। खर्च होगा साढे नौ पौंड।" साढे नौ पौंड कम नही होते—लगभग १२५ रुपये, पर अब जहाजपरकी आरभिक चहल-पहल, मिलना-जुलना कम हो गया था और दस दिनोके जहाजके एकरस जीवनसे ऊब भी पैदा हो गई थी, इसलिए मैने सोचा चलो, चौबीस घटे जमीनपर तो बीतेगे; साथ ही मिस्रकी प्राचीन सभ्यताके प्रतीक वहाके पिरामिड और स्फिक्स देखनेकी भी बडी इच्छा थी। पिरामिडोंके बारेमे तो बचपनसे ही पढता आ रहा हू। आज भी इस सबबके लेख देखकर पढ जाता हू और हमेशा यह चीज रहस्यमय और गौरवशाली लगी है। मैने सोचा, जुआ ही सही ओर १२५ रुपयेकी बाजी लगा दी।

जहाजके स्वेजमे पहुचते ही यात्रा करानेवाले एजेट जहाजमे आ पहुचे और पासपोर्ट वगैरह देखनेकी आरभिक कार्रवाई होने लगी। रातके आठ बजे हमे जहाजसे उतारा गया। तृतीयाकी रात्रि थी—अधेरी रात। जहाजसे पानीतक करीब पचास फुट नीची सीढी लटक रही थी जिसका सिरा मोटरबोटवाले पकडे हुए थे। हवा कुछ तेज थी, जिससे मोटरबोट बुरी तरह हिल रही थी। यात्री उतरने लगे और मोटरबोट-वाले हाथ पकडकर उन्हे उतारने लगे। मै जल्द ही उतर गया और उतरने-

वालोका तमाशा देखने लगा। सीढीपर लगी बल्बोकी कतार और जगमग करती जहाजपरकी रोशनी दीपावलीका-सा आभास दे रही थी। डेकपरके सैकडो यात्री मोटरबोटपर उतरनेवाले यात्रियोका लड-खडाना-सभलना देखकर मुस्करा रहे थे। कुल यात्रियोके, जो पैंतीस थे, उतरनेमे आधा घटा लगा। उन्हे मोटरबोट लेकर बढ चली। जहाजकी रोशनी दूर हो गई और मोटरबोट अधकारके घेरेमे आ गई। उसकी रास्ता देखनेकी आख बिल्लीकी आख-सी लग रही थी, जो कभी जलती, कभी बुझती रास्ता खोज रही थी। इस समय हल्की ठडक हो गई थी, जो चलती हवासे मिलकर बडी अच्छी लग रही थी।

नौ बजे मोटरबोट किनारेपर पहुची। हम लोग फाटकपर आये। वहा खडी पुलिस हमे गौरसे देख रही थी। पुलिसका एक आदमी तो लगता था जैसे किगकागका भाई हो, पूरा जिन्न। मेरा सिर तो उसके पेटके पासतक ही पहुचा। क्या यहा ऐसे आदमी बहुत होगे ?

घाटसे निकलनेपर काहिराके लिए यात्रा कारसे शुरू हुई। कारे काली साफ समतल सडकपर भागने लगी। आरभके कुछ मकान तो हिंदुस्तानके-से थे, पर वे शीघ्र ही समाप्त हो गये और हम लोग एक नये बसे शहरमे आ गये—छोटी-छोटी दोमजिली अमरीकी ढगकी इमारते, बडे-बडे मैदान, सडकके दोनो तरफ वृक्ष। यह सब कुछ पद्रह मिनटमे ही समाप्त हो गया और हमारी कारे निर्जन स्थानमे दौडने लगी।

सवासौ मीलकी यात्राकर हम रातके बारह बजे काहिरा पहुचे। काहिरा बबईका दूसरा भाई ही है—अधिक सुकुमार, अधिक सुदर। सुकुमार इसलिए कि इसकी प्राय सभी इमारते नई है, और सुदर इसलिए कि इसकी हर खास सडकपर दोनो तरफ वृक्ष है और जगह-जगह पार्क। सारा काहिरा जाग रहा था। सडको, बाजारो और दुकानोमे खूब चहल-पहल थी। काहिरामे बहुतसे नाइट क्लब है। ये एक तरहके थियेटर है जहा नाच-गाना होता रहता है। ये रातको एक-दो बजे बद होते है तभी काहिराके लोग सोते है

ग्रौर गो कि सूरज सुवह पाच वजे ही निकल ग्राता है, पर ये दस वजे उठते है।

हमे एक होटलमे उतारा गया ग्रौर सुवह सात वजे फिर कारसे यात्रा शुरू हुई। हमें वताया गया कि हम पिरामिड देखने जा रहे है। कारने नील नदी पार की—पुलके दोनो ग्रोरके फाटक दो-दो शेर वना रहे थे। ये काले पत्थरके वने थे, जो वैठे दूरतक देख रहे थे।

नील नदी

पुलसे एक मीलकी दूरी तय करनेके वाद हमे कारोसे उतारा गया ग्रौर ग्रव यात्रा ऊटोपर शुरू हुई। ग्राधे घटेके वाद ऊट ऊचाईपर चढने लगे ग्रौर हमे पिरामिड दिखाई देने लगा—पहले एक, फिर तीन। मिस्रमे कुल ग्यारह पिरामिडे है, जिनमेसे तीन हमारे सामने थे। सवसे वडा ४८० फुट ऊचा है ग्रौर तीस एकड जमीन घेरे हुए है। पिरामिड चौकोर होते है जो जडके ऊपरमे छोटे होते हुए सिरेपर केवल चोटीसे रह जाते है। यह सवसे वडा पिरामिड दस वर्षोमे वना था। दस वर्ष इसके लिए पत्थर

इकट्ठा करनेमें लगे थे और दस वर्ष ही इसकी नींव रोपनेमें। यह पिरामिड सौ-सौ, दो-दोसौ मनके पत्थरोंका बना है। आश्चर्य होता है कि इतने बड़े पत्थर जब क्रेन नहीं थे तो लाये कैसे गये होंगे। ये पिरामिड सालके केवल अगस्त, सितंबर और अक्तूबर महीनोंमें बनते थे, जब नील-में बाढ़ रहती थी और ये पत्थर नावोंद्वारा पिरामिडतक पहुंचा दिये जाते थे। ऊपर पहुंचानेके लिए बने पिरामिडको बालूसे ढकते जाते थे और पत्थर बालूपरसे घसीटकर ऊपर पहुंचाते थे।

जो बड़ा पिरामिड हम देख रहे थे वह चोपसका बनवाया हुआ है। यह ईसासे ६३० वर्ष पहले बना था। पिरामिड एक तरहकी कब्र है—राजा और उसके परिवारवालोंकी कब्र। राजा या रानीके मरनेपर जो कुछ भी उसका होता था उसके साथ कब्रमें ऐसी दशामें रख दिया जाता था कि सब कुछ ठीक रहे। शवपर कोई ऐसा मसाला लगा दिया जाता था कि वह सड़े नहीं और उसे आदमीकी शक्लके एक काठके बक्समें रखा जाता था, फिर उसे एक खालिस सोनेके बक्समें, फिर ऐसे ही दूसरे और तीसरे बक्समें, फिर सोनेके पत्तरसे मढ़े काठके एक चौकोर बक्समें और सब उस बक्सको एक-एक कर दो कमरोंमें। बक्सोंपर तस्वीरें उत्कीर्ण होती थीं। दूसरे और तीसरे बक्सोंका वजन पांच-पांच मन होगा। आखिरी बक्स बीस फुट लम्बा और उतना ही चौड़ा तथा ऊंचा होगा। इस बक्सके पास सब सोना और जेवरात, राजाके बैठनेका सिंहासन, उनकी खाट, कपड़े, जूते, टोपियां, हथियार, शृंगारका सामान, खाने-पीनेके बर्तन आदि रखे जाते थे। यही नहीं, देवी-देवताओंकी मूर्तियां, फल-तरकारियोंके बीज तथा अन्न भी रखते थे। कल्पना यह थी कि मरकर आदमी दूसरा जीवन शुरू करता है और उसे शुरू करनेके लिए इन सामग्रियोंकी जरूरत होती है। इस प्रकार राजा या रानीके साथ करोड़ोंकी सम्पत्ति गाड़ दी जाती थी और रास्ता बंद कर दिया जाता था। पत्थर-पर-पत्थर रख दिये जाते थे तब फिर सीमेंट-

जैमी किमी चीजमे प्लास्टर कर ऊपरसे मारे पिरामिडपर मगमरमर-सा कोई कीमती पत्थर जड दिया जाता था।
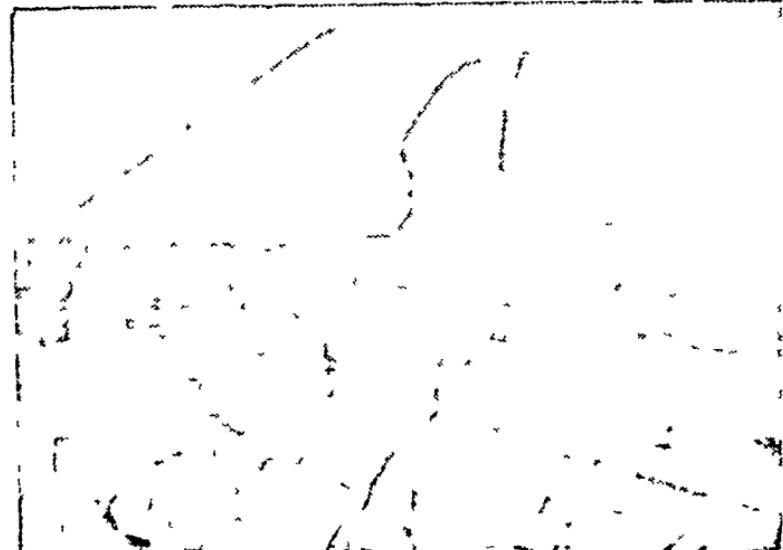
जवतक राजा या उमके वशज रहे, पिरामिडोकी रक्षा होती रही, फिर लोग भूल ही गये कि इनमे क्या है। कुछ आक्रमणकारियोने इन्हे तोडनेकी कोशिश की, पर वे सफल नही हुए। ज्यादा-मे-ज्यादा इनपर जडे पत्थर उखाडकर ले जा सके, जिन्हे उन्होने अपने महलके फर्श या दीवारोपर जडवा लिया।

भीतर धन है, इसका पता वहुत पहले चल गया था, पर खुदाई पचास वर्ष पहले ही शुरू हो सकी और धीरे-धीरे सारा सामान सुरक्षित निकल आया। इनमे ईसाके तीन हजार सातसौ वर्षमे पहले मिस्रमे पनपी मभ्यताका इतिहास है। फिर तो सभी पिरामिडोके अदर पहुचा गया और मव जगह सामान मिला और मभीमे रक्खे शव। शव जरा भी नही सडे है, उनका चमडाभर सूख गया है। ये शव, जिन्हे ममी कहते है, और इनके साथ रक्खा सामान काहिराके अजायबघरमे सुरक्षित है, जहा देश-विदेशमे इन्हे देखने आनेवाले यात्रियोकी भीड लगी रहती है।

इस पिरामिडसे एक फर्लागकी दूरीपर दूसरा पिरामिड है और उससे थोडे फासलेपर तीसरा। दूसरे पिरामिडकी बगलमें एक मूर्ति है, जिमे स्फिक्स कहते है। इसका मुह है मनुष्यका—बुद्धिका प्रतीक, सिर स्त्रीका—सौंदर्यका प्रतीक और शरीर सिहका—शक्तिका प्रतीक। शरीर इतना वडा है जितना पाच-सात हाथियोका मिलाकर होगा। शेर बैठा हुआ है, दोनो पजे सामने है और वह सिर उठाकर सामने देख रहा है। जैसा वडा शरीर है वैसे ही लबे-चौडे और ऊचे चबूतरेपर यह स्थित है। अबतक यह मिट्टीमे दबा पडा था, केवल पद्रह वर्ष पहले मिट्टी हटानेपर यह दिखाई देने लगा है। ठीक इसकी बगलमे सूर्य-मदिर है। छत इसकी ढह चुकी है, केवल कुछ खभे खडे है, जो चौकोर है। ये पत्थरोको जोडकर बनाये गए है, पर दो पत्थरोके बीचमे मुश्किलमे एक सूतकी जगह होगी।

पता नहीं, किस मसालेसे जोड़कर दो पत्थरोंको एक-सा किया गया था।

पिरामिडोंमें मिली चीजें बताती हैं कि मिस्रकी सभ्यता भी भारत-जितनी ही पुरानी है। भारतकी पुरातत्त्वसंबंधी चीजोंको देखनेसे भारतका

पिरामिडके सामने स्फिंक्स
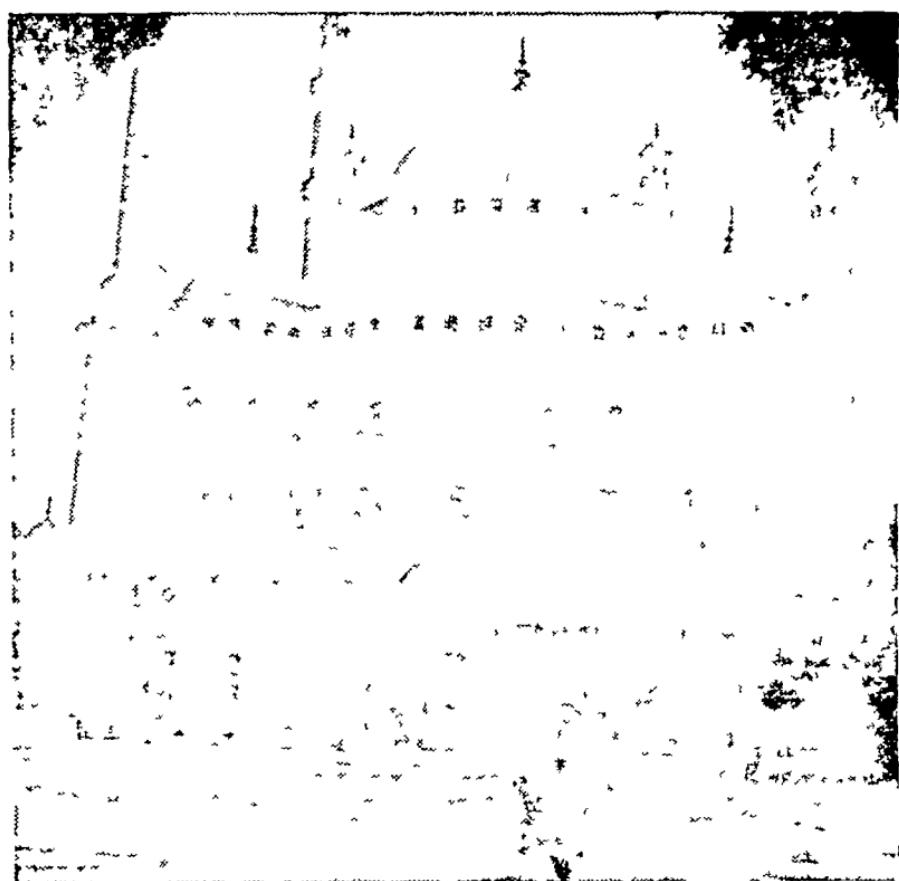
दार्शनिक दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है जिसने कलाको बड़ी सजीवता प्रदान की थी। मिस्रमें कुछ चित्र भी मिले हैं जो केवल चित्र हैं—वे केवल चित्र हैं, भाव उनमें कम-से-कम हैं। अजंता, एलोरा और नालंदाके चित्रों, मूर्तियों तथा स्थापत्य-कलामें एक कमनीय सौंदर्य है, पर मिस्रने केवल विस्तारको महत्त्व दिया है। यहाँकी मूर्तियोंमें गठन है, तज्जनित सौंदर्य भी, पर भाव नहीं, इसलिए वे सजीव नहीं लगतीं, न लगता है कि वे अभी बोल उठेंगी और न उनके बीच आदमी यह अनुभव करता है कि वह जीवनके बीच है। यहाँ केवल आश्चर्य होता है कुछ श्रद्धाजनित भाव पैदा होते हैं, पर सौंदर्यकी भावना जाग्रत नहीं होती। एलोराकी मूर्तियोंके सामने खड़े रहे रहनेकी इच्छा होती है, उन्हें बार-बार देखने-

को जी चाहता है, पर इन्हे देखकर मनुष्य जल्द ही अबा जाता है, यहासे चल देना चाहता है।

इन पिरामिडोके मूलमे मनुष्यका लोभ ही तो है। जीवनभर वह लोभसे आक्रात रहा और लोभको लेकर ही वह मरा। सोना मिस्रमे कही नही होता। मिस्रके लोग अन्य देशोको जीतकर ही सोना एकत्र करते
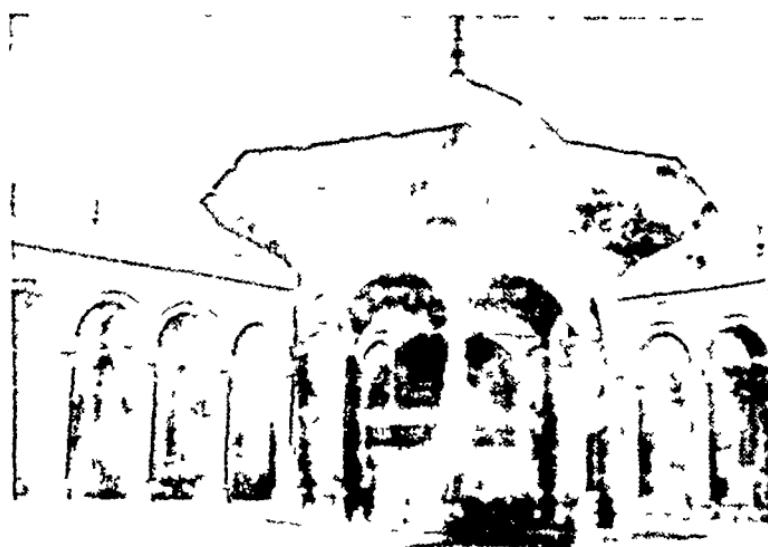
मुहम्मद अलीकी मस्जिद

थे, फिर मरते वक्त इसे कैसे छोडते? साथ ले जानेकी, दूसरोको उससे महरूम करनेकी उन्होने अच्छी तरकीब निकाली। फिर भी यह सब कुछ देखने

लायक था। मनुष्य कबसे बनता, बिगड़ता, सभ्य-असभ्य कहलाता रहा है।

पिरामिडोंके अलावा काहिरामें हमने मुहम्मद अलीकी मस्जिद देखी जो अस्सी वर्ष पहले बनी थी और आज भी नई-सी लगती है। इसकी इमारत बहुत विशाल है। इसको बनानेमें उस समय बारह लाख पौंडकी कीमतका मिस्री सिक्का लगा था। अंदर नमाज पढ़नेका कमरा तीनसौ फुट लंबा और इतना ही चौड़ा है। फर्शपर कीमती कालीन बिछे हैं।

मुहम्मद अलीकी मस्जिदके अंदरका एक दृश्य

छतमें खूबसूरत झाड़ और फानूस लटक रहे हैं, जिनकी संख्या एक हजार है। बरसों उनमें तेल जलता था, पर अब बिजलीके बल्ब जलते हैं। हमें दिखानेके लिए रोशनी की गई—दिनमें यहां जो अंधेरा हो रहा था वह दूर हो गया। फर्शके कालीन ज्यादा खूबसूरत लगने लगे और दीवारोंपर सोनेके अक्षरोंमें लिखी कुरानकी आयतें सोने-सी लगने लगीं।

यहा फारूक खान्दानका मकबरा भी बडा सुदर है। यह छोटा, पर ताजमहलकी शैलीपर बना है। इसमे कई कब्रे है और उनपर छोटा-सा खूबसूरत बुर्ज। कब्रे अलग-अलग तरहकी है। ये कब्रे मरनेके पहले ही बनवा ली जाती थी। सगमरमरकी इन कब्रोके भीतर शव लिटानेके लिए जगह छोड दी जाती थी। शाह फारूकने भी अपनी कब्र बनवा रक्खी है।

फारूक खान्दानका मकबरा

ये विचारे गद्दीसे हटा दिये गये है। पता नही, यह उन्हे नसीब होगी या नही।

इन्ही शाह फारूकके दो महलोके पाससे भी हम गुजरे। एकको तो

चहारदीवारी ही डेढ मील लबी है। फाटकपर फौजका पहरा था, पता नही, अदर क्या होता है। आदमी कितने बडे-बडे खयाली और जमीनपर महल बनाता है, पर वे कितनी जल्दी ढहते और कितनी जल्दी छोडने पडते है।

यह सब देखकर हम एक बजे होटल वापस आये। वहा भोजन किया, कुछ देर आराम और दो बजे हम पोर्टसईदके लिए चल पडे।

: ४ :

पोर्टसईद पहुंचे

कारोने शहर छोडा ओर वे खेतोके बीच आ गई। नीलकी एक नहर सडकके साथ वहने लगी। नहरमे जगह-जगह किश्तिया ओर छोटे-छोटे जहाज थे। इस नहरकी वजहमे दोनो तरफ दूर-दूरतक हरियाली है। नहर केवल पद्रह वर्ष पहले वनी है ओर नील नदी केवल बीस वर्ष पहले वाधी गई है वरना वह केवल काहिराको तवाह करनेके लिए थी। नीलके सिवा मिस्रमे कुछ है भी नही। इतने वडे देशमे नदिया अधिक न होनेके कारण अधिकतर तो रेगिस्तान है, पर नहरे वहुत अधिक भागको हरा बना रही है। सडकके दोनो तरफ चीडकी किस्मके पेड सारी १२० मीलकी सडकपर खडे थे।

सडकसे यहाका ग्राम्य जीवन दिखाई दे रहा था। खेतोमे वैल और ऊटोसे जुताई हो रही थी। गावोके मकान हिदुस्तानके मकानोमे अच्छे है। कपडे भी किसानोके तनपर पूरे है। ये गलेसे लेकर पैरतक घेरदार लवा लवादा पहनते है। स्त्रिया भी कुछ वैसी ही चीज पहनती है, पर उनके सिरपर ओढनी होती है। स्त्रियोके कपडे काले होते है और पुरुषोके सफेद।

केवल शहरकी स्त्रिया पर्दा करती है। यो तो उनके मुहपर वुर्का रहता है, पर वे उसे प्राय हटाये ही रहती है, न भी हटाये तो वह हटा-सा ही रहता है, क्योकि वह वहुत पतले सूतकी जालीका होता है। सारा मुह स्पष्ट दिखाई देता है। जालीमे करीव एक इच चौडी पट्टी होती है, जो नाक और आखके नीचेके हिस्सेको ढकती है। पुरुष अग्रेजी लिवास पहनते

है। उनकी देखा-देखी कुछ स्त्रिया फ्राक जितनी नीची स्कर्ट और सिरपर फेज टोपी पहनती है। ये पुरुषोके साथ बैठकर सिगरेट पिया करती है। सड़कके पास गावके बाजार भी कई आये, जहा खरबूजे, तरबूज, खजूर, टमाटर और अन्य खाद्य सामग्री बिक रही थी।

करीब सौ मील चलकर नहर सड़कसे हट गई। सड़कके दोनो ओर रेगिस्तान चलने लगा तभी इस्माइलिया शहर आया। इस शहरका नाम स्वेजसबधी खबरोके साथ पत्रोमे आया करता है। यही अग्रेजोकी फौजी छावनी है, जिसके बलपर वे स्वेजपर अपना कब्जा जमाये हुए है और प्राण-पणसे यह कब्जा बरकरार रखनेको उद्यत है। इस्माइलिया शहर भी इन अग्रेजोके ही अधिकारमे, उनकी जो आबादी है, उसके उपयोगके लिए है।[1] यह शहर छोटा पर बड़ा साफ-सुथरा है। यहा भी काहिराकी भाति सड़को-के दोनो तरफ पेड़ है। पेड़ करीनेसे कटे हुए है—किसी सड़कके गोल तो किसीके चौकोर और किसीके आयताकार।

इस्माइलियाके बाद स्वेज नहर हमारे साथ चलने लगी। यह सीमेंट-की बनाई गई है, जिससे पानी नीचेकी रेतमे न चला जाय और इतनी गहरी है कि एक जहाज आसानीसे बीचमें जा सके। छोटे तो भी जा सकते है या आ-जा सकते है, पर बड़े जहाजोंके लिए रास्ता एक ही ओरका है। यह रास्ता प्रथम महासमरके पहले बना था। इसके पहले हिदुस्तानसे इग्लैंड जानेवाले जहाज अफ्रीकाकी परिक्रमा करके जाते थे और रास्तेमे साढे तीन महीने लगते थे जबकि अब केवल पद्रह-बीस दिन लगते है।

८ बजे हमारी कारें पोर्टसईद पहुची। जहाज किनारेपर ही लगा था। वहासे जहाजतक एक पुल-सा बना दिया गया था जिसपरसे होकर

---

[1] स्वेजपर अब पूरी तरह मिस्रका अधिकार है। उसका राष्ट्रीय-करण हो गया है।

: ४ :

पोर्टसईद पहुंचे

कारोंने शहर छोडा और वे खेतोंके बीच आ गई। नीलकी एक नहर सडकके साथ बहने लगी। नहरमे जगह-जगह किश्तिया और छोटे-छोटे जहाज थे। इस नहरकी वजहसे दोनो तरफ दूर-दूरतक हरियाली है। नहर केवल पद्रह वर्ष पहले बनी है और नील नदी केवल बीस वर्ष पहले बांधी गई है वरना वह केवल काहिराको तबाह करनेके लिए थी। नीलके सिवा मिस्रमे कुछ है भी नही। इतने बडे देशमे नदिया अधिक न होनेके कारण अधिकतर तो रेगिस्तान है, पर नहरे बहुत अधिक भागको हरा बना रही है। सडकके दोनो तरफ नीडकी किस्मके पेड सारी १२० मीलकी [illegible] गये थे।

[illegible] यहाका ग्राम्य जीवन दिखाई दे रहा था। खेतोमे बैल और [illegible] चराई जा रही थी। गावोके मकान हिदुस्तानके मकानोसे अच्छे है। [illegible] किसानोके तनपर पूरे है। ये गलेसे लेकर पैरतक घेरदार [illegible] पहनते है। स्त्रिया भी कुछ वैसी ही चीज पहनती है, पर [illegible] आसानी होती है। स्त्रियोके कपडे काले होते है और [illegible]।

केवल शहरकी स्त्रिया पर्दा करती है। यो तो उनके मुहपर बुर्का रहता है [illegible] हटाये ही रहती है, न भी हटाये तो वह हटा-सा ही रहता है, क्योकि वह बहुत पतले सूतकी जालीका होता है। सारा मुह साफ दिखाई देता है। जालीमे करीब एक इच चौडी पट्टी होती है, जो नाक और [illegible] बीचके हिस्सेको ढकती है। पुरुष अग्रेजी लिबास पहनते

हैं। उनकी देखा-देखी कुछ स्त्रिया फ्राक जितनी नीची स्कर्ट और सिरपर फेज टोपी पहनती हैं। ये पुरुषोके साथ बैठकर सिगरेट पिया करती है। सडकके पास गावके वाजार भी कई आये, जहा खरबूजे, तरबूज, खजूर, टमाटर और अन्य खाद्य सामग्री विक रही थी।

करीब सौ मील चलकर नहर सडकसे हट गई। सडकके दोनो ओर रेगिस्तान चलने लगा तभी इस्माइलिया शहर आया। इस शहरका नाम स्वेजसबधी खबरोके साथ पत्रोमे आया करता है। यही अग्रेजोकी फौजी छावनी है, जिसके बलपर वे स्वेजपर अपना कब्जा जमाये हुए है और प्राण-पणसे यह कब्जा बरकरार रखनेको उद्यत हैं। इस्माइलिया शहर भी इन अग्रेजोके ही अधिकारमे, उनकी जो आबादी है, उसके उपयोगके लिए है।[1] यह शहर छोटा पर बडा साफ-सुथरा है। यहा भी काहिराकी भाति सडकोके दोनो तरफ पेड हैं। पेड करीनेसे कटे हुए हैं—किसी सडकके गोल तो किसीके चौकोर और किसीके आयताकार।

इस्माइलियाके बाद स्वेज नहर हमारे साथ चलने लगी। यह सीमेट-की बनाई गई है, जिससे पानी नीचेकी रेतमे न चला जाय और इतनी गहरी है कि एक जहाज आसानीसे बीचसे जा सके। छोटे दो भी जा सकते हैं या आ-जा सकते हैं, पर बडे जहाजोके लिए रास्ता एक ही ओरका है। यह रास्ता प्रथम महासमरके पहले बना था। इसके पहले हिंदुस्तानमे इग्लैड जानेवाले जहाज अफ्रीकाकी परिक्रमा करके जाते थे और रास्तेमे साढे तीन महीने लगते थे जबकि अब केवल पद्रह-बीस दिन लगते हैं।

छ बजे हमारी कारे पोर्टसईद पहुची। जहाज किनारेपर ही लगा था। वहासे सडकतक एक पुल-सा बना दिया गया था, जिसपरसे होकर

---

[1] स्वेजपर अब पूरी तरह मिस्रका अधिकार है। उसका राष्ट्रीय-करण हो गया है।

जहाजपर आसानीसे पहुचा जा सकता था, पर मै तुरत जहाजपर नही गया। पोर्टसईदमे घूमता रहा। यह भी नया शहर है, बहुत बडा बाजार और नई अमरीकी शैलीकी इमारते। यो तो मैने काहिरा और इस्मा-इलियामे भी चमडेकी चीजे बिकते देखी थी, पर यहा अधिक थी। यहा इटके चमडेके अटेची केस वगैरह बहुत आते है, जो अच्छे बने होते है।

सात बजे जहाजपर मै आ गया। वहासे सारा पोर्टसईद बिजलीकी रोशनीमे जगमगाता दिखाई दे रहा था। साढे सात बजे भोजनकी घटी बजनेपर मै भोजनालयमे चला गया और इसी बीच जहाज चल पडा।

: ५ :

जिब्राल्टरसे लंदन

जहाजके पोर्टसईद छोडते ही गर्मी कम होने लगी और जिब्राल्टर पहुचनेपर तो हमे ऊनी कपडे निकालने पडे। अब जहाजकी यह यात्रा तीन-चार दिनोमे ही समाप्त होनेको थी। जहाजपर खेलोकी प्रतियोगिताए होने लगी थी और नित्य उनके फल जहाजके सूचनापट्टपर लगा दिये जाते, जिनकी लोग उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करते रहते।

यात्राके तीन दिन बाकी रहनेपर फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता हुई। लोगोने तरह-तरहके स्वाग बनाये—भविष्यवक्ता, समुद्री डाकू, मोतीकी पुत्री, पान-बीडीवाला, हज्जाम आदि। कराचीकी एक महिला दुलहन बनी और उन्होने अपनी किसी सहेलीको दूल्हा बनाया। ताज्जुब होता था कि दूल्हा-दुल्हनके उपयुक्त इन्हे इतना सही लिबास कहासे प्राप्त हो गया। कुल चालीस स्वाग थे, जिनमेसे तीन श्रेष्ठ स्वागोको जहाजके कप्तानने इनाम दिये।

दूसरे दिन शामको कप्तानने हमे भोज दिया। भोज तो रोज ही होता रहता था, पर आजकी विशेषता यह थी कि जो जिस देशका था उसके टेबुलपर उसी देशका झडा लगा हुआ था। कुल बीस-पचीस देशोके झडे रहे होगे। अपने टेबुलपर हम चारो भारतीय थे। अपने मध्यमे अपना राष्ट्रीय झडा देखकर हमे बडी खुशी हुई। हमने उसे प्रणाम किया और यह महसूस किया कि हम यहा देशके नामसे ही जाने जाते है और हमे प्रत्येक कार्य और व्यवहार अपने देशके गौरवके अनुरूप ही करना चाहिए।

दूसरे दिन सुबह ही जहाज साउथैम्पटन पहुचनेवाला था। दो हफ्ते

जहाजमे रहते-रहते वह अपना घर-सा लगने लगा था, सगी-साथी सगे-से। थोडा दु ख-सा हो रहा था कि अब इन सबको शीघ्र ही छोडना पडेगा।

जहाजके कर्मचारियोसे भी आत्मीयताका सबध जुड गया था। वास्तवमे ये सारे पोलिश कर्मचारी बडे ही कर्तव्यपरायण है, बडी मेहनतसे काम करते है और इनके व्यवहारमे बडी मधुरता होती है। शुरूसे आखीरतक ये हमे अपना प्रिय मेहमान मानते रहे है और हर यात्रीकी हर सुविधाका प्रेमपूर्वक ध्यान रखते रहे है।

पोलैडसे ये अपना जहाज लेकर बबईके लिए चलते है। आनेमे जानेतकका भोजनका सारा सामान तथा सभी अन्य आवश्यक सामग्री ये पोलैडसे ही लेकर चलते है। कर्मचारियोमे पोलैडवासियोके अतिरिक्त कोई अन्य देशीय नही है। तीनसो कर्मचारियोमे पाच-सातको छोडकर कोई अग्रेजी नही जानता और दस-पाच ऐसे भी है जो अग्रेजीके टूटे-फूटे शब्दोके सहारे अपना काम चला लेते है। आपसमे ये पोलिशमे ही बात करते है। पोलिश यात्री पाच-सात ही होगे, पर भोजनके समय बजनेवाले रेकार्डोमे एक-तिहाई ये पोलिश रेकार्ड जरूर बजाते है और एक-तिहाई अग्रेजी तथा एक-तिहाई हिदुस्तानके फिल्मी गानोके रेकार्ड।

३ जूनको सुबह जहाज साउथैम्पटन पहुच गया। जहाजपर बराबर समाचार आते रहे है कि इग्लैडमे रेलकी जबरदस्त हडताल है। लोगोमे बडी घबराहट थी कि साउथैम्पटनसे लदन कैसे पहुचा जायगा, पर आज सुबह समाचार मिला कि साउथैम्पटनसे बसका इतजाम रहेगा। किराया लदनतकका २२ शिलिग होगा। रेलसे किराया केवल ११ शिलिग होता। लोगोने खैर मनाई कि लदन पहुचनेका इतजाम तो हो गया। दूना किराया लगनेपर भी यात्राका समुचित प्रबध हो जाना क्या कम था ?

जहाजके साउथैम्पटन पहुचते ही इग्लैड सरकारके पुलिस कर्मचारी जहाजमे दाखिल हुए और उन्होने हमारे पासपोर्ट देखे। फिर लोग जहाजपरसे धीरे-धीरे उतरने लगे और किनारेपर खडे सैकडो दर्शकोमेसे अपने

मित्रोको खोजने लगे, जो उन्हे लिवाने आये थे। जिस किसीको कोई साथी मिल जाता वह खुशीमे नाच उठता।

जहाजपरसे हमारा उतरना ही काफी नही था, हमारा सामान भी उतरना था। हम बदरके प्रतीक्षागृहमे आये। इतना बडा प्रतीक्षागृह देखकर तबीयत खुश हो गई। साफ और सुदर इतना कि किसी नवाबका महल भी क्या होगा। जगह-जगह बैठनेको गद्दीदार बेचे, एक तरफ लिखनेका कमरा, दूसरी तरफ नाश्तेके सामानकी दुकाने जिनपर औरते दौड-दौडकर काम कर रही थी और लोगोको गरमागरम चाय और काफी दे रही थी। प्रतीक्षालयके बीचमे तीन-चार बैक, टिकटघर, डाकखाना और टेलीफोनघर थे।

लगभग तीन घटेमे सामान उतरा और उसके कस्टम अधिकारियोके सामने पहुच जानेपर हम अपने सामानके पास आये और सामान ढूढ-ढूढकर कस्टमके अधिकारियोको दिखाने लगे। उन्होने हमे एक सूची दी और पूछा–

"देखिये, इस सूचीकी चीजे तो आपके पास नही है?"

सूचीमे सिगरेट, कपडे, खानेका सामान, कैमरा और जवाहरात थे। ये वे चीजे है जिनपर सरकार यहा बहुत कडा कर लगाये हुए है।

मैने कहा—"केवल कैमरा है।"

"दिखाइये।"

मैने कैमरा निकाला।

"इसे यहा बेचेगे तो नही?"

"इसकी कीमत यहा और भारतमे एक ही है, फिर बेचनेकी क्या बात है?"

"खैर, जब आप इग्लैड छोडे तो कस्टमवालोको इसे दिखाकर नोट करा दे, मै आपके कैमरेका नबर नोट किये लेता हू।"

इस प्रकार कस्टमसे छुट्टी मिली और हम लोग बसपर आ बैठे। हमारा सामान साथकी एक लारीपर लदा और बस लदनकी ओर बढ चली।

: ६ :

लंदनमें

सुबहसे ही बदली थी, कुछ बूदाबादी भी हो रही थी, पर इस समय बादल छटकर धूप निकल आई थी। शीघ्र ही बस साउथैम्पटनसे निकलकर गावोसे गुजरने लगी। चारो तरफ हरियाली थी। चरागाहो-

लदनके बाहर गावका एक मकान

मे स्वस्थ सुदर गाये और घोडे चर रहे थे। पोखरोमे बतखे तैर रही थी। मै बडे मौकेपर इग्लैड पहुचा था। अभी एक महीने पहलेतक किसी पेट-

पर एक पत्ती भी नही थी, पर वसतने इन्हे इस समय हरा वना दिया था। पृथ्वी भी हरियालीसे पटी पडी थी, पर हर जगह लगता था कि खास सफाई की गई है और पेड-पौधोको वहुत सवारकर रक्खा गया है। सडकपर नामको भी कूडा न था। मैने सोचा, वडा अच्छा हुआ कि हम वससे आये कि लदनका वाहरी भाग अभी ही देखनेको मिल रहा है।

पैसठ मीलकी यात्रा पूरी कर शामके छ वजे वस वाटरलू स्टेशनपर ठहरी। यहा भी लोग यात्रियोकी प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे उतरते ही मुझे किसीने पुकारा तो मुझे विश्वास नही हुआ कि यहा कोई मेरा भी परिचित हो सकता है, पर जव आगे वढकर लदनकी साहित्यपरिपद्के मत्री मित्रवर श्रीनारायणस्वरूप शर्माने मेरा हाथ पकड लिया तो मै देखता-का-देखता रह गया। उनके साथ उनके दो-तीन मित्र और थे। सवसे परिचय हुआ और मुझे लगा कि मै अपने घरमे और अपनोके बीच-मे ही हू।

कुछ देरमे सामान भी आ गया। शर्माजीको तुरत वी० वी० सी०के एक प्रोग्राममे जाना था। वे मुझसे अगले दिन मिलनेका वादा कर विदा हुए और मै एक टैक्सीमे वैठ अपने गतव्य स्थान इडियन वाई० एम० सी० ए०की ओर चला। टैक्सीके रुकनेपर मैने टैक्सीवालेसे पूछा, "भाई, जगह तो यही है न?"

"लदनमे ग्रेट रसल स्ट्रीट एक ही है और यही है। आप अदर जाकर और पूछ लीजिये।"

मैने जाकर पूछा। जगह यही थी और यहा मेरे लिए जगह रिजर्व थी। जो सज्जन मुझे कमरा वता रहे थे वे मुझसे मेरा पता पूछकर वोले, "तो आप हिंदुस्तानसे आये है, पर मै तो आपके शत्रु-देशके लिए काम करता हू।"

"मैने आपका मतलव नही समझा।"

उन्होने अपनी टाईपर लगा अर्धचद्र दिखा दिया। मैने समझ लिया कि ये यहा पाकिस्तानके राजदूतावासमे या पाकिस्तानसे सबद्ध किसी दफ्तरमे काम करते है।

"पाकिस्तान हमारा शत्रु नही है, वह हमारा भाई है। आपसमे कुछ गलतफहमी हो सकती है, पर हमारे सबध प्रतिदिन अच्छे होते जा रहे है और वह दिन दूर नही है जब हमे सारा ससार बडे-छोटे भाईके रूपमे ही देखेगा।" मैने कहा।

वह सज्जन शरमा गये। बोले, "ऐसी ही आशा मै भी करता हू।"

भोजनका समय हो गया था और सुबहसे अबतक कुछ ठीक खानेको नही मिला था। मैने उक्त सज्जनसे कहा, "यहा नजदीकके किसी शाका-हारी भोजनालयका पता बतानेकी कृपा करे।"

उन्होने 'लदन गाइड' निकाली और चटसे एक पता कागजपर लिखकर मुझे दे दिया और गतव्य स्थानतक पहुचनेका रास्ता भी बता दिया। दस कदमपर ट्यूब स्टेशन था। यहा ट्यूब उस रेलगाडीको कहते है जो जमीनके नीचे सुरगमे चलती है। लदनके अधिकाश भागमे ये रेलगाडिया बिजलीसे चलकर बहुत तेजीसे पहुचती है। मैने स्टेशनपर दो आनेका टिकट लिया और प्लेटफार्मकी ओर चला। प्लेटफार्मपर एक सीढी ले जा रही थी, जो स्वय नीचेकी ओर जा रही थी। सेकडो व्यक्ति सीढीपर खडे थे, कुछ प्लेटफार्मपर जल्द पहुचनेके लिए सीढीके साथ खुद भी उतर रहे थे। इस सीढीके सहारे उतरते कुछ डर-सा लगा, पर जब सभी इस-पर है तो डरना क्या ? प्लेटफार्मपर पहुचा और जल्द ही गाडी आ गई। मै गाडीमे चढकर तीन मिनटमे ही अपने गतव्य स्टेशनपर पहुच गया। वहा लोगोसे पूछता वेगो रेस्त्रा पहुचा। बडेसे कमरेमे डेढ-दोसौ स्त्री-पुरुष भोजन कर रहे थे। मै भी एक टेबुलके निकट जा बैठा और भोजन-की सूची देखने लगा। मुझे बडा आश्चर्य हुआ जब मैने देखा कि इस सूचीमे अडा भी शामिल है। मैने व्यवस्थापकसे इस सबधमे पूछनेकी

सोची, पर इस समय काम चलानेके लिए मैंने वेटरेससे कहा, "मेरी सहायता कीजिये और इस सूचीमेसे मेरे लिए ऐसा भोज़न ले आइये जो पूर्णत शाकाहार हो" और मैंने उसे अपना मतव्य समझा दिया। वह भोजन ले आई। कुछ उबले और तले आलू, उबली तरकारिया और अतमे फल और क्रीम। तृप्त होकर मैंने भोजन किया। भोजनके अतमे विल आया। सुनकर ताज्जुब न करे, इस एक बारके भोजनके मुझे साढे सात शिलिग अर्थात् छ रुपये देने पडे, ऊपरसे एक शिलिग टिप। मैंने व्यवस्थापकके पास जाकर पूछा, "आपके यहा तो ऐसे लोग भी है जो शाकाहारमे अडा और दूध शामिल नही करते।"

"है, पर थोडे। हम यह भोजनालय उन शाकाहारियोके लिए चलाते है, जो मास-मछलीका व्यवहार नही करते, पर दूध और अडेका प्रयोग करते है। कभी-कभी दूध और अडेका प्रयोग न करनेवाले शाकाहारी भी हमारे यहा भोजन करते है और हम उनके इच्छानुसार भोजन बनवा देते है।"

"आप भोजनकी किस पद्धतिके अनुसार चलते है ?"

"हम स्विट्जरलैंडके विर्चर बेनरकी पद्धति अपनाते है। उन्हीके यहा शिक्षा पाया हुआ भोजनशास्त्री हमारे भोजनालयका मुख्य रसोइया है।"

"आपके यहा नित्य कितने व्यक्ति भोजन करते है ?"

"सातसौसे लेकर ग्यारहसौतक।"

"आपने अपने भोजनके सबधमे साहित्य भी प्रकाशित किया है ?"

"जी हा, हमने किया है, पर वह मै आपको फिर दे सकूगा। यह लीजिये 'वेजिटेरियन न्यूज' पत्रिका। आप चाहे तो इसके सपादकसे मिले, वे आपको इग्लैडमे हुई शाकाहारकी प्रगतिके सबधमे आवश्यक सूचनाए दे सकेगे।"

देर हो रही थी। मै अपने स्थानपर वापस आया। कमरेमे आराम-देह बिस्तर बिछा था—साफ चादरे, तकिया और उम्दा कबल। नींद

आ रही थी, पर इस समय रातके साढे नौ बजे भी सूरजकी रोशनी कमरेमे आ रही थी। मैंने खिडकियोपर परदे खिसकाकर अंधेरा किया और बिस्तरपर लेट गया। सोचने लगा रेल, जहाज और वायुयानने किस तरह दूरीका प्रश्न दूरकर सारी पृथ्वीको एक बना दिया है, और इसी बीच पता नही कब मैं निद्रादेवीकी गोदमे चला गया।

: ७ :

लंदनके विभिन्न स्थान

मैं सुवह वाहर जानेके लिए तैयार ही हुआ था कि भाई नारायणस्वरूप शर्मा पधारे। उन्हे दु ख था कि शामको उन्हे मुझे जल्द ही छोडकर जाना पडा, पर आज शनिवार था और कल रविवार। ये दो दिन उन्होने मेरे लिए निश्चित कर दिये थे। उनके आते ही मैंने मित्रवर नारायणजी-को फोन कर दिया कि हम आपके पास शीघ्र आ रहे है, आप तैयार रहे। भाई नारायणजी अग्रेजीके महान् कवि कीट्सके घरके पास ठहरे थे। अत. पहले हमने कीट्सका स्थान देखनेका निश्चय किया। यह घर कीट्सके समयसे ही ज्यो-का-त्यो रक्खा गया है। उनके व्यवहारका सारा सामान उसी प्रकार सुरक्षित है और कई कमरोमे उनकी कविताओकी पाडु-लिपिया, उनके लिखे पत्र तथा उनकी रचनाओके आधारपर बनाये गए कलापूर्ण चित्र सजाये गये है। वातावरण वडा ही शात है। सव कुछ देखकर अग्रेजोके अपने कविको दिये गये सम्मानके प्रति श्रद्धा होती है। लोग चुपचाप कमरोमे जाते थे, निस्पद सव चीजोको धीरे-धीरे देखते थे। प्रश्नोका उत्तर देनेके लिए मार्ग-दर्शक भी था, वह भी वडे शात-भावसे पूछी वातोका उत्तर देता था।

कीट्सके स्मृति-स्थलसे निकलकर हम लोग हेपस्टेड हीथ गये। यह ढाईसौ एकडका वन उन लोगोके लिए जवाव है, जो लदनको घना वसा हुआ धुएसे भरा शहर समझते है। इस वनके अलावा भी लदनमे और वहुतसे वडे-वडे पार्क है। छ सौ चालीस एकडका हाइड पार्क तो लदनके वीचमे ही है। इन पार्कोको देखकर आश्चर्य होता है कि शहरके वीचकी

इतनी कीमती जगह किस तरह इतने बडे-बडे पार्कोंके लिए छोडी गई होगी,

लदनका विशाल चौक . ट्रफलगर स्क्वायर

पर यहा जहा लोग व्यक्तिगत स्वास्थ्यपर ध्यान देते हैं वहा यह भी जानते

है कि सामूहिक रूपसे जनस्वास्थ्यका ध्यान रक्खे वगैर आदमी स्वस्थ नही रह सकता ।

हैंपस्टेड हीथमे हम रीजेट पार्क गये। पार्क देखकर तबीयत खुश हो गई। पार्कके बीचमे बडी-सी झील है, जिसमे लोग नावे चलाते रहते है। हमने भी एक नाव किरायेपर ली। साथमे बी० बी० सी० के हिन्दी विभागके इचार्ज श्रीकिरणजी भी थे और इलाहाबाद म्यूजियमके क्यूरेटर श्रीकालासाहब भी थे । नौका-विहारके साथ नारायणजीकी कविताए सुननेको मिली। उनके मधुर कठमे प्रभावित होकर अनेक नौकारोही अपनी नावे हमारी नावके साथ-साथ चलाने लगे।

लदनमे देखनेको चीजे बहुत है। अजायबघर तो इतने है कि महीनो देखनेपर भी खतम न हो। ब्रिटिश म्यूजियम देखनेमे एक दिन लग गया, वह भी सरसरी तौरपर ही देखा गया। दुनियाभरकी चीजे है। एस्किमोसे लेकर अफ्रीकाके आदिम निवासियोतकका जीवन देखनेको उपलब्ध है—उनके कपडे, बर्तन, हथियार, औजार, पशु, नावे सभी साकार उपस्थित है। मिस्रके अजायबघरमे मिस्रका जो सामान नही है वह यहा मौजूद है और ऐसी तरकीब और सजावटके साथ रक्खा गया है कि सब चीजे स्वय समझमे आ जाती है। भारतीय विभागमे हिन्दुस्तानके सारे डाक टिकट, अनेक प्राचीन ग्रथोकी पाडुलिपिया और प्राचीन अनमोल चित्र है।

टावर ऑव लदनमे प्राचीन महल है, जिनसे कभी जेलका भी काम लिया गया है। स्कूलके बच्चे टोलियोमे जाते है और वहाके गाइड उन्हे इस तरह सब कुछ दिखाते है, बीच-बीचमे रोककर इस तरह समझाते है कि अग्रेजी राज्यका सारा इतिहास उनकी समझमे आ जाता है। यही राजघरानेकी तलवारे, मुकुट आदि भी देखनेको मिले। एक मुकुटपर कोहेनूर हीरा टका हुआ देखनेको मिला, जो स्वय एक इतिहास है। देखकर जीमे कसक-सी हुई कि कभी यह हमारा था।

मैडम तुसोदकी प्रदर्शनी लदनकी अपनी चीज है। यहा दुनियाके ऐतिहासिक, अनैतिहासिक व्यक्तियोकी हजारो मोमकी मूर्तिया देखनेको मिलती है, अपने पूरे-पूरे लिवासमे। कितने ही प्रसिद्ध चित्रोको साकार किया गया है। यहा आपको लेनिनसे हिटलरतक सभी प्रसिद्ध राजनैतिक व्यक्ति ही देखनेको नही मिलेगे, वल्कि कवि, चित्रकार, खिलाडी, अभिनेता,

टावर ऑव लदन

वकिघम पैलेसमे हुआ राजदरबार भी देखनेको मिलेगा और नेलसनका अतिम समय भी। एक लोमहर्षक विभाग भी है, जहा यूरोपमे किस तरह मृत्युका दड पाये लोग मृत्युके घाट उतारे जाते थे दिखाया गया है। सूली है फासी है और आजकी विजलीसे मृत्यु बुलानेकी भी पद्धति है। यह भाग वडा भयावह है।

यहा भारतके दो ही नेता है—गाधी और जवाहरलाल। जिन्नासाहव भी है। पता नही, इन तीनोके साथ क्यो ईमानदारी नही बरती गई।

टेम्स नदीपर लदन-पुल

जवाहरलालजी बहुत दुबले बीमार-से लगते है, गाधीजी मुश्किलसे पहचानमे आते है और जिन्नासाहव भी पूरे नही उतरे है। कालासाहव मेरे साथ ही

थे। ये मूर्तिया देखकर हमे वडा दुख हुआ। वहाके अधिकारीमे हमने अपनी राय वताई और कालासाहवने दूसरे दिन ब्रिटिश म्यूजियमके अधिकारीसे मिलकर मूर्तिया हटाने या ठीक मूर्तिया विठानेकी प्रार्थना की।

इतने वैभवशाली होते हुए भी लदनके लोग आपसमे या किसीसे वात नही करते। वसमे, ट्यूवमे लोग साथ वैठे चले जायगे, पर किसीसे कोई वात नही करेगा। रेलकी इतनी वडी हडताल हुई, पर कोई किसीसे चर्चा करता दिखाई नही दिया। एक दिन मै ट्यूवके नक्शेमे आर्चवे स्टेशन देख रहा था, पर वह मिल नही रहा था। पास खडे एक सज्जनसे मैने पूछा, "क्या आप इस नक्शेमे मुझे आर्चवे वता सकेगे ?"

"आइये, मै वही चल रहा हू।"

रास्ता यहा लोग वडे कर्तव्यभावसे वताते है। मै उनके साथ हो लिया। उन्होने पूछा, "आप भारतीय है ?"

"जी हा।"

"हमारा भी कलकत्ता, ववई और मद्रासमे आफिस है।"

"तो आप भारत गये होगे ?"

"गया तो नही, पर अभी वहासे कुछ मित्र आये थे। उन्हे हमने लदन घुमाया, तीन दिन रहे, रातको वारह वजेतक घूमते थे और वहुत सुवह ही फिर निकल पडते थे। लगता है, वे वहुत थककर गये है।"

फिर उनसे वहुत-सी वाते होती रही। मैने कहा, 'ताज्जुव है, आप इतनी वात कर रहे है ?"

उनसे कुछ दोस्ती-सी जुड गई थी। वोले, "हम विदेशीसे तो वात कर भी लेते है, पर अग्रेज तो अग्रेजसे कभी वात नही करेगा। मेरे आफिसका व्यक्ति भी मेरी वगलमे वैठा हो तो वह मुझसे एक शब्द भी नही वोलेगा।"

स्टेशन आ गया था, हम उतरे। मैने उन्हे धन्यवाद दिया और हाथ मिलाकर हमने अपनी-अपनी राह ली।

: ८ :

लंदनके जीवनकी कुछ विशेषताएं

धन्यवाद यहा कदम-कदमपर देना पडता है। फलवालेसे फल लीजिये, फल मिल जाय तब धन्यवाद दीजिये। पैसे दीजिये, यदि कुछ पाना ह तो उसके मिलनेपर धन्यवाद दीजिये। वात करनेकी रीति ही यहा लडाईके वाद वदल गई है। 'कृपाकर मुझे एक पौड सेव दे' कहना काफी नही है, आपको कहना होगा कि 'यदि आप एक पौड सेव दे सके तो आपकी वडी कृपा होगी।' और फिर मिलनेके वाद धन्यवाद देना वाकी ही रह जाता है, पर धन्यवाद देनेके वाद आपको कुछ मिलता भी है—मुस्कराहट। मुस्कराहट यहा वडी सस्ती है, कोई काम विना मुस्कराहटके नही होता, कोई वात विना मुस्कराहटके नही कही जा सकती। रास्ता किसीको दे दीजिये, मीठी और लवी मुस्कराहट मिल जायगी और कोई आपसे टकरा जायगा तो आपसे विना माफी मागे आगे नही वढेगा।

काम ये वडी तेजीसे करते है, सारा लदन दौडता-सा प्रतीत होता है। सच मानिये, लोग फुटपाथपर दौडते ही चलते है। ट्रेन, वस पकडनेको तो पूरी तरह भागते है, पर क्यूका वडा ध्यान रखते है। हर भोजनालय, चायघर, डाकघर, अखवारवालेके यहा क्यू लगी रहती है—सिनेमामे तो लगती ही रहती है, पर लवी-लवी क्यू पाच मिनटमे खत्म हो जाती है। स्टेशनपर टिकट वेचनेवालेके हाथ विजलीकी तरह चलते है। टिकट लीजिये, पैसे विना गिने उठाइये और जल्द-से-जल्द क्यूसे निकल जाइये। पैसे ही क्यो, नोट भी यहा नही गिने जाते। वैकमे मैने चेक देकर नोट लिये
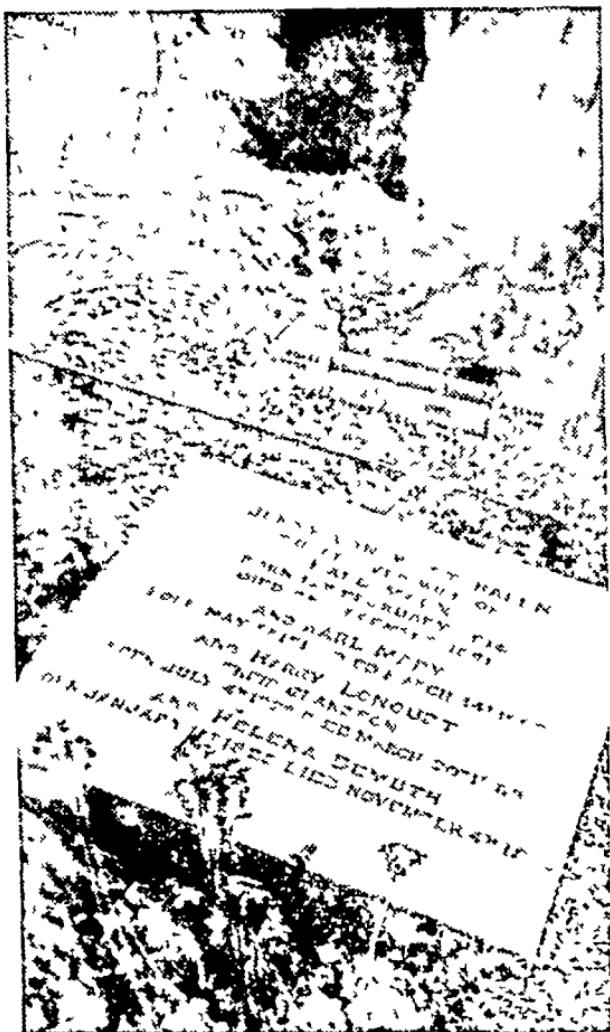
और उन्हे गिनने लगा तो नोट देनेवालीके चेहरेकी मुस्कराहट जाकर आकृति रूखी हो गई। उसने ढगसे मेरा धन्यवाद भी स्वीकार नही किया। बात मेरी समझमे नही आई तो एक अन्य साथीने बताया कि नोट गिननेका यहा रिवाज नही है। आपको विश्वास करना होगा कि आपको नोट अच्छे और पूरे मिले है।

हाइडपार्ककी एक सभाका दृश्य

इस तरहकी ईमानदारी यहा कही भी देखी जा सकती है। स्टेशन-पर, ट्रेनमे, होटलमे कही भी आपकी कोई चीज गायब नही होगी। जो

चीज आप भूलकर जहासे गये है, खोजने आनेपर वही या कही रास्तेसे हटाकर रक्खी मिल जायगी। सभवत इनकी इस ईमानदारीका कारण

कार्ल मार्क्स और उनके परिवारकी कब्र

इनकी समृद्धि और वेकारीका अभाव है।

सग्रहकी प्रवृत्ति तो इनमे है ही नही। जितना प्रत्येक व्यक्ति कमाता

है उतना साधारणत वह खर्च भी कर देता है। चिकित्सा मुफ्त होती है, लडके-लडकियोकी शादीमे कुछ खर्च नही होता, बेकारी और बुढापेमे खानेको सरकार देती है, फिर जोडे क्यो ? धन यहा एक मुट्ठीमे न रहकर हाथ बदलता रहता है।

आम तौरमे यहाके लोग बडे ढगमे रहते है। ठीक कपडे पहनते है और घर खूब सजाकर रखते है। सजावटमे फूलका खूब इस्तेमाल करते है। घरके पास थोडी-सी जगह हुई तो उस जगहमे फूल लगाकर सारे घरमे खूबसूरती पैदा करते है। बडी-बडी दुकानोतकको सजानेमे फूलके गुलदस्तो और गमलोका उपयोग होता है।

सबसे अधिक आकृष्ट किया मुझे यहाके लोगोकी श्रमके प्रति श्रद्धाने। छोटे-मोटे कामोके लिए अथवा सामान उठानेके लिए कोई कुली नही लेगा, स्टेशनतकपर अपना सामान लोग खुद ढोते है और जो काम करते है, मेहनत और पूरी ताकतसे करते है। काम करते समय इनको इसका ध्यान नही रहता कि काम ये दूसरेका कर रहे है या अपना। जिस कामको हाथमे लेते है अपनी पूरी शक्ति लगाकर करते है। सभवत इनकी यह शक्ति ही इस छोटेसे देशको दुनियाके बडे-से-बडे देशोके समकक्ष स्थान दिलाती रही है।

: ६ :

डा० लीफके परीक्षा-गृहमें

मै लदन तीन जूनकी रातको सात बजे पहुचा था, पर डाक्टर स्टैनली लीफको बारह तारीखके पहले फोन न कर सका। उनकी सेक्रेटरीसे बाते हुई—उन्होने मुझे दूसरे दिन ग्यारह बजे बुलाया। अभी रास्तोंसे परिचित नही था, अत कुछ पहले ही पहुचनेके विचारसे मै अपने स्थानसे सवा दस बजे ही चल दिया। डा० लीफ ट्यूब लाइनके मार्बेल आर्च स्टेशनके बिल्कुल निकट ही एक इमारतमे सप्ताहमे दो दिन बैठते है। इमारत मुझे तुरत मिल गई। मै पद्रह मिनट पहले ही पहुच गया था, अत इधर-उधर टहलता रहा और ग्यारह बजे मैने लीफसाहबके फ्लैटके दरवाजेपर लगी घटी बजाई। एक युवकने मुस्कराते हुए दरवाजा खोला। युवकका चेहरा डा० लीफके चित्रसे मिलता था, पर यह तो मै समझ ही सका कि यह डा० लीफ नही हो सकते। वह डा० लीफके पुत्र थे।

"आप मिस्टर मोदी है ?"

"जी हां।"

"चलिये, अभी डाक्टर लीफ आपसे मिलेगे।"

उन्होने मुझे एक कमरेमे लाकर बिठा दिया। वहा तीन स्त्रिया बैठी थीं, जो सभवत डा० लीफसे चिकित्सा करा रही थीं। कमरेमे एक तरफ टेबुलके सामने डा० लीफकी सेक्रेटरी बैठी थीं, जो बार-बार आते टेलीफोनका जवाब दे रही थीं। कमरा बडे करीनेसे सजा था और कुशादा था। एक तरफ डा० लीफका किसी फ्रासीसी चित्रकारका बनाया चित्र लगा था। दो मिनट बाद ही डा० लीफ आये। ऊचे, कद्दावर, मुखपर गभी-

रता और शाति, ऐसा व्यक्तित्व जो दूसरोको शीघ्र ही आकृष्ट कर लेता है। आते ही उन्होने मेरी तरफ हाथ बढाया। मैने भी उठकर उनसे हाथ मिलाया। बोले, "मुझे क्षमा करे, अभी मै आपको पाच मिनटमे बुलाता हू।" इस पाच मिनटमे उन्होने दो मरीजोसे बात की और फिर मुझे अपने कमरेसे लिवाने आये तो एक स्त्रीने पूछा—"क्या मै उपवासमे विटामिनकी गोलिया ले सकती हू ?"

"नही, न उपवासमे, न और कभी।"

मै डाक्टर लीफके परीक्षागृहमे था। डा० लीफने मुझे बिठाया और आरोग्य-मदिर तथा हिंदुस्तानमे प्राकृतिक चिकित्साकी प्रगतिके बारेमे पूछते रहे। फिर बोले, "बात तो आपको और मुझे भी बहुत करनी है, पर यह जगह तो बात करनेकी नही है। आप चपनी आये, वहा बाते होगी, पर बताइये, आप मुझसे क्या चाहते है ?"

"मै आपका कालेज देखना चाहता हू और उसके पाठ्यक्रमका अध्ययन करना चाहता हू।"

"तो आप कालेज बुधवारको आये, आपके लिए इसकी सुविधा कर मुझे खुशी होगी। हा, यह तो बताये, डा० सिधवा हिंदुस्तानसे लौट कैसे आये ?"

डा० सिधवाके बारेमे मैने भी सुना था कि वह डा० थामसनके कालेजसे ग्रैजुएट होकर कलकत्ता आये थे, पर प्रैक्टिस न चल सकनेके कारण एक महीनेके अदर ही इग्लैड लौट गये।

"वह कलकत्ता-जैसे बडे शहरमे प्रैक्टिस करना चाहते थे, पर हिंदुस्तान तो गावोका देश है। कलकत्तामे भी वे प्रैक्टिस जमा सकते थे, पर उसके लिए धीरज चाहिए था।"

"वह तो कहते थे कि वहाके प्राकृतिक चिकित्सक दवाका प्रयोग करते है, इजेक्शन देते है।"

"हिंदुस्तानके अधिकाश प्राकृतिक चिकित्सक कूने और जस्टके अनु-

यायी है और वे उन्ही सिद्धातोके अनुसार रोगियोकी चिकित्सा करते है, उनमे तो दवाका कही विधान नही है।"

"पर डा० सिधवा कहते थे कि वहा उसी चिकित्सककी चलती हे, जो दवा देता है।"

"यह वात ठीक हे कि दवा देनेवाले डाक्टरोकी हर जगह और वहा भी वहुत चलती है, पर वे डाक्टर है, प्राकृतिक चिकित्सक नही।"

"डा० सिधवाने तो वताया था कि अपनेको प्राकृतिक चिकित्सक कहनेवाले भी दवाका प्रयोग करते है।"

"तो मुझे आपको यह कहते दु ख होता है कि यह वात डा० सिधवाके मस्तिष्ककी उपज है।"

"मुझे इस सवधमे आपसे वहुत कुछ कहना-सुनना है। मै जानता हू कि हिंदुस्तान प्राकृतिक चिकित्साके लिए वहुत उर्वर भूमि है। आप रविवारको चपनी आये। उस दिन मुझे छुट्टी रहती है। आपसे सभी वाते समझूगा और यहाके वारेमे आप जो जानना चाहेगे वह वताऊगा।"

मैने उस समय डा० लीफसे विदा ली और उनकी प्रतीक्षामे बैठे रोगी उनके कमरेमे दाखिल हुए।

उनकी सेक्रेटरीने मुझे चपनी और ब्रिटिश कालेज आॅव नेचरोपैथीका पता लिखकर दिया और दोनो जगह पहुचनेका समय भी निश्चित कर दिया।

: १० :

ब्रिटिश कालेज ऑव नेचरोपैथी

शुक्रवारको छ बजे मै ब्रिटिश कालेज ऑव नेचरोपैथी पहु
लदनका यह हिस्सा, जहा कालेज है, ज्यादा साफ है। घर सभी एकमं
है और आबादी घनी नही है। कालेजका दरवाजा खोला मिसेज स्ट
लीफने। वह बडे प्रेमसे मिली और तुरत कालेज दिखाने चल पडी। व
तो वृद्धा, पर उनकी फुर्ती देखकर मै हैरान था। भाग-भागकर सब
दिखाती और बताती जा रही थी—लेक्चरके कमरे, उनका माग
रोगियोकी परीक्षा एव चिकित्साका स्थान। सभी कुछ बहुत साफ-सु
और तरतीबसे था। फिर वापस आकर मै उनसे बात करने ल
पढानेकी पद्धति, कोर्सकी किताबो आदिपर मैने बहुतसे प्रश्न किये,
स्टाला लीफ तो कालेजकी प्रबधकर्त्री है, अत उन्होने मुझसे कहा कि
अभी आपको यहाके अध्यापकोसे मिलाऊगी, आपको वे तथा य
रजिस्ट्रार सब बातोकी जानकारी करा सकेगे। इसी समय उ
कालेजके एक विद्यार्थीको बुलाकर मुझसे परिचय कराया। वो
"श्रीवीरुशाह आपकी सहायता इस सबधमे मुझसे अधिक कर सकेग
मुझे अध्यापकोसे मिलानेका काम भी उन्होने श्रीवीरुशाहको ही सौ
श्रीशाह अफ्रीकासे आकर यहा प्राकृतिक चिकित्साका अध्ययन कर
है। हिंदी मजेकी बोल लेते है, अत मेरे लिए उनसे अच्छा पथ-प्रद
कौन हो सकता था ?

श्रीशाहने बताया कि कालेजमे मैट्रिक पास विद्यार्थियोको लेते
और चार वर्षका कोर्स है। पढाई प्रात और सायकाल होती है, जि

विद्यार्थी दिनमे काम करके रोटी कमा सके और बचे समयमे पढ सके। यही पद्धति यहा इग्लैडके अधिकाश शिक्षणालयोमे है। माता-पिता बच्चो-के बडे होनेपर उन्हे कमाने-खाने और पढनेके लिए छोड देते है। यहा जीवन ही ऐसा है कि मनुष्य अपना ही खर्च चला सकता है। इसी कारण अधिकाश स्त्रियोको भी काम करना पडता है। कालेजकी पढाईकी यह पद्धति मुझे अच्छी जान पडी।

शाह मुझे चायघरमे ले गये। वहा मुझे चोकरदार आटकी रोटी, बिस्कुट और दूधके साथ चाय दी गई—चायके लिए भूरी चीनी थी। वहा दो स्त्री-पुरुष काम कर रहे थे। वे मुझे नया देखकर बात करने लगे। मुझे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि ये भोजनालयमे काम करनेवाले भोजनके सबधमे काफी जानकारी रखते है और भोजनमे फल-तरकारियो-के स्थानको खूब समझते है।

थोडी देरमे हम ऊपर गये। वहा डा० थामस डमरसे भेट हुई। वह कोई पैतीस वर्षके बडे ही उत्साही इकहरे बदनके युवक है। उनसे मेरा परिचय हुआ तो उन्होने भी डा० सिधवाके कथनके आधारपर हिंदुस्तानके प्राकृतिक चिकित्सकोद्वारा दवाका प्रयोग किये जानेकी बात कही। इतनेमे ही दो प्रोफेसर और आ गये। वे भी सिधवाके ही वाक्य दुहरा रहे थे। मैने उन्हे बताया कि भारतमे कूनेकी पद्धति ही सर्वाधिक चलती है। हम रोगियोको सुबह-शाम ठडे पानीका कटिस्नान और मेहनस्नान देते है और भोजनमे रोटी, सब्जी और फल चलता है। चिकित्सामे हम उपवास और योगासनोको विशेष स्थान देते है। ठडे पानीकी बात सुनकर एक डाक्टर सिकुड-से गये। उन्हे ठडे पानीके प्रयोगकी बातमे बडा आश्चर्य हुआ। मैने उन्हे बताया कि यह आपका गर्मीका मौसम तो हमारे यहाके उत्कट जाडेके मौसम-जैसा है। गर्मीमे तो हमारे यहा पसीना चलता रहता है। इसपर डा० डमरने कहा, "आपके यहा परिस्थिति भी तो भिन्न है, जिससे बहुत साधारण चिकित्सासे ही रोगी अच्छे हो जाते है।"

"अच्छे ही नही होते, बहुधा हमारी आशासे भी जल्द अच्छे होते है।"

"यहा तो लोग परेशानी और जल्दीमे रहते है। आए दिन उन्हे इजेक्शन और टीके लगते है। उनकी चोटका असर लोगोके दिमागपर रहता है। दवा भी लोग जहरीली-से-जहरीली खाते रहते है, जिससे उन्हे लाभ पहुचानेमे बडी कठिनाई होती है।"

"पर यहा सभी प्राकृतिक चिकित्सकोकी ठीक चलती है। यहा प्राकृतिक चिकित्सापर लिखकर तो कोई नही कमा-खा सकता, पर प्रैक्टिस आसानीसे चल जाती है।" एक दूसरे डाक्टर बोले।

"आपने कोन-सी किताबे पाठ्य पुस्तकके तौरपर स्वीकार की है ?" मैंने डा० डमरसे पूछा।

"डा० लिडल्हार, टिल्डन, शेल्टन आदिकी।"

"ये मिल जाती है ?"

"मिलती तो नही, वर्षोसे छपी नही। पहले जिन्होने इन्हे लिखा था उनमे बडा जोश था। वे किसी तरह छपवा लेते थे। ये किताबे छपे तो केवल विद्यार्थियो या प्राकृतिक चिकित्सकोके कामकी होगी। वे बिकेगी कितनी ? और लडाईके बाद तो यहा छपाई और कागजकी कीमत इस कदर बढ गई है कि किसीके लिए भी उतना रुपया फसाना मुश्किल है। केवल डा० शेल्टनकी किताबे मिलती है। वे अपनी पुस्तके स्वय छापते और बेचते है।"

"तब तो किताबे छापनेके लिए भी एक कोष कायम करना होगा।" मैने सलाहके तौरपर कहा।

"साधारण जनताके लिए लिखी गई किताबे तो खूब चलती है, पर गभीर किताबे तो कोई सस्था ही छाप सकती है, इसके सिवा कोई दूसरा उपाय नही है। आस्टियोपैथीपर सबसे अच्छी किताब 'आस्टियोपैथी एक्सप्लेड' है, पर इसे अस्टियोपैथोकी सस्था ही छापती और बेचती है।

क्रम छापी गई हैं, अत. मूल्य १५ गिनी अर्थात् १६५ रु० है। कोई कैसे ख़रीदेगा ?"

"तो आप विद्यार्थियोको क्या पढनेको कहते है ?"

"वे हमारे लेक्चरोपर निर्भर रहते है।"

इतनेमे ही घटा बजा। डा० डमरने मुझे एक फुलसकेप साइजकी टाइप की हुई फाइल दी। बोले—"आप इसे तबतक देखे, मै अभी पढाकर आधे घटेमे आता हू।"

मै वह फाइल पढने लगा। कोई २६ पाठ है। प्राकृतिक चिकित्सा-सबधी सिद्धात, उपवास, भोजन, जलोपचार आदिपर एक सर्वांगीण पुस्तककी विषयानुक्रमणिका इसे कहा जा सकता है। सभी प्राचीन और अर्वाचीन प्राकृतिक चिकित्सकोका इसमे हवाला दिया गया है। मुझे लगा कि हम भी अपने कालेजका पाठ्यक्रम कुछ इसी प्रकारका बना सकते है।

डा० डमर जब वापस आये तो मैने उन्हे इस पाठ्यक्रमपर बधाई दी और इस पाठ्यक्रमकी प्रतिलिपिकी माग की। उन्होने दो-एक दिनमे प्रतिलिपि देनेका वादा किया। डा० डमरसे और भी बाते हुई। इन लोगोका ध्यान आस्टियोपैथीपर अधिक है। मैने कालेजके दो श्यामपट्टोपर भी देखा कि आस्टियोपैथीके पाठ पढाते वक्त शरीरकी कुछ अस्थियो और माशपेशियोकी आकृति बनाई गई है। कमरेके एक ओर शरीरकी हड्डियोका पूरा ढाचा था।
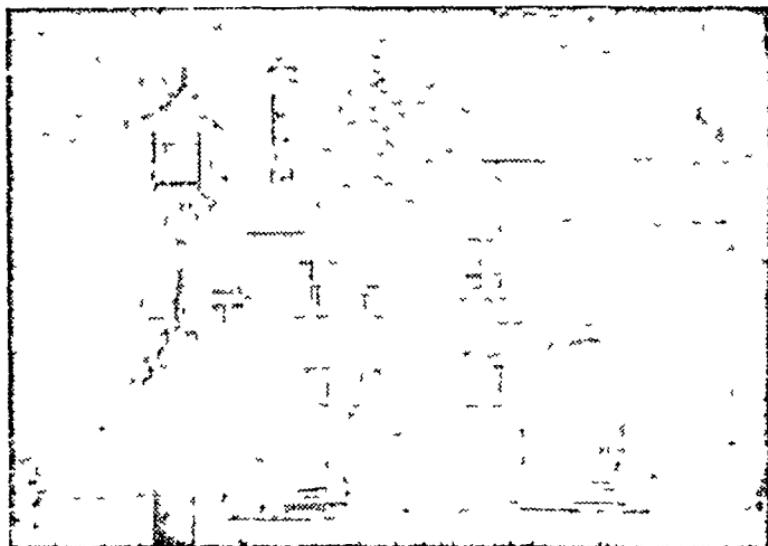
मैने दो-तीन दिन कालेज जाकर उसकी शिक्षा-पद्धति समझनेके लिए शिक्षकोके पढाते वक्त कक्षामे बैठनेका निश्चय किया।

जिन तीन प्रोफेसरोसे बाते हुई, वे सभी अपने-अपने विषयके पडित है और अपने विषयपर विश्वासपूर्वक बात करते है। डा० डमर विशेष प्रतिभाशाली और उद्भट विद्वान् लगे। इनकी प्रैक्टिस भी यहा खूब चलती है, पर कालेजमे यह पढाने अवश्य जाते है। बडे मिलनसार है और प्राकृतिक चिकित्साके प्रचारमे विशेष योग देते है।

: ११ :

डा० लीफका चिकित्सालय

रविवारको मै चपनी गया। सुबह ९ बजकर ३८ मिनटपर मार्बल आर्च स्टेशनके पास बस मिली, जो १०-५५ पर वर्कमस्टेड पहुची। मेरे साथ मेरे मित्र श्रीवटुक थे। चपनी लदनसे ३५ मील दूर एक गावमे है। यहाके गाव बडे सुदर होते है, अत गाव देखनेकी इच्छासे वे मेरे साथ थे।

चपनीका चिकित्सालय
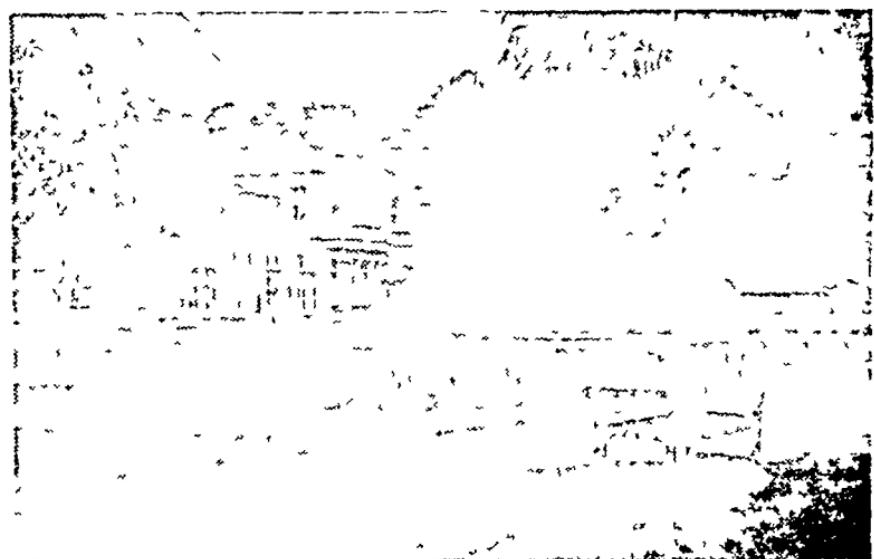
वह वर्षोसे 'आरोग्य'के पाठक है, इसलिये प्राकृतिक चिकित्सासे भी परिचित है। वर्कमस्टेडपर हमारी बस रुकी। वहा डा० लीफने अपनी कार भेज दी थी। उसपर तीन मील चलकर हम चपनी पहुचे। लदन छोडनेके

वाद सारा रास्ता बडा सुदर दीख पडा। बीच-बीचमे गाव क्या, छोटे-छोटे कस्बे ही आते है और चारो तरफ खेत है। ऊची-नीची जमीन हरियाली-से भरी हुई है। सब कुछ बडा साफ है। किसी सडकपर कागजका एक टुकडा भी नही था। खेत जैसे सवारकर रक्खे गये है और चपनीके पास तो आबादी और भी कम ह। दूर-दूरतक हरियाली-ही-हरियाली है। हमारी कार चपनी पहुचकर रुक ही रही थी कि डा० लीफ एक ओरसे आये। मैने श्रीबटुकका उनसे परिचय कराया। उन्होने मुस्कराते हुए हमसे हाथ मिलाया और अपना चिकित्सालय दिखाने ले चले। चिकित्सालय दोसौ एकडके हरे-भरे उपवनमे है और यहा सौ रोगियोके रहनेका स्थान है, जो हमेशा भरा रहता है।

चिकित्सालयके अहातेमें रोगियोके रहनेके काठके कुछ सुंदर घर

इग्लैड और भारतकी आर्थिक स्थितिमे बडा अतर है, जो यहा और वहाकी सभी चीजोमे दीख पडता है। यहाके गावके घर भी बडे सुदर और

सभी सुविधाओसे पूर्ण है। फिर चिकित्सालय तो हर जगह अच्छा ही बनाया जाता है। डा० लीफका चिकित्सालय भी बहुत ही बढ़िया है। सब कुछ ऐसा है, जैसा हमारे यहाके शौकीन रईसको भी नसीब नहीं होता। चिकित्सालयके अदरके रास्तोपर सुरुचिपूर्ण ढगसे कीमती कालीन बिछाये गये है। रोगियोके लिए छोटे-छोटे पर आरामदेह कमरे है। उनके बैठने-का कमरा, भोजन करनेका कमरा, धूपमे बैठनेके लिए शीशेकी दीवारोका कमरा, सब अलग-अलग है। चिकित्सालय भी इसी इमारतमे है। स्त्रियो और पुरुषोके लिए चिकित्साके अलग-अलग स्थान है। स्त्रियोके लिए नर्से है और पुरुषोके लिए पुरुष परिचारक।

चपनीके चिकित्सालयके पीछेका दृश्य

चिकित्साके कमरे एक गलीके दोनो ओर है—ठडा, गरम-ठडा कटिस्नान लेनेका कमरा, भाप-नहानका कमरा, गरम नहानका कमरा, बिजलीकी चिकित्साका कमरा, अस्थि-चिकित्साका आस्टियोपैथी कमरा, एनिमा और अन्त्र-प्रक्षालनका कमरा। चिकित्साके और सब काम तो

डा० लीफके सहकारी कर लेते है, पर अस्थिचिकित्साका काम केवल डा० लीफ करते है। सुबह वह रोगियोको सात बजेसे देखना शुरू करते है। रोगी उनके कमरेमे एक-एक कर जाते है। ग्यारह बजे यह काम खत्म करके वह अस्थि-चिकित्साका काम दो घटे स्वय करते है।

चिकित्सालय देखनेमे एक बज गया। अब हमे डा० लीफ भोजनके कमरेमे ले गये और फिर ढाई बजेसे पाच बजेतक बात करनेका समय निश्चित किया।

भोजनमे सलाद था—कच्चा टमाटर, खीरा, मूली, प्याज, उबला चुकन्दर और सलादकी पत्तिया। सलादमे डालनेके लिए जैतूनका तेल और क्रीम। बटुकजीने नमक न देखकर नमककी माग की। टेबुलपर ही एक शीशी रक्खी थी, जिसमे काली मिर्चका सफूफ-सा भरा लगता था। उन्हे बताया गया कि यह काली मिर्च नही है, सेलरीके सागका नमक है, आप इसका नमककी तरह उपयोग करे। थोडा मैंने भी लिया। नमक अच्छा था। वह नमकीन होनेके साथ-साथ कुछ कटु भी था।

सलादके बाद भुने आलू मिले और चोकरदार आटेकी रोटीके टोस्ट और मक्खन। इसके बाद कटोरीमे दही और फल था। यह चीज बटुकजी-को बहुत पसद आई। बगलमे बैठी भोजन करती एक स्त्रीसे वह बोले, "अबतक मै खरगोशका खाना खा रहा था, पर यह चीज अच्छी है।" वह मुस्कराई। मैंने कहा, "मेरे मित्रको आप बडा न समझे, ये बिल्कुल बच्चे है, इन्हे केवल मीठी चीजे पसद आती है।"

"प्राकृतिक भोजन तो धीरे-धीरे ही पसद आता है। कुछ दिन बाद इन्हे यहाकी हर चीज स्वादिष्ट लगेगी।"

भोजनके बाद ढाई बजेतकका समय हमारे पास था। यह समय बितानेके लिए मै डा० लीफके पुस्तकालयमे चला गया।

: १२ :

डा० लीफका जीवन और कार्य

ढाई बजे डा० स्टैनली लीफ मुझे पुस्तकालयमे ही मिले और अपने कमरेमे ले गये। इसी कमरेमे वह रोगियोको देखते है। कमरा काफी बडा है। एक तरफ रोगियोको सुलाकर परीक्षा करनेका टेबुल है और उसीके पास वजन लेनेकी मशीन, दूसरी तरफ परीक्षाके कुछ यत्र और पीछेकी

डा० स्टैनली लीफ

तरफ डा० लीफकी कुर्सी। मुझे बिठाकर मुस्कराते हुए डा० लीफने मुझसे कहा, "मुझसे जो कुछ आप पूछना चाहे इस समय पूछ सकते है।"

डा० लीफकी इस मुस्कराहटमे बडी आत्मीयता थी। इसने दो देशोकी दूरी मिटा दी और मैने अपनेको डा० लीफके बहुत निकट पाया। मैने सोच रक्खा था कि मै डा० लीफसे कुछ सैद्धातिक ही प्रश्न करूगा, पर उनके 'जो कुछ चाहू पूछ सकता हू' के निमत्रणने मेरे मनमे उनकी जीवनी जाननेकी उत्सुकता पैदा कर दी।

डा० लीफ सन् १८६२ मे रूसके एक गावमे पैदा हुए थे। जब यह छोटे थे तभी इनके माता-पिताने व्यापारके लिए रूस छोड दिया और दक्षिण अफ्रीका चले आये। यही डा० लीफका बचपन बीता और यही उन्होने अपनी शिक्षा पाई। यह माइनिंग इजीनियर हो गये। बचपनसे ही शिकारका शौक था और बदूक चलानेके प्रति रुचि। अत प्रथम महायुद्ध (१९१४-१८) मे यह सेनामे भर्ती हो गये, पर यह दो वर्ष ही काम कर पाये थे कि युद्धमे घायल हो गये और सेनामे हटा दिये गये। घर आकर यह भयकर रूपमे बीमार पड गये और इन्हे किसी उपचारसे कोई लाभ नही हुआ। इसी बीच इन्हे अमरीकाके प्राकृतिक चिकित्सक मेकफैडन-की स्वास्थ्यसबधी एक पुस्तक मिली, जिसमे तदुरुस्तीके नियमोका विवेचन किया गया था। इस पुस्तकका इनपर विशेष प्रभाव पडा और उसके अनुसार चलकर इन्होने स्वास्थ्य प्राप्त किया। फिर तो प्राकृतिक चिकित्सा-के सबधमे इनकी अधिकाधिक जाननेकी इच्छा हुई और यह अमरीका जाकर मैकफैडनके प्राकृतिक शिक्षणालयमे भर्ती हो गये। दो वर्ष वहा पढकर एक अस्थि-चिकित्सा (आस्टियोपैथी) के कालेजमे प्रविष्ट हुए और वहा भी दो वर्ष पढकर वहाकी डिग्री प्राप्त की।

"तो आप भी उन प्राकृतिक चिकित्सकोमे है, जिनको बीमारीने उन्हे प्राकृतिक चिकित्सक बनाया।"

"हा, मेरी बीमारीने मुझे बताया कि बीमारी तो प्रकृतिके नियमो-के उल्लघनका फल है और स्वस्थ कुदरत ही कर सकती है। स्वस्थ होने-पर मैने इस सत्यका प्रचार करनेकी ठानी और ठीक तरह यह प्रचार कर

सकू, इसके लिए मैंने प्राकृतिक चिकित्साकी शिक्षा प्राप्त की।"

"इस प्रचार-कार्यका क्षेत्र आपने इग्लैंड क्यो चुना ?"

"मै मैकफैडनका प्रिय शिष्य था। उन्होने मुझे इंग्लैंड जानेकी सलाह दी और प्रोत्साहन भी।"

"यहा आपने अपना कार्य किस प्रकार आरभ किया ?"

"जहातक मुझे स्मरण है, मैंने व्याख्यान-मालाओंद्वारा जनताका ध्यान प्राकृतिक चिकित्साकी ओर आकृष्ट करनेकी कोशिश की। लोग मुझसे स्वास्थ्यसबधी सलाह लेने आने लगे, इसलिए मुझे एक स्थायी स्थानकी जरूरत हुई और मैंने ब्रिस्टिलके एक कमरेमे अपना कार्य आरभ किया। एक वर्ष बाद मै लदन आ गया और यहा रोगियोको रोगमुक्तिका कुदरती इलाज बताने लगा।"

"यह चिकित्सालय कब खुला ?"

"चिकित्सालय स्थापित करनेका मेरे मनमे कोई विचार नही था, पर जो लोग मुझसे चिकित्सा कराते थे उनकी ही राय हुई कि चिकित्सा चलानेका ठीक वातावरण उपस्थित करनेके लिए मै एक चिकित्सालय खोलू। फलत सन् १९२६ मे चिकित्सालय खुला।"

यह चिकित्सालय लदनके निकट ही था, पर स्थान छोटा होनेके कारण बडी जगहकी तलाश हुई। चपनी इन्हे प्राकृतिक चिकित्साके लिए अनुकूल स्थान दिखाई दिया—दोसौ एकड भूमि, बढिया कोठी, पर इतने रुपये डा० लीफके पास नही थे कि इतनी जमीन खरीद सके। सारा कार्य यह अपने पुराने रोगियोकी ही सलाहमे कर रहे थे। उन्हे भी यह जगह पसद आई और उन्होने डा० लीफको सारे रुपये कर्जके रूपमे दिये। इस प्रकार चपनीका चिकित्सालय खुला, जो बढकर आज सौ-सवासौ रोगियोको स्थान देने लायक हो गया है। यहा लगभग इतने ही रोगी बराबर रहते है और उनकी सेवाके लिए डा० लीफ और उनके पचहत्तर सहायक

है। इस सख्यामे वे कार्यकर्त्ता भी शामिल है, जो वाग, तरकारीके खेत और भोजनालयका काम देखते है।

डा० लीफका काम इग्लैडके लिए एक वडी देन कहा जायगा और हर वडा काम करनेवालेके सवधमे मेरी उत्सुकता उसका प्रेरणास्रोत जाननेकी होती है। यह जाननेके लिए मैने उनसे पूछा, "आपके काममे आपकी पत्नीसे आपको कितना सहयोग मिला ?" मेरा खयाल था कि सभवत इसी प्रश्नसे कोई सूत्र निकले।

"स्टालाने मेरा वहुत साथ दिया, पर अव जो है उनका प्राकृतिक चिकित्साकी ओर कोई झुकाव नही है।"

फिर डा० लीफने अपनी सतानोके सवधमे वताया—"मेरे दो सताने है। पुत्र पीटर प्राकृतिक चिकित्साका चार वर्षका कोर्स समाप्त करनेके वाद अव मेरे साथ ही काम करता है, दूसरी पुत्री है, वह भी प्राकृतिक चिकित्साको पसद करती है। वह अभी केवल १८ वर्षकी है।"

मैने 'हेल्थ फॉर ऑल'के सवधमे जिज्ञासा की तो डा० लीफने वताया, "प्रेक्टिस आरभ करनेके कुछ वर्ष उपरात व्याख्यान देने और भ्रमणका समय कम मिलने लगनेपर मैने एक पत्र निकालनेकी सोची और 'हेल्थ फॉर ऑल' प्रकाशित किया। पत्रिकाके प्रकाशनमे मुझे वडी मेहनत करनी पडी। प्रति मास वहुतसे लेख लिखनेके अलावा इसका सारा काम देखना पडता था। आज भी इसके लिए मुझे वहुत काम करना पडता है, पर मुझे इस वातका सतोष है कि इसके द्वारा होनेवाले प्राकृतिक चिकित्साके प्रचारके कारण आज इग्लैडमे कई सौ प्राकृतिक चिकित्सक और दर्जनो चिकित्सालय मजेमे चल रहे है और जनता प्राकृतिक चिकित्साकी ओर अधिकाधिक आकृष्ट होती जा रही है।"

"कालेजके सवधमे तो आपने कुछ वताया ही नही।"

"कालेज दूसरे महायुद्धके पहले ही खुला था। युद्धके समय उसे वद करना पडा। युद्धके वाद फिर शुरू हुआ। अवतक लगभग एकसौ स्नातक

कालेजमे निकल चुके है, जो इग्लैडमे हो या दूसरे देशोमे जाकर सफलता-पूर्वक प्रैक्टिस कर रहे है।"

"पर ब्रिटेनमे तो सभीको मुफ्त दवा मिलती और चिकित्सा होती है, फिर लोग प्राकृतिक चिकित्साकी ओर क्यो आकृष्ट होते है ?"

यह काम भी यहा मशीनकी ही तरह होता है, आदमीसे आदमीका कोई लगाव नही रहता, पर रोगकी अवस्थामे रोगी चिकित्सकका अधिक सपर्क चाहता है और प्राकृतिक चिकित्सक रोगीको समझे बगैर, उससे सपर्क स्थापित किये बिना, चिकित्सा कर ही नही सकता, अत प्राकृतिक चिकित्सकको रोगी मिलनेमे कठिनाई नही होती।"

"ब्रिटेनमे प्राकृतिक चिकित्साका साहित्य तो अच्छा नही निकल रहा है ?"

"लोग केवल साधारण व्यक्तियोको ध्यानमे रखकर ही लिखते है। मैने प्राकृतिक चिकित्सापर एक बडी पुस्तक शुरू कर रक्खी है। एक वर्षमे वह प्रकाशित हो जायगी। देखू उसके सबधमे आपकी क्या राय होती है ?"

मै जरा झेप-सा गया, पर तत्काल ही मैने कहा, "इसका फैसला तो अभी हुआ जाता है। आप लिखते किसके लिए है—साधारण पाठक या प्राकृतिक चिकित्साके विद्यार्थीके लिए ?"

डा० लीफ इस प्रश्नपर जरा देरतक मुस्कराये और फिर बोले, "दोनोके लिए।"

"दोनोको आप सतुष्ट कर सकेगे ?"

डा० लीफके पास इस प्रश्नका उत्तर नही था। उत्तरमे वह मुस्करा-कर रह गये।

डा० लीफका चिकित्सालय मैने देखा था, उसके कुछ रोगियोसे बात भी की थी और निश्चय किया था कि उनकी चिकित्सा समझनेके

लिए इनके चिकित्सालयमे एक सप्ताह रहूगा। अत मैने इनकी चिकित्सा-पद्धतिके बारेमे कोई प्रश्न नही किया। मुझे चुप होते देख डा० लीफने प्रश्नोकी झडी लगा दी। हिदुस्तानमे प्राकृतिक चिकित्साके आगमनके इतिहाससे आजतकके प्रचार और विकासके सबधमे पूछ गये। इन्हे वडा सतोष हुआ और बोले, "हिदुस्तानमे हमे बडी आशाए है।"

पाच बज रहे थे, बसके आनेका समय निकट आ गया था। हम उठ खडे हुए। डा० लीफ दूरतक मुझे पहुचाने आये। लौटे तो मुडकर मैने देखा डा० लीफ बच्चोकी तरह दौडे अपने घरकी ओर जा रहे है। डा० लीफका सारा काम जितना प्रेरक था उसके अनुपातमे इस ६३ वर्षके जवानका दौडना कम आश्चर्यजनक नही था।

: १३ :

डा० डमरके साथ

मैं 'ब्रिटिश कालेज ऑव नेचरोपैथी' कई दिन गया। शिक्षण-पद्धति समझनेके लिए कई कक्षाओमे बैठा भी। कई प्रोफेसरोमे बात की। इनमे डा० थामस जी० डमर मुझे अधिक प्रतिभाशाली प्रतीत हुए। इनसे भी बाते हुई और कई बार हुई। मुझसे बात करनेकी इनकी इच्छा भी बढ चली और इन्होने मुझे स्वय अपने घर बात करनेके लिए आनेको निमंत्रित किया। मेरे साथ श्रीशाह थे। उन्होने डा० डमरका पता नोट कर लिया और दूसरे दिन शामको हम लोग डा० डमरके घरके लिए निकले, पर उनके घरके निकट आकर हम भटक गये, अत जहा आठ बजे डा० डमरके घर पहुचना था, वहा हम आठ बजे रास्तेमे ही रहे। फिर वही रास्तेसे उन्हे फोनकर उनके घरका ठीक रास्ता समझा और हम लोग उनके घर साढे आठ बजे जा पहुचे। डा० डमर हमारी प्रतीक्षा कर ही रहे थे। उन्होने दरवाजा खोला और अपने छोटे पर सुरुचिमे सजे कमरेमे हमे लिवा ले गये। बाते शुरू हुई। मैंने कहा, "प्राकृतिक चिकित्सा-का कोई अच्छा-सा इतिहास भी तो होना चाहिए, जिसमे प्राकृतिक चिकित्साके विद्यार्थी उसके उन्नायकोमे परिचित हो सके तथा ससारमे हुई इसकी प्रगति और विकाससे परिचित हो सके।"

"चाहिए तो जरूर, पर है नही। कही-कही कुछ लिखा गया है, उसे जोडकर कुछ बन सकता है।"

"और प्राकृतिक चिकित्साके साहित्यका इतिहास तो होगा ही नही।"

"हा, ऐसी कोई चीज मेरे देखनेमे नही आई, पर प्राकृतिक चिकित्सा-पर एक पुस्तक मैं फासीसी भाषामे लिख रहा हू। उसके आरभमे मैंने प्राकृतिक चिकित्साका इतिहास जोडा है।" यह कहकर उन्होने अपनी पुस्तककी पाडुलिपि निकाली और इतिहासपर लिखे पृष्ठ मेरे सामने कर दिये, जो तीन थे। निश्चय ही मुझे इससे सतोष नही हो सकता था। मै तो चाहता था कि कोई वृहत् इतिहास हो जिसमे प्राकृतिक चिकित्साके उन्नायकोका जीवन पूरी तरह वर्णित हो और उनकी रचनाओका विशद परिचय हो।

"क्या फ्रेचमे प्राकृतिक चिकित्साका साहित्य है?"

"नही, बिल्कुल नही। एक प्रकाशकने गाधीजीकी 'आरोग्यकी कुजी' का अनुवाद प्रकाशित किया है और उन्होने ही मुझसे प्राकृतिक चिकित्सासे परिचित करानेवाली एक छोटी पुस्तिका चाही है। यदि उसे वहाके लोगोने पसद किया तो वे फिर मुझसे कोई बडी पुस्तक लिखवायेगे।"

"आप अग्रेजीके किन लेखकोको अधिक महत्त्व देते है?"

"लिडल्हारकी पुस्तके ठीक है, पर आजकी जरूरतके हिसाबसे वे भी पीछे पड गई है। आज अमरीकाके डाक्टर शेल्टन बहुत अच्छा लिख रहे है। उनकी पाच-छ बडी-बडी पुस्तके निकल चुकी है।"

"डाक्टर केलागकी कृतिया आपको कैसी जचती है?"

"बहुत ठीक है।"

"उनकी 'रैशनल हाइड्रोथिरैपी' को आप क्या प्राकृतिक चिकित्सा कहेगे?"

"क्यो, क्या बात है?"

"उसमे जल-चिकित्साको ऐसा उलझा दिया गया है कि वह औषध-वादकी उलझनसे कम नही है।"

"पर उस हजार पृष्ठोके ग्रथका सार किया जाय तो एक ही पृष्ठ होगा। हमे तो सारसे मतलब है।"

"ओर उनकी न्यू डायटेटिक्स ?"

"वह तो बिल्कुल डाक्टरी है।"

"भोजनपर आप कोन-सी किताब पसद करते है ?"

यहा डा० डमर अटक गये। किसी किताबका नाम लेते नही बन पडा। बोले, 'हैरी बेजामिनकी ठीक है।"

डा० डमर

"उन्होने तो सारे विचार डा० हेमे लिये है।"

"तो भी ठीक ढगमे ओर सरलतामे रक्खे है। हा, राबर्ट मैकेरीसनकी पुस्तक 'न्यूट्रिशन एण्ड नैशनल हेल्थ' अच्छी है। एक ओर छोटी-सी पुस्तक बहुत पहले छपी थी 'सेसिबुल फूड फॉर ऑल', वह भी अच्छी थी। उसके लेखक है एडगर सैक्सन।"

भोजनपर बात चल पडी, अत श्रीशाहने भोजनके मिश्रणका प्रश्न सामने रक्खा तो डा० डमरने कहा, "केवल मास श्वेतसारके साथ नही लेना चाहिए, और सब तो ठीक है। प्रोटीनमे दाले और गेहू करीब-करीब

बराबर ठहरते हैं। घनीभूत प्रोटीन मास-अडेमे ही होता है।" फिर उन्होने अपना भोजन बतलाया कि "मैं सुबह फल, भिगोई हुई किशमिश और कुछ गिरीवाले मेवे, दोपहरको फल या केवल सलाद खाता हू और शामको रोटी-मक्खन और सब्जी।" फिर भोजन बनानेके सबधमे बात चल पडी—कहा, कैसे लोग क्या बनाते है। बात बढी जा रही थी तो मैंने उसको मोडनेके ढगमे पूछा—"डाक्टर, आपके लदनके लोगोके जीवनमे जब इतनी तेजी है तो आप इनकी प्राकृतिक चिकित्सा करेगे कैसे ?"

"यहाके लोग यो भागते नजर आते है कि लगता है, सारे-के-सारे पागल हो गये है, पर किसके पीछे—यह समझमे नही आता।"

"फिर इनकी क्या सहायता होगी ?"

"हम इन्हे जीवनके प्रति दृष्टिकोण देना चाहते है और आराम करनेकी विधि सिखाना चाहते है।"

"इनपर प्राकृतिक चिकित्सा काम करती है ?"

"हा करती है और आस्टियोपैथी बहुत मददगार होती है। इन्हे एक तरह बैठे-बैठे या टेढे होकर या किसी अगपर विशेष जोर डालकर काम करना पडता है। वैसी दशामे शरीरकी हड्डियोके स्वाभाविक ढाचेमे अतर पड जाता है, फलत विविध रोग उत्पन्न होते है। हड्डियोको ठीक तरह बैठाना और शरीरका शोधन करना रोगमुक्तिमे सहायक होता है।"

"क्या हर रोगीको आस्टियोपैथीकी जरूरत होती है ?"

"अधिकाशको होती है। देशके उद्योगीकरणका यह अभिशाप है कि आदमी अपनी ठीक आकृति भी बनाये नही रह सकता। आपका देश भी तो उद्योगीकरणकी ही ओर जा रहा है।"

"हा, बबई, कलकत्ता, मद्रासकी दशा तो आपके लदन-जैसी ही है, पर हमारा देश कृषि-प्रधान है। वहा लोग गावोमे रहते है।"

"गाववालोको तो थोडेमे नहान और भोजनपरिवर्तनमे ही लाभ पहुच जाता है।"

"कभी-कभी ऐसे रोगी मिलते है, जो ठीक हो जानेपर भी उठ नही पाते। उनकी जीवनी-शक्ति बढ नही पाती। रोग थोडा-बहुत उन्हे लगा ही रहता है। कुछ भी भोजन दो, कसरतें कराओ, पर वे अपनी जगह ही रहते है। आपको भी ऐसे रोगी मिले होगे। आप उनके सबधमे क्या करते है?

"हमने उनके लिए उपाय पा लिया है—वह है जडी-बूटिया। इनकी तो यहा शहरके हर रोगीको जरूरत होती है। आखिर जडी-बूटिया क्या है? उनमे भी तो सूरजकी शक्ति और पृथ्वीकी शक्ति इकट्ठी रहती है। अनेक बूटिया नाडियोको शात करती है और शरीरको आराम मिलता है। फिर अन्य चिकित्सा ठीक काम करती है।"

"आप कितनी तरहकी जडी-बूटियोका प्रयोग करते है?"

"एकसौ बीस, पर वे सभी ऐसी है, जिनमे विष बिल्कुल नही है। एक तरहसे सभी भोजनका काम दे सकती है।"

"यह तो ठीक है कि विष न होनेपर वे रोगको दबायेगी नही, उसके निष्कासनमे ही सहायक होगी, पर फिर भी एक रोगके लिए एक बूटी—यह दवा ही तो हुई। रोगी समझेगा कि दवा रोगको दूर कर रही है, फिर वह अपना जीवन कैसे सुधारेगा?"

"यहा ऐसे बहुत लोग है, जो केवल जडी-बूटियोसे रोगियोकी चिकित्सा करते है। हम उन्हे औषधोपचारक ही समझते है, प्राकृतिक चिकित्सक नही। हम अपने रोगियोको प्राकृतिक चिकित्साके सिद्धात बताते है और बताते है कि वे जडी-बूटिया केवल रोग-निवारणमे शरीरकी सहायिका सिद्ध होगी।"

"फिर एकसौ बीस तरहकी जडी-बूटिया? आप उनका उपयोग कैसे करते है? किसका प्रयोग किस रोगीपर किया जाय, इसका निर्णय कैसे करते है?"

"इसकी मेरी अपनी विधि है। मै बूटी और रोगी शरीरकी विद्युत्शक्तिको तौलता हू और उसीके अनुसार बूटीका चुनाव करता हू।"

"डाक्टर, हमारे यहा तो आयुर्वेद जडी-बूटियोसे ही भरा है। भारत-मे उत्तरसे दक्षिण और पूरबसे पश्चिमतक प्रत्येक ऋतुमे पैदा होनेवाली प्रत्येक लता, पौधे और पेडकी पत्ती, जड, छाल, फूल और फलका गुण-दोष विशद रूपसे वर्णित है, पर वे अपने प्रभावके लिए ही उपयोगमे लाई जाती है। शरीरकी रोग-निवारिणी शक्तिको उनकी सहायतासे बढानेके दृष्टि-कोणमे उनपर कभी विचार नही किया गया।"

"उनमेसे जो सात्त्विक है, उनका प्रयोग आप अवश्य कीजिये।"

"होमियोपैथी और बायोकेमिस्ट्रीके बारेमे आपकी क्या राय है? कुछ प्राकृतिक चिकित्सक भी यहा यह चलाते सुने जाते है।"

"होमियोपैथी तो दवा ही है। बायोकेमिस्ट्री कुछ कामकी है, पर उसमे भी तो केवल खनिज लवणोका उपयोग होता है, जिनका शरीरसे सामजस्य नही हो सकता। उसका उपयोग भी न करना ही ठीक है।"

"आपने कहा है कि हम यहा लोगोको जीवनका दृष्टिकोण दे रहे है—इससे आपका क्या तात्पर्य है?"

"हम उन्हे शरीर और आत्माकी भिन्नता, आत्माकी उच्चता बताना चाहते है। मै आपको इस दर्शनके बारेमे क्या बताऊ? यह तो आप भारतीयोकी ही चीज है। मेरे मनमे भारतीय दर्शन और आत्मवादके प्रति बडी श्रद्धा है।"

बात करते-करते ग्यारह बज गये थे। अब मैने डा० डमरसे विदा मागी। बाते बडे ही मैत्रीपूर्ण वातावरणमे हुई थी। हम दोनोने एक दूसरे-को आश्वासन दिया कि हमारी मैत्री चलेगी और इसी प्रकार पत्रोद्वारा

विचार-विनिमय होता रहेगा। डा० डमरने 'आरोग्य'के लिए भी कभी-कभी लिखनेका आश्वासन दिया।

मैं और श्रीशाह डा० डमरके घरसे निकले और भारतमें प्राकृतिक चिकित्साके विस्तारकी सभावनाओंपर विचार करते अपने स्थानपर पहुच गये।

: १४ :

एडिनबराकी यात्रा

लदनमे मै डा० स्टैनली लीफसे मिल चुका था, और भी अनेक प्राकृतिक चिकित्सकोसे मिला था और प्राकृतिक चिकित्साके सबधमे जो लदनमे देखने योग्य था, वह भी मैने अपने हिसाबसे देख लिया था, अत अब मैने लदनसे बाहर निकलनेका विचार किया।

ब्रिटेनमे मोटे तौरपर प्राकृतिक चिकित्सकोके दो ग्रुप है। एक डा० स्टैनली लीफके इर्द-गिर्द इकट्ठा है, जो कमोबेश बरनर मैकफैडनसे प्रभावित है। दूसरा ग्रुप एडिनबराके डा० थामसनका है। दूसरा ग्रुप छोटा है और प्राकृतिक चिकित्साके मूल रूपको अधिक कट्टरपनसे मानता है। डा० थामसनकी अपनी विचारधारा है, जो किसी प्राकृतिक चिकित्सकसे नही मिलती। ये प्राकृतिक चिकित्साके प्रचार और उसे उचित सम्मान दिलानेके लिए अधिक प्रयत्नशील रहते है। एलोपैथोसे तो इनका आए दिन झगडा होता रहता है। एलोपैथोसे विवाद कर प्राकृतिक चिकित्साकी श्रेष्ठता प्रमाणित करनेके लिए यह कटिबद्ध रहते है और उनके छोडे हुए रोगी ले-लेकर उन्हे स्वस्थ करते और उनके पूर्व डाक्टरोके पास भेजते रहते है। दर्जनो किताबे लिखी है और एक छोटा-सा मासिक पत्र भी निकालते है, जिसके अधिकाश पृष्ठ इन्हीके लेखो अथवा वाद-विवादसे भरे रहते है। इसका प्रत्येक अक साधारण पाठककी अपेक्षा प्राकृतिक चिकित्सकोके अधिक कामका होता है। पत्रका नाम है 'रुड हेल्थ'।

मेरा डा० थामसनसे पत्र-व्यवहार पहलेसे चल रहा था। मैने, उन्हे

अपने आनेकी सूचना देकर मिलनेकी इच्छा प्रकट की और दूसरे दिन इनसे मिलने एडिनबराके लिए चल पड़ा। सुबह नौ बजे गाड़ी छूटनेवाली थी। मैं दौड़ता-भागता स्टेशन पहुंचा। टिकटबाबूको एक पौंड देकर एडिनबराका टिकट मागा।

"महाशय, एडिनबरा यहासे बड़ी दूर है। टिकटका दाम है ढाई पौंड।"

मैंने एक-एक पौंडके दो नोट और दिये। उसने टिकट बढाया और मैं टिकट लेकर प्लैटफार्मकी ओर चला। पचास कदम ही गया होऊंगा कि बाबू मेरे पीछे दौड़ता आया और मेरे हाथपर दस शिलिंग रखता हुआ बोला—"आपकी बची रकम।"

मुझे अपनी भूलपर शर्म आई। मैंने लजाते हुए उससे कष्टके लिए क्षमा मागी और वह आंधीकी तरह दौड़ता हुआ टिकटघरमे दाखिल हो गया।

आगे प्लैटफार्मके दरवाजेपर टिकटचेकरने मेरा टिकट देखा।

"आप एडिनबरा जा रहे है?"

"जी हा।"

"छुट्टी मनाने जा रहे है?"

"जी हा, और कुछ लोगोमे मिलना भी है।"

"आपकी यात्रा आनंदमय हो।"

यहा छुट्टी मनाने बाहर जानेका लोगोको बड़ा शौक है। यात्रा जैसे इनके जीवनका अभिन्न अग है। मासिक आयका एक भाग यात्राके लिए तो सुरक्षित रहता ही है, ये लबी-लबी यात्राओके सपने भी देखा करते है—जैसे यात्रा ही जीवनको पूर्णता प्रदान कर सकती है और यात्रा करते भी ये खूब है।

गाडीमे बैठा ही था कि गाडी चल पडी। मेरे छ सीटके खानेमे पाच यात्री थे। गाडी बडी तीव्रगतिसे जा रही थी और रास्तेमे बहुत ही

कम जगहोंपर इसे रुकना था। धीरे-धीरे मेरे डब्बेके तीन यात्री उतर गये और हम केवल दो रह गये। इस समय मेरे साथी एक प्रौढ व्यक्ति थे, जो एक कुशल व्यापारी प्रतीत होते थे। अकेले रह जानेपर उन्होंने चुप्पी तोडी।

"आप कहा जा रहे है?"

"एडिनबरा। आप?"

"एडिनबरा ही, वही मेरा घर है। एडिनबरा आप किस काममे जा रहे है?"

"मुझे वहा कुछ प्राकृतिक चिकित्सकोसे मिलना है?"

"वहामे कहा जायगे?"

"ब्रिस्टल, किलमोर और स्टेट फोर्ड ऑन एवन।"

"तो आप साहित्यिक है?"

"जी, साहित्यमे मेरा अनुराग अवश्य है, अत मै स्टेट फोर्ड शेक्स-पीयरका गाव देखने जाऊगा, पर मै प्राकृतिक चिकित्सक हू और पत्रकार।"

"आपने अपनी यात्राका रास्ता निश्चित कर लिया है?"

"अभीतक तो नही।"

उन्होंने तुरत अपना बैग खोला और ग्रेटब्रिटेनका एक बडा-सा नक्शा निकाला।

"आप इतना बडा नक्शा अपने साथ हर समय रखते है?"

"मै एक कपनीका आर्गेनाइजिग मैनेजर हू। यह नक्शा मेरी कपनीने छापा है, इसपर हमारी सारी एजसियोके स्थान चिह्नित है।"

उन्होंने मेरे लिए रास्ता निश्चित कर दिया और रेल्वे टाइम-टेबल देखकर गाडीका समय भी लिख दिया। अब तो इन महाशयसे मेरी दोस्ती जुड गई। रास्तेके सारे स्थानोका वह मुझे परिचय कराने लगे, कस्बोंके

नाम बताने लगे और बताया कि एडिनबरा बड़ा सुंदर, नगर है। उन्होंने वहांके दर्शनीय स्थानोंका भी परिचय दिया।

"यहां पीनेका पानी मिल सकता है?"

"जरूर मिलेगा, चलिये डाइनिंग कारमें देखा जाय।"

मैं वहां गया।

"एक गिलास पानी चाहिए।"

"चाय, काफी, बियर कुछ नहीं?"

"नहीं, मुझे पानी ही चाहिए। वही मुझे देनेकी कृपा करें।"

उसने मुझे तीन छटाक पानीका एक गिलास दिया। इसपर मैंने उससे दूसरा गिलास मांगा तो वह हक्का-बक्का मेरा मुंह देखता रह गया।

चार बजे हमारी रेलगाड़ीने इंग्लैंडकी सीमा पार की और स्काटलैंडमें प्रविष्ट हुई। सीमाका चिह्न कामकी तरहका एक रंगा-सजा पत्थर है। यह चिह्न मेरे साथीने मुझे बड़े उत्साहसे दिखाया। वह स्काटिश जो थे। जहां पर्वत और समुद्र मनुष्यको नहीं बांध सके हैं, वहां मनुष्य-मनुष्यका पार्थक्य स्वयं सीमा बनकर खड़ा हो गया है।

पांच बजे एडिनबरा आ गया। हम लोग स्टेशनके बाहर आये।
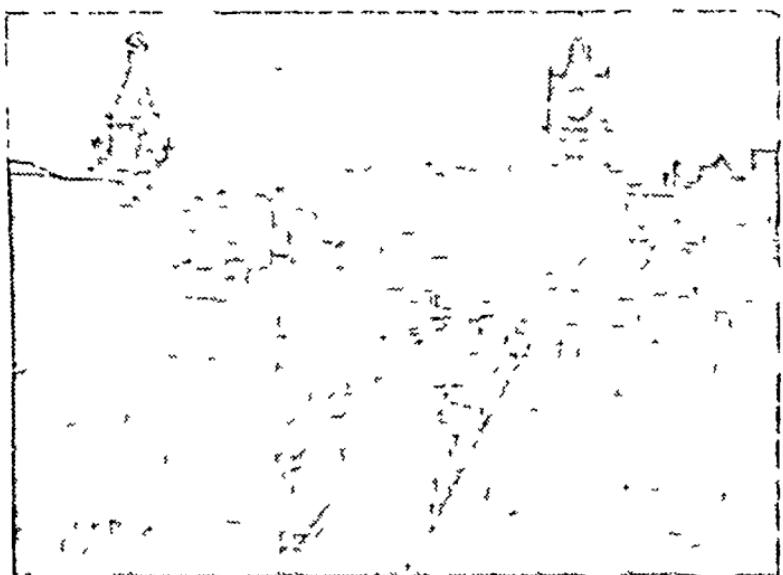
"आप कहां ठहरेंगे?"

"वाई० एम० सी० ए० के छात्रावासमें।"

अगले चौराहेके निकट ही वह छात्रावास था। वह मुझे वहांतक पहुंचाने गये और मुझसे हाथ मिलाकर विदा हुए।

वाई० एम० सी० ए० में मुझे तुरंत कमरा मिल गया। मैंने वहां सामान रक्खा और शहर देखने निकला। एडिनबरा हिंदुस्तानके आगराकी तरहका ऐतिहासिक नगर है, जहां बहुत-सी पुरानी इमारतें हैं, किले हैं

ओर महल हैं। यह स्काटलैंडका सदासे विशेष शहर रहा है। स्टेशनके सामनेकी सडक दो मील लंबी है और यही एडिनबराकी प्रधान सडक है। सडककी दाहिनी तरफ इमारतें और बाजार हैं और बायी तरफ खुला मैदान जो लगभग तीन फर्लांग चौडा है। मैदानके पार पहाडिया और बीचकी ऊची पहाडीपर एक पुराना किला है। सडक और पहाडीके बीच-का मैदान पार्क हैं—लंबा पार्क, बडा ही खूबसूरत। सडकसे यह लगभग

एडिनबराकी एक प्रधान सडक

पचीस फुटकी निचाईपर है, अत सडकसे पार्कमें जानेके लिए जगह-जगह सीढिया हैं। पार्ककी हरी घास मखमल-सी लगती है और क्यारिया रंग-विरंगे फूलोंसे सजी हैं। शामका वक्त था। लगता था, सारा शहर ही पार्कमें दौडा जा रहा है। पार्कमें जगह-जगह लोग टोलीमें बैठे बात कर रहे या टहल रहे थे और पार्कके बीचके ओपेन-एयर थियेटरमें हो रहे गानोंको सुननेके लिए कोई पाच-सात हजार आदमी इकट्ठे थे।
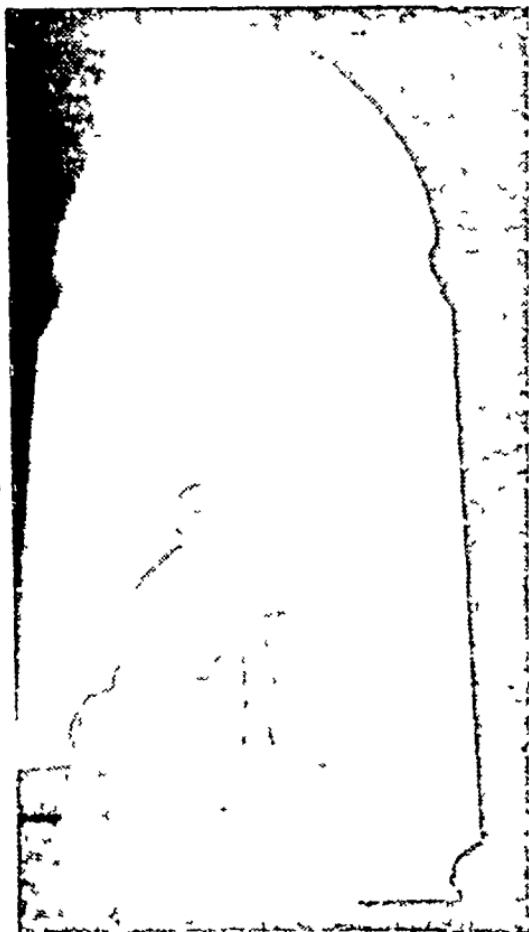
यही सडकके किनारे साहित्यकार सर वाल्टर स्कॉटका लाल पत्थरो-का बना स्मृतिगृह है, बहुत ही ऊंचा और खूबसूरत। स्मृतिगृहके बीचमे

साहित्यकार स्कॉटका स्मृतिगृह

कविवर स्कॉटकी मूर्ति है। स्कॉट एक चबूतरेपर बैठे है और नीचे बैठा उनका कुत्ता उन्हे कृतज्ञतापूर्वक देख रहा है। इस मदिरकी सीढियोद्वारा

ऊपर भी जाया जा सकता है और वहासे सारा एडिनबरा आपके दृष्टि-पथके अंदर आ जाता है।
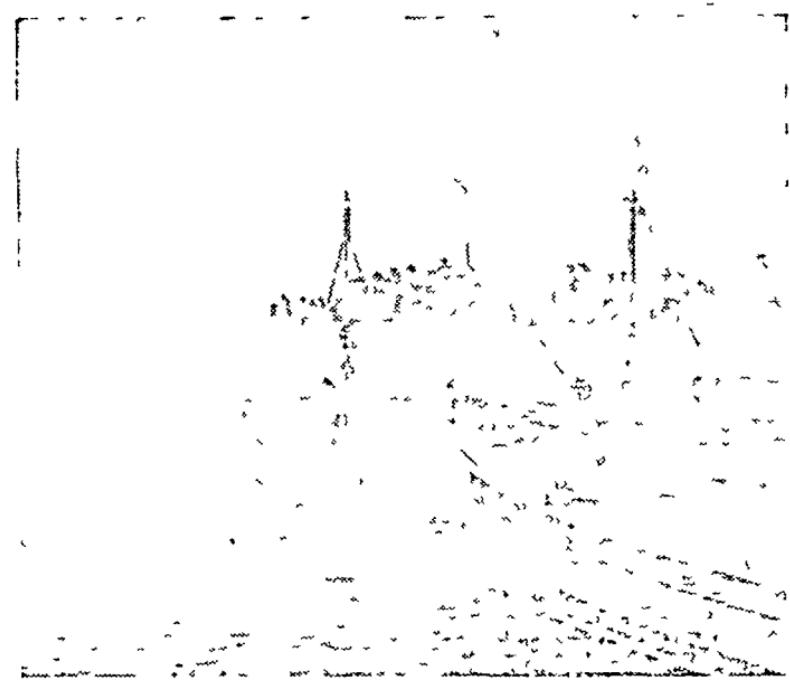
स्मृतिगृहमे स्कॉटकी मूर्त्ति

आगे बढा तो एक मोडपर दस-बारह बसे खडी दिखाई दी। ये तीन शिलिंग लेकर एडिनबराकी तीन घटे सैर करानी थी। इन्होने सारे एडिन-बराको पाच भागोमे विभक्त कर रक्खा है। यदि आप इनपर तीन-तीन

घटेकी पाच यात्राए कर ले,तो सारा एडिनबरा देख लेगे। कुछ अन्य बसें एडिनबराके बाहर भी ले जाती है।

मै एक बसमे जा बैठा। पाच-सात मिनटमे ही बस भर गई। ड्राइवर टिकट बेचने आया। मैने उसे तीन शिलिंग दिये और टिकट ले लिया। मेरी बगलमे एक सज्जन अपनी पत्नीके साथ बैठे थे। उनके सामने ड्राइवर पहुचा तो उन्होने बहुतसे सिक्के जेबमे निकालकर ड्राइवरके सामने कर दिये। ड्राइवरने सिक्कोमेसे छ शिलिंग लेकर उन्हे दो टिकट दे दिये।

एडिनबराका समुद्र-तट

"आप कहासे आये है ?"

"हू मै ग्रीसका, पर आज ही यहा फ्रासमे आया हू।"

"टिकट खरीदनेकी आपने अच्छी विधि निकाली।"

"देश-दर्शनके लिए यात्रापर हू। जल्द-जल्द देश छोडने पडते है और उतनी जल्दी सिक्कोका हिसाब दिमागमे बैठ नही पाता। फ्रासमे सिर्फ हजारोमे बात होती है, पर यहा तो बात सैकडोतक भी नही पहुचती।"

समुद्रके किनारे

इतनेमे हमारी बस चल पडी और गाइडने हमे रास्तो, इमारतो और बाजारोका परिचय देना शुरू किया। शहर बडा ही स्वच्छ, सुदर और करीनेसे बसा है। हमारी बस समुद्रके किनारेके निकटसे भी गुजरी, जहाका दृश्य बडा सुदर था। बस तीन घटेमे हमे वापस ले आई। मै बससे उतरा और रात्रि-विश्रामके लिए अपने निवास-स्थानकी ओर चल पडा।

: १५ :

डा० थामसन और उनका चिकित्सालय

एडिनवरा पहुचनेके दूसरे दिन सुबह उठकर नहाने-धोनेके पश्चात् पहला काम मैंने डा० थामसनको मिलनेका समय निश्चित करनेके लिए फोन करनेका किया। फोनपर मिली डा० थामसनकी सेक्रेटरी कोई महिला। मैंने उन्हे अपना परिचय दिया।

"जी हा, आपका पत्र हमे कल मिल गया था। यहा आप ग्यारह वजे पहुच जाय। डा० थामसनसे उस समय आपकी मुलाकात हो सकेगी।"

"अपने यहा पहुचनेका रास्ता भी वताइये।"

"आप तेरह नवरकी बस पकडे और जहा शहर खत्म होकर हरियाली शुरू हो जाती है, वही हमारा क्लीनिक है। वस-कडक्टर भी इस सवधमे आपकी मदद करेगा। वह हमारे स्थानसे परिचित है।"

मैंने उन्हे धन्यवाद दिया और अपने आनेकी सूचना डा० थाममनको देनेकी प्रार्थना की।

तेरह नवरकी वस पकडनेके लिए मै दस वजे सडकपर वस ठहरनेके अड्डेपर आ गया। वसे पश्चिमकी ओरसे आ रही थी। यह सडक धीरे-धीरे ऊचाईकी ओर गई थी, अत लुढकती हुई आती वसे वच्चोके खिलौनो-सी दिखाई देती थी। सूरजकी रोशनी उनपर पडकर उनके हरे-पीले रगोको और भी चमकीला वना देती और वे वडी सुहावनी प्रतीत हो रही थी। मेरी वस भी आ गई और उसमे मैंने अपनी जगह ली। वस-कडक्टरसे मैंने अपना गतव्य स्थान वताकर अपना टिकट खरीदा। वस चलती-चलती शहरसे पार हो गई और हरियालीके वीच आ गई।

यहा सडकके दोनो ओर हरी पत्तियोसे लदे वृक्ष थे। थोडी देरमे बस रुकी तो कडक्टरने मेरे पास आकर कहा—"डा० थामसनका चिकित्सालय आ गया।" और उसने सडकके किनारे एक बडे फाटकपर लगे साइनबोर्डकी ओर इशारा किया, जिसपर लिखा था, 'किग्सटन क्लीनिक'। मेरे साथ ही एक अन्य युवक भी उतरे और मेरे साथ ही चलने लगे। मुझे अपने साथ देखकर बोले—"आप डा० थामसनके पास जा रहे है ?"

"जी हा, और आप ?"

"उन्हीके पास।"

"उनसे चिकित्सा करा रहे है ?"

"नही, मै उनका विद्यार्थी हू। इस समय कालेजकी छुट्टी है, पर मै उनकी सहायताके लिए रह गया हू।"

"कालेजमे विद्यार्थी कितने है ?"

"सोलह।"

"और चिकित्सालयमे रोगी कितने है ?"

"तीस।"

मेरा परिचय पाकर विद्यार्थीने मुझसे हिदुस्तानमे प्राकृतिक चिकित्साके सबधमे बहुत-सी बाते पूछी और चिकित्सालयके सबधमे मेरी हर जिज्ञासाको शात किया।
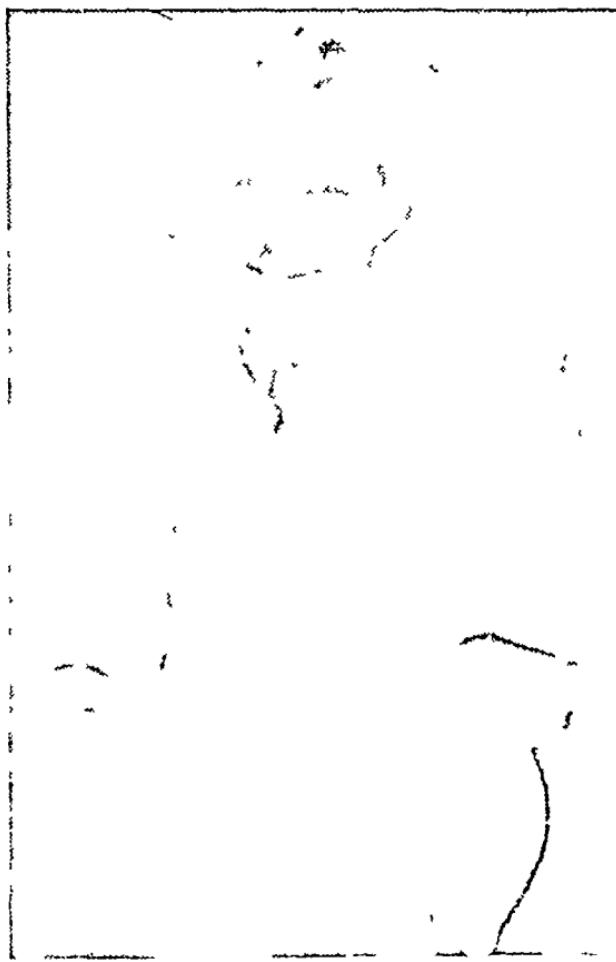
डा० थामसनका चिकित्सालय एक बहुत बडे बागमे है, जिसके चारो ओर बहुत ऊची-ऊची दीवारे है। यह सारा स्थान पुराने समयमे यहाके किसी छोटे रजवाडेके हाथमे था। चिकित्सालय भी उसीके महलमे है। महलपर ऊचा गुबद है, जो दूरसे ही दिखाई देता है। अहातेमे कुछ और भी इमारते है। शेष बाग है, जिसमे फूलोकी बहुतायत है। चिकित्सालयके चारो ओर डा० थामसनने रोगियोके लिए तरह-तरहकी तरकारिया भी लगा रखी है।

डा० थामसन

चिकित्सालयमे मै पहुचा और जल्द ही मुझे डा० थामसन मिल गये। वह दौडते-से मेरे पास आये—बूढे पर शरीरसे बहुत ही दृढ, कमर जरा झुकी हुई, पर फिर भी गर्दन ऊची। आते ही उन्होने मेरा हाथ पकड

लिया, "इतने दूर देशसे आये अपने प्राकृतिक चिकित्सक बधुसे मिलकर मुझे बडी प्रसन्नता हो रही है।"

डा० वेलसली थामसन

"आपकी इस आत्मीयताके लिए मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूं।

"वेलसली," उन्होंने अपने चालीस वर्षीय पुत्रको संबोधित किया "तुम मिस्टर मोदीको चिकित्सालय दिखलाओ। मगर मिस्टर मोदी,

अभी मेरे पास दो नये रोगी आ गये है। मै उनसे बात करके निपट लू, तब आपसे फुरसतमे बात करना चाहता हू। मेरा पुत्र वेल्सली मेरे सहकारी-का काम करता है। कालेजका काम इसीके हाथमे है। आप चिकित्सालय देखे, यहा भोजन करे, आराम करे। मै दो बजे बैठकर आपसे बात करूगा। भाग-दौडमे तो मै न आपकी सारी बाते सुन पाऊगा और न कुछ सुना पाऊगा।"

मै श्रीवेलसली थामसनके साथ हो लिया। उन्होने मुझे चिकित्सालय दिखलाया, जहा चालीस रोगियोके रहनेकी जगह है। रोगियोके रहने और चिकित्सालयका स्थान करीब-करीब डा० लीफके चिकित्सालय-जैसा ही है। बागमे तरकारियोके खेत भी देखे। ये डा० थामसनको बहुत प्रिय है। लट्स ही अधिक लगी थी, जो शीशोमे बद थी।

चिकित्सालयकी व्यायामशाला विशेपरूपसे उल्लेखनीय है। यह एक बडे कमरेमे है, जहा पच्चीस-तीस आदमी आसानीसे कसरत कर सकते है। यहा तरह-तरहके व्यायाम करनेके साधन रखे हुए है। डाक्टर थामसन-का विश्वास है कि हर रोगीको कुछ-न-कुछ कसरत करनी ही चाहिए। कमजोर-से-कमजोर रोगी भी कुछ कसरत कर सके, ऐसे साधन उन्होने व्यायामशालामे जुटा रक्खे है।

पासके एक बडे मैदानमे पाच-सात काठकी बडी सुदर-सी झोपडिया बनी थी, जहा बैठकर रोगी धूप-स्नान ले सकते है और पानी बरसने लगे तो झोपडियोमे जाकर वर्षासे बच सकते है।

चिकित्सालयके निकट ही डा० थामसनके कालेजकी इमारत है। थामसनका कालेज ब्रिटेनका पहला प्राकृतिक चिकित्साके शिक्षणका केंद्र है। यह लगभग पच्चीस वर्ष पहले स्थापित हुआ था। यहासे लगभग एकसौ स्नातक कालेजका चार वर्षका कोर्स समाप्त कर डिग्री प्राप्त कर चुके है। मैने श्रीवेलसलीसे पूछा—"क्या सभी स्नातक चिकित्साका कार्य कर रहे है?"

"हा, अधिकाश कर रहे है।"

"जो नही कर रहे है वे कौन है ?"

"ऐसोमे अधिकाश लडकिया है, जिन्होने शादीके बाद चिकित्साका काम बद कर दिया है, पर कई ऐसी भी है, जिन्होने शादीके पाच-सात वर्ष बाद फिर काम शुरू किया है। कुछ ऐसे भी है, जो चिकित्सा नही चला सके और दूसरा धधा अख्तियार कर लिया। चिकित्सा चलानेके लिए केवल चिकित्साका ज्ञान ही तो काफी नही है।"

एक बजे मैने चिकित्सालयके भोजनालयमे भोजन किया। वहा मेरा टेबुलका साथी एक किशोर था, जो मुझे भारतीय लगा। पूछनेपर पता लगा कि यह दक्षिण अफ्रीकाका है। उसके माता-पिता भारतसे जाकर वहा बस गये थे।

"आप किस रोगसे पीडित है ?"

"मिरगीसे।"

"प्राकृतिक चिकित्साकी ओर आपकी रुचि कैसे हुई ?"

"मेरे बडे भाई यहा लदनमे पढते है। उन्हे मेरे रोगके बारेमे लिखा गया। उन्होने पता लगाया तो उन्हे ज्ञात हुआ कि यह रोग प्राकृतिक चिकित्सासे ही जा सकता है और उन्होने मुझे बुलाकर यहा दाखिल करा दिया।"

"कितने सप्ताह हुए यहा आये ?"

"चार सप्ताह।"

"लाभ है ?"

"मुझे प्रति सप्ताह दौरे आते थे। यहा आनेपर पहले दो सप्ताह तो दौरे आये, इधर दो सप्ताहमे कोई दौरा नही आया है, पर डा० थामसन-का कहना है कि अभी दौरे और आ सकते है।'

"आप निश्चय कर लीजिये कि दौरे नही आयेगे तो फिर वे नही आयेगे।'

लडकेको बडी तसल्ली हुई। उसका मन चिकित्सामे खूब लग रहा था और यहाकी चिकित्सा और व्यवहारसे वह सतुष्ट था।

दो बजे डा० थामसनसे भेट हुई। वह मुझे अपने परीक्षागृहमे ले गये। हम बैठे तो वह आप-बीती सुनाने लगे, जो कशमकशसे भरी हुई है। उनका सारा काम रोगियोद्वारा दी गई सहायतासे चला है। एक स्त्रीने, जो सब चिकित्सा कराकर निरोग हो चुकी थी, अपनी सारी सपत्ति इस चिकित्सालय और प्राकृतिक चिकित्साके अन्वेषणके लिए लिख दी थी। अभी वह मरी है, पर उसकी वसीयतमे उसके भाइयोके वकीलने खामी निकाल ली और सारी सपत्ति उन्हे मिल गई। उन्होने दो ऐसी और घटनाए सुनाई, जिनमे डा० थामसनकी आर्थिक समस्या हल होते-होते रह गई।

मै सोच रहा था कि दुनियामे हर जगह प्राकृतिक चिकित्सकोको कितना सघर्ष करना पडता है। यही कारण है कि प्राकृतिक चिकित्साकी ओर बहुत सशक्त व्यक्ति ही आकृष्ट होते है और उन्हे भी खडे रहनेमे कितनी कठिनाई पडती है।

डा० थामसनका प्रवाह रुक ही नही रहा था और समय तेजीसे भागा जा रहा था। मैने उन्हे रोकनेके हिसाबसे पूछा, "डाक्टर, मैने अभी आपके कालेजके श्याम-पट्टपर कुछ अक्षि-विज्ञानके नक्शे देखे है। अक्षि-विज्ञानपर आपका कितना विश्वास है ?"

"अक्षि-विज्ञानका कहना है कि हमारे शरीरमे जो रोग आते है, उनके चिह्न आखोकी पुतलियोपर पड जाते है और रोग जानेकी गतिके साथ मिटते जाते है। अक्षि-विज्ञान रोगके निदानमे बहुत सहायक होता है।"

"अक्षि-विज्ञानमे तो कही गलती नही है, पर रोग किसी अगमे थोडे ही होता है। वह तो सारे शरीरमे होता है, अत किसी अगकी चिकित्सा क्या करनी है, वह तो सारे शरीरकी ही करनी चाहिए।"

डा० थामसनका उत्तर बडा ही प्रकाशपूर्ण था। उनके इस उत्तर

ने मुझे उनके विचारोके सबधमे अपनी शकाए प्रकट करनेका साहस दिया। मैने कहा, "डाक्टर, आपकी सारी बाते तो समझमे आती है, पर आपका पानी न पीनेका सिद्धात समझमे नही आता।"

"पानीके लिए कुदरतने फल-तरकारिया बनाई है, मनुष्यको उन्हीसे जल प्राप्त करना चाहिए। जो फल-तरकारी न खाय या नमक-मसाले

किंग्सटन क्लीनिक

ले वे ही पानी पीये। मैं यहा रोगियोको स्ट्यू (एक रसेदार भाजी) खानेको कहता हू जो वे साधारण भोजनके साथ लेते हैं। मैं उन्हे दोपहर और शामको तीन-तीन औंस (डेढ छटाक) मट्ठा भी पीनेको देता हू।'

"बिना पानीके उपवास कैसे कारगर हो सकता है ?"

"होगा ही, पर मैं एक बारमें दो-तीन दिनके उपवाससे अधिककी आवश्यकता नही समझता।"

"यहा तो शायद बिना पानीके चल सकता है, इतनी ठडक जो पडती है, पर रेगिस्तानमे अथवा गर्म देशमे आपका सिद्धान्त कैसे चलेगा ? नियम तो सार्वभोम होना चाहिए।"

"रेगिस्तानकी बात मैं नही जानता, पर आपके देशके बबई शहरमे एक ऐलोपैथिक डाक्टर है, जो पानी नही पीते। उन्होने ये विचार मेरे किसी लेखसे लिये और लिखा कि पानी न पीनेसे उनके अनेक रोग गये है और स्वास्थ्य सुधरा है, पर जब मैंने उन्हे लिखा कि जिन विचारोसे आपको लाभ हुआ है, उनका प्रचार करे तो उनका कोई उत्तर नही आया।"

"और आप एनिमा लेना क्यो मना करते है ?"

"एनिमा लेना मैं मना नही करता, पर जबतक लोगोका खयाल रहता है कि एनिमासे ही आते साफ हो सकती है तबतक एनिमा देता हू, पर उसका भी पानी कम करता जाता हू, जिससे उनका एनिमा लेनेका खयाल खतम हो जाय।"

"यह तो एनिमा छुडानेकी ही बात हुई। फिर तो आप एनिमाके खिलाफ ही है।"

"है तो कुछ ऐसी ही बात। मेरा अनुभव तो यही कहता है।"

डाक्टर थामसनको पानी न पीने और एनिमाका प्रयोग न करनेके सबधमे लाख अनुभव हो, पर मैं उनके इन विचारोसे न उनका साहित्य पढकर सहमत हो सका, न उनकी बाते ही मुझे प्रभावित कर सकी। मैंने आगे प्रश्न किया।

"काइरोप्रैक्टिक और आस्टियोपैथी (अस्थिचिकित्सा) के बारेमे आपका क्या खयाल है ? लदनके प्राकृतिक चिकित्सक तो ऐसी बात कहते है, जैसे आस्टियोपैथीके बगैर प्राकृतिक चिकित्सा चल ही नही सकती।

"काइरोप्रैक्टिकके मैं खिलाफ हूं, उसमें शरीरको बहुत जोरके झटके देने पड़ते हैं, जो बिल्कुल अस्वाभाविक हैं और उसमें जितनी तेजीसे लाभ होता है, उतनी ही तेजीसे लाभ चला भी जाता है। हां, आस्टियोपैथी कुछ ठीक है, पर वह काम तो व्यायामोंद्वारा पूरे तौरपर चल सकता है। आस्टिओपैथी न मैं चिकित्सालयमें चलाता हूं और न शिक्षणालयमें ही उसके शिक्षणका प्रबंध किया है।"

दो-चार साधारण प्रश्न मैंने डा० थामसनसे और किये और फिर हम उठ खड़े हुए। डा० थामसन मुझे समुद्रके बीचकी उस चट्टानकी तरह लगे, जो अपनेमें दृढ़ है और जिसकी दृढ़ताको न आंधी-तूफान और न उसपर सतत चोट करनेवाली लहरें ही कोई क्षति पहुंचा सकी हैं।

: १६ :

शेक्सपीयरके गांवमें

इग्लैंडमे लोगोकी घूमनेकी प्रवृत्ति इतनी प्रबल है कि लगता है, जैसे ये घूमनेके पीछे पागल है। हर शनिवारको अपना घर छोडकर ये सौ-पचास मील दूर अकेले, दुकेले या परिवारके साथ कही-न-कही भाग ही जाते है। सालमे एक-दो बार दो-दो तीन-तीन सप्ताहकी यात्रा भी करते है। जो जहा जाता है वहासे वहाके चित्रोके पोस्टकार्ड अपने मित्रोको भेजता है, जो मित्रोद्वारा बडी शान और अभिमानके साथ रक्खे जाते है और मित्रताके कीमती चिह्न समझे जाते है।

जो धनी है और जिनके पास मोटर है, वे मोटरके साथ दौडनेवाला एक घर भी खरीदते है। वह दो पहियोपर चलनेवाला बढिया कमरा होता है और सजा-सजाया खरीदा जाता है। सजावटमे एक पलग, दो कुर्सिया, रसोईघरके सारे बर्तन, आल्मारी, चित्र आदि होते है। मोटरके पीछे इसे जोड लेते है और सडके यहा बढिया होनेके कारण मोटर इसे आरामसे खीचती रहती है। कही चले गये, किसी खुली जगहमे मोटर खडी कर दी, पकाया-खाया, घूमे, तैरे, धूपमे लेटे, रातको कमरेमे सोये और छुट्टी समाप्त होते ही कामपर दौड पडे। इग्लैंडकी किसी भी खूबसूरत और खुली जगहमे ऐसे बीस-तीस मोटरके साथ चलनेवाले कमरे खडे देखे जा सकते है।

जिनके पास अधिक पैसे है वे फ्रास, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, अमरीका आदिकी यात्रा करते है। जिनके पास नही है, वे धीरे-धीरे पैसा इकट्ठा करते है और ऐसी यात्राए करते है। बडी यात्राए, बडी उम्रके लोग ही

करते है, क्योकि उस समय आमदनी अधिक हो जाती है । जवानीमे या काम आरभ करनेपर तो लोग चार-पाच पोड ही प्रति सप्ताह पाते है, जिससे केवल गुजर-बसरका सामान इकट्ठा किया जा सकता है ।

यहा घूमनेकी जगहोमे 'स्टेट फोर्ड ऑन एवन' भी अच्छा समझा जाता है, जहा शेक्सपीयर पैदा हुए थे । यह जगह देखने इस देशके लोग तो जाते ही है, विदेशके लोग भी बहुत जाते है । मैने सोचा, प्राकृतिक चिकित्सको-से तो मिल ही रहा हू, क्यो न मै शेक्सपीयरका स्थान भी देख आऊ। एडिनबरासे लौट रहा था। वहासे स्टेट फोर्डका टिकट दो पौडमे खरीदा। गाडी सुबह साढे दस बजे चली और स्टेट फोर्ड साढे चार बजे पहुच गई । स्टेट फोर्ड कोई पच्चीस हजारकी आबादीका गाव है । गाव इसे नही कहना चाहिए, क्योकि गाव कहते ही अपने यहाके झोपडे, कच्ची सडके, लाई-गट्टेकी हलवाईकी दुकाने सामने आ जाती है । इसे बबईकी छोटी नकल कहा जा सकता है, बल्कि सडकोकी सफाई, बाहरकी सजावटके हिसाबसे उससे भी बढिया ।

यात्रीके लिए यहा एक और बडी सुविधा है—वह है रहनेका स्थान । हिदुस्तानमे तो धर्मशाला होती है, यहा ऐसी कोई चीज नही है, पर रहने-की जगह यहा आसानीसे मिल जाती है । होटल तो जगह-जगह बहुतसे होते ही है, उससे भी ज्यादा होते है बेड एण्ड ब्रेकफास्ट प्लेसेज—सोनेका कमरा और सुबह नाश्ता देनेवाली जगहे । यह एक तरहका घर होता है, जिसे महिलाए ही चलाती है, जिन्हे गृहस्वामिनी कहते है । ये जगह ज्यादा साफ और होटलोसे काफी सस्ती होती है । इनमे दस-बारह कमरे रहते है । तीन-चार गृहस्वामिनी अपने लिए रखती है, शेष भाडेपर चलाती रहती है । स्टेशनसे उतरते ही मैने स्टेशनके एक कर्मचारीसे पूछा, 'यहा नजदीक कोई रहनेकी जगह बता सकेगे ?'

"वह देखिये चौराहा, वहा ऐसे कई घर है । तीन मिनटमे आप वहा पैदल चलकर पहुच जायगे ।

मुझे नजदीक जगह इसलिए चाहिए थी कि सामान यहा खुद ढोना पडता है। कुली नही मिलता और थोडी दूरके लिए टैक्सी लेना फिजूल-खर्ची लगती है। मेरा बैग आठ-दस सेरका था और वह भी मुझे ढोते अखर रहा था। कभी बैग इस हाथमे लेता, कभी उसमे। मैने दरवाजेपर पहुच-कर घटी बजाई। एक महिला आ उपस्थित हुई। "मुझे एक रातके लिए जगह चाहिए।"

"दु ख है कि आज मेरे पास कोई कमरा खाली नही है।" दूसरे घर गया, तीसरे घर गया और चौथे घर जानेपर भी जब यही उत्तर मिला तो मुझे लगा कि ये गृहदेविया मेरे काले रगसे भडक रही है। तो क्या मुझे यहा रहनेकी जगह नही मिलेगी? जरा अवसाद-सा आया, तभी एक पुलिसमैन दिखाई दिया। पुलिसमैन यहा बडा सहायक होता है। उसे देखते ही मै समझ गया कि अगर उसे अपनी कठिनाई बताऊ तो वह मेरी कठिनाई दूर होनेपर ही मेरा साथ छोडेगा। उससे जगहोके पते मागे। उसने कहा, "यह बगलमे ही तो है। यहा पूछ देखिये, अन्यथा दूसरे मोडपर पाच-सात घर और है।" उस बगलकी जगहमे मुझे एक कमरा मिल गया। गृहदेवी बोली, "देखिये, कमरेके किराये और नाश्तेके १५ शिलिंग (अर्थात् दस रुपये) होगे। मै इसलिए बता रही हू कि सुबह आप बिल देते वक्त झगडा न करे। आपके देशका एक युवक इसी विषयपर मुझसे झगड पडा था।"
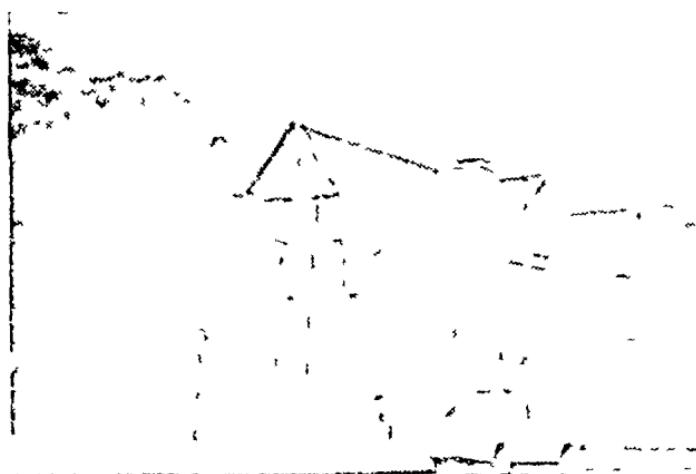
"आप दाम तो बहुत वाजिब बता रही है, पर मै नाश्ता आपसे नही लूगा। मै केवल फल-दूध लेता हू।"

"मै आपको फल-दूध दूगी, आपको ताजे फल तो नही, मुरब्बा जरूर मिलेगा, पर आप नाश्ता ले या न ले, खर्च यही होगा।"

"आप नाश्तेकी चिता न करे, मै आपको १५ शिलिंग ही दूगा, मुझे आप कल सुबह एक पौड दूधवाली चार बोतले दे और हो तो दो पौड दूध मुझे अभी चाहिए।"

उस बुढियाने मुझे दो पौड दूधकी एक बोतल तुरत लाकर दे दी और कमरा दिखाने ले चली। मुझे एडिनबरामे साढे सात शिलिगमे केवल कमरा मिला था, लदनमे १२॥ शिलिगमे कमरा और नाश्ता, पर यह कमरा उन सबसे ज्यादा अच्छा, साफ और सुदर था। बिस्तरमे कबलके साथ एक छोटी-सी रेशमकी बडी ही कलापूर्ण हल्की रजाई थी, नहानघर और पाखाना भी बहुत बढिया था। इस्तेमालके लिए दो सुदर स्वच्छ मोटे तौलिये, साबुनकी नई बट्टी भी थी। मैंने कमरेमे सामान रक्खा, हाथ-मुह धोया, कुछ फल खाये, एक पौड दूध पीया, कधेपर कैमरा लटकाया और नीचे इन देवीजीकी सेवामे फिर हाजिर हुआ, 'शेक्सपीयरके जन्मगृहका पता बता सके तो बडी कृपा होगी।"

"अगले चौराहेसे बढिये, पहले मोडपर दाहिनी तरफ मुडिये, फिर जो चौरास्ता आये, उसमे पूरब दिशाको जाइये। सौ गजपर शेक्सपीयर-का जन्मगृह है।"

शेक्सपीयरका घर

"कितने मिनटमे मैं वहा चलकर पहुच जाऊगा ?

"अगर रास्ता भूले नही तो चार-पाच मिनटमे।"

मैं चल पडा और पाच मिनटमे उस गृहके दरवाजेपर था। दस-बारह यात्री और थे, जो खिडकियोंसे घरमे झाक रहे थे। इस समय सात बजे थे और घर बद हो गया था। घर दर्शनार्थ सुबह नौ बजेसे शामको सात बजेतक खुला रहता है। शामके सात बजे थे, पर दिन था। मैंने घरका और घरकी सडकका चित्र लिया। फोटो यहा शामको ८॥ बजेतक मजेसे लिया जा सकता है, सूर्य दस बजे डूबता है, अत रोशनी ८॥ बजेतक ठीक फोटोके लायक होती है। कई यात्रियोंसे बात की और एकके साथ शेक्सपीयर मेमोरियल थियेटरकी ओर बढ चला। जिस युवकसे मैं बात कर रहा था, वह आस्ट्रेलियाका था और दो दिनोसे यहा था। उसने बडे मित्रभावसे बात की और थियेटरके नजदीक मुझे पहुचाकर वापस चला गया। उसे ८ बजेकी ट्रेनसे लदन जाना था।

शेक्सपीयर मेमोरियल थियेटर

थिएटर स्टेट फोर्ड ग्रामके मध्यमे एक पार्क—ब्रेनक्राफ्ट गार्डेन्स—

मे है। इस पार्कके बीचसे एवन नदी बहती है। पार्कमे ही नदीको पार करनेके लिए पक्का पुल है। नदीके किनारे यह अमरीकी डिजाइनका बढिया थियेटर अधिकतर अमरीकाके दानियोके धनसे सन् १९३२ मे बना था। नदीके पारसे देखनेपर यह बडा ही भव्य लगता है। सारी कारीगरी ईंटोको सजानेकी है। कही कोर-कटाव या महराब नही है। इसके अदर दर्शको और अभिनेताओकी सुख-सुविधाका बडा ध्यान रक्खा गया है। खेल यहा कभी-कभी होते है—बाहरसे शौकीनोकी टोली या व्यापारिक थियेट्रिकल कपनिया यहा खेल दिखाकर अपनेको धन्य मानती है। इस समय खेल हो रहा था और एक घटा पहले शुरू हो गया था, पर टिकट तो कलके लिए भी नही मिला, एक सप्ताहकी सारी बुकिग हो चुकी थी। किसी तरह कलका टिकट लिया जा सकता था, पर मै तो कल चार बजे शामको ही स्टेट फोर्ड छोड देनेवाला था, अत इस विषयपर मैने माथापच्ची नही की और पार्कमे घूमने लगा। थियेटरकी तस्वीर तो खीची ही। नदीमे बत्तखे तैर रही थी उनकी तस्वीर ली, नदीमे तरने और नाव खेते लोगोकी ली और दो-तीन फोटो बागके फूलोके भी खीचे।

इसी पार्कमे जहा एक ओर थियेटर है, दूसरी ओर ऊचे चबूतरेपर शेक्सपीयरकी मूर्ति स्थापित की गई है। चबूतरेके चारो ओर शेक्सपीयर-के नाटकोके चार विशेष पात्रो—(१) [illegible] (B[illegible]), (२) प्रिन्स हाल (Prince Hall), (३) हैमलेट (Hamlet) और (४) लेडी मैकबेथ (Lady Macbeth)—की कासेकी मूर्तिया है। लेडी मैकबेथ-की मूर्ति देखते ही बनती है। वह हत्या [illegible] [illegible]-ताके बाद [illegible] [illegible] नही है। मूर्तिकारने चारो मूर्तिया बडी [illegible]-दार बनाई है। ये चारो मूर्तिया [illegible] शेक्सपीयरकी मूर्ति बनानेके [illegible] [illegible] थे। ये बनी भी पेरिसमे और बनवाई [illegible] [illegible] गोवरने। उन्होने ये मूर्तिया इस नगरको सन् [illegible] मे भेट की [illegible]

दिन बाद ही ये लोगोंके दर्शनार्थ इस पार्कमें स्थापित कर दी गई थी।

लेडी मैकबेथ

जिस चबूतरेपर शेक्सपीयरकी मूर्ति रक्खी हुई है उसके चारो पार्श्वों-पर शेक्सपीयरकी चार कविताए खुदी हुई है। निम्नलिखित कविता यहां मुझे बहुत जची—

Life's but a walking shadow,
That struts and frets a poor player
His hour up on the stage
And then is heard no more

प्रिस हाल

—जीवन एक चलती-फिरती छाया है। यह गरीबकी प्रार्थनाके समान है। छायाका अस्तित्व कहा है ? यह तो सूर्यसे सबद्ध है और कुछ समयके लिए ही ससारस्पी रग-मचपर दौड-धूप करती, अभिनय करती, देखी जा सकती है। अभिनय समाप्त हो जाता है, छाया मिट जाती है और साथ ही इसका अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है।

इस अमर नाटककारके स्मृति-स्तभपर जीवन, ससार और अभिनय-का यह विश्लेषण मुझे बहुत भाया। मै इसके चारो ओर देरतक घूमता रहा, मूर्तियोकी मुखमुद्राको परखता रहा, फिर थोडा स्टेट फोर्डकी सडकोपर घूमा। सडके पाच-चार ही है। थोडी ही देरमे सारे गाव और सडकोका भूगोल समझमे आ गया और मै अपने स्थानपर रातके नौ बजे लौट आया।

सुबह दस बजे नहा-धोकर तथा नाश्ता कर मै शेक्सपीयरका जन्म-गृह देखने पहुचा। इस समय यह घर दर्शनार्थियोसे भरा हुआ था। इस घरके चारो तरफ नये घर बन गये है, उनकी सजावट भी नई ही है, पर शेक्सपीयरके जन्मगृहको उसके पुराने रूपमे ही रखनेकी कोशिश की गई है। इस घरके ऊपरके एक कमरेमे शेक्सपीयर सन् १५६४ की २३ वी अप्रैलको पैदा हुए थे। नीचेके कमरेमे इनके पिता दुकान करते थे और ऊपर ये लोग रहते थे। यह घर उनके पिताके बाद कई हाथोमे गया, पर सन् १८४७ मे शेक्सपीयर मेमोरियल ट्रस्टने इसे खरीद लिया। जिस कमरेमे शेक्सपीयर पैदा हुए थे उसमे एक चारपाई है, बिस्तर लगा है, बगलमे जमीनपर एक काठका खटोला रक्खा है, कुर्सी है, चिरागदान है, पर इसका यह अर्थ नही है कि इसी खटोलेपर शेक्सपीयर खेले थे। उनका तो पुराना कुछ प्राप्त हुआ ही नही, पर ये चीजे है, उनके ही समयकी और इसलिए इकट्ठी की गई है कि दर्शनार्थियोको ज्ञात हो सके कि उस समय ऐसी ही चीजे व्यवहारमे आती थी। इसी तरह चीजोसे रसोईघर भी सजाया

गया है, जिसमे बर्तनोके अलावा स्टूल, सदूक, सुराही, आलमारी वगैरह भी है। दूसरे कमरेमे शेक्सपीयरके लिखे पत्र, उस समयकी छपी किताबे, घर, सराय, सडक, बागोके चित्र और उस समयका स्टेट फोर्ड गावका चित्र आदि है। एक आलमारीमे वे तमगे है, जो सन् १७३० से १९१६ तक लोगोने बनवाकर अच्छे अभिनेताओको दिये थे। सभी तमगोपर शेक्सपीयर-की आकृति बनी हुई है।

सभी चीजे और वह घर बडे करीनेसे रक्खा गया है। हर कमरेमे हर वस्तुके सबधमे बतानेवाला नियुक्त है, जो दर्शकके हर प्रश्नका उत्तर देता है और हर चीजके समझनेमे सहायक होता है।

घरके पीछे बाग है और वह भी ठीक उसी तरह रक्खा गया है, जिस तरह शेक्सपीयरके समयमे रहा होगा।

इस घरसे थोडी दूरपर शेक्सपीयरकी दौहित्रीका घर है। इस घरमे शेक्सपीयर अपने अतिम दिनोमे रहे थे और सन् १६१६ मे मरे थे। इसकी बहुत-सी चीजे उसी समयकी है। उनकी दौहित्री और उसके पतिका चित्र भी है। घरमे शेक्सपीयरके समयके इग्लैडका दर्शन करानेवाली बहुत-सी चीजे रक्खी है, जिन्हे देखकर शेक्सपीयरके विद्यार्थीको शेक्सपीयरको समझनेमे बडी सहायता मिलती है।

सन् १९३० मे शेक्सपीयर बर्थप्लेस ट्रस्टने यह घर भी खरीद लिया, जिसमे शेक्सपीयरकी मा रहती थी। वह एक बडे किसानकी लडकी थी और उसके सात बहने थी। यह घर स्टेट फोर्डसे लगभग दस मीलकी दूरी-पर है। इसे दिखानेके लिए बस सर्विस है। घर पुराने समयके किसान-का है और इसमे बहुत फेर-बदल नही हुआ है। घरमे घरका रसोईघर और रहनेके कमरे उसी समयकी चीजोसे सजाये गए है और घरके पिछवाडे एक बडा अहाता है। बीचमे पानीका पुराना नल है। अहातेके चारो ओर पशु रखने, चारा और [illegible] कोठरिया है। एक कमरा

ऐसा भी है, जिसमे सातसौसे अधिक कबूतरोके जोडे पलते थे। पिछवाडे-का यह भाग उस समयकी गावकी चीजोका नुमाइशघर बना दिया गया है और उसमे आटा पीसनेकी चक्की, किसानोके औजार, खेलका सामान, अपराधीको सजा देनेके काम आनेवाली चीजे, उस समयके रईसोकी फिटन, कमरतोड साइकिल, दूध दुहने, दही जमाने, मक्खन निकालनेके बर्तन, तरह-तरहके हल, हँसिया, काटने-निरानेके खुरपे, लुहारकी भाथी, उसके काममे आनेवाले औजार आदि इकट्ठे किये गये है। इनमे बहुत-सी चीजोका वर्णन शेक्सपीयरके नाटकोमे आया है, अत इन चीजोको देखना शेक्सपीयरके विद्यार्थीके लिए बहुत उपयोगी है।

शेक्सपीयरकी यादगारमे प्रतिवर्ष यहा बर्मिघम विश्वविद्यालयकी ओरसे जुलाई और अगस्तके पाच सप्ताहोमे शेक्सपीयरपर बडे-बडे विद्वानोके बीस-पचीस भाषण कराये जाते है और २३ अप्रैलको प्रतिवर्ष कविका जन्मदिन मनानेके लिए ससारके देशोके प्रतिनिधि इकट्ठे होते है।

मैने लदन आकर इलाहाबाद म्यूजियमके क्यूरेटर अपने मित्र श्री-सतीशचद्र कालाको ये बाते सुनाई तो वह दग रह गये। कहने लगे, बनारसका जिला इलाहाबाद म्यूजियमके मातहत है। मै बनारस जिलेमे श्रीप्रेमचद-का जन्मगृह देखने गया था। वह गिरनेकी अवस्थामे है। मैने सरकारको रिपोर्ट दी कि उस घरकी रक्षा होनी चाहिए, पर कोई सुनवाई अबतक नही हुई। सरकारने उस घरपर केवल एक तख्ती लगवा दी है, जिसपर लिखा है—"प्रेमचद इस घरमे पैदा हुए थे" और इस इमारतके ऊपर यही बात अग्रेजीमे लिख दी गई है। मै श्रीकाला साहबसे ये बाते सुनकर अपने-को अपराधी अनुभव करने लगा। मै हजारो मीलकी यात्रा कर शेक्सपीयरका स्थान तो देखने आ गया, पर उन प्रेमचदके, जिनके उपन्यास पढकर मैने हिंदी सीखी, जिनके उपन्यास भारतके ग्रामवासियोका हृदय समझनेमे

मेरे सहायक हुए, जिनके पात्र सूरदासको मैंने कई बार मन-ही-मन प्रणाम किया है. जन्मगृहकी तीर्थयात्रा मैंने अभीतक नही की। सरकार तो जनता-की ही प्रतिनिधि होती है। जैसी जनता होती है वैसी ही सरकार उसे मिलती है। जिस दिन जनता अपने साहित्यिकोंका सम्मान करना सीख जायगी उस दिन न कोई साहित्यकार भूखो मरेगा और न सरकार ही उसकी उपेक्षा कर सकेगी।

: १७ :

टावरलेजमें एक दिन
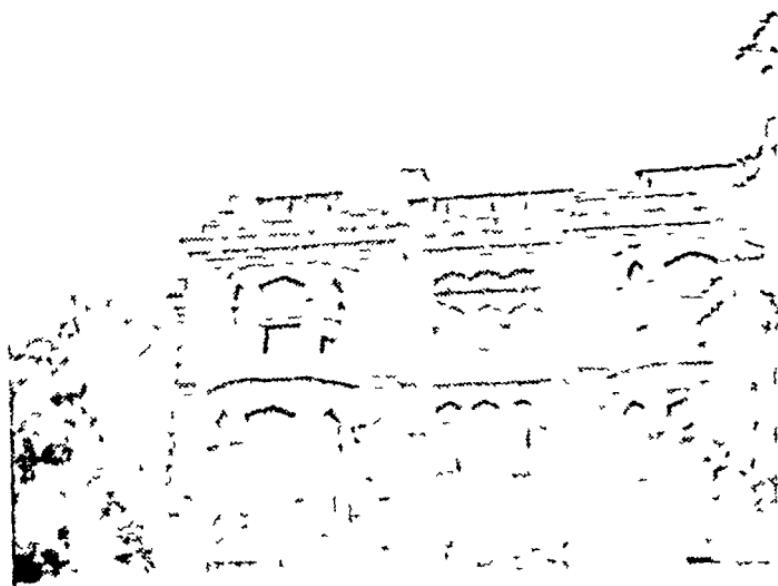
शेक्सपीयरके गावमे दो दिन रहकर ब्रिस्टल्के लिए चल पडा। ब्रिस्टलमे मुझे मिसेज डा० इलियटसे मिलना और उनका चिकित्सालय 'टावरलेज' देखना था। यो मिसेज इलियट और उनके पति ब्रिटेनमे अपने चिकित्सा-कौशलके लिए प्रसिद्ध है, पर मेरा मिसेज इलियटके प्रति विशेप आकर्पण इसलिए था कि वह मेरी कलमी दोस्त थी। पत्रोद्वारा ही उनसे मेरा वडा अच्छा स्नेह-सवध स्थापित हो गया था। ब्रिटेन आनेके लिए उनके कई बुलावे आ चुके थे और जब मैंने उन्हे अपने लदन पहुचनेकी सूचना दी तो उन्होने मुझे बार-बार पत्र लिखकर जल्द-से-जल्द मिलनेका आग्रह किया।

ब्रिस्टल मे ट्रेनद्वारा शामको सात वजे पहुचा और स्टेशनसे ही मिसेज इलियटको अपने आनेकी सूचना दी। फोनपर वह स्वय मिली। बोली "मि० मोदी, आप टैक्सी लेकर तुरत यहा पहुच जाइये। हमारे शामके भोजनका समय हो हो रहा है। हमारे साथ ही भोजन कीजिये और यही टावरलेजमे ठहरिये। पद्रह मिनटमे आप यहा पहुच जायगे। तबतक हम लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे है।"

मैंने टैक्सी ली और ड्राइवरको टावरलेजका पता बताया। ब्रिस्टल बहुत छोटा शहर है। टैक्सीने जल्द ही शहर पार कर लिया और वह मैदानके वीच आ गई; पर यह मैदान नही, एक बहुत बडा पार्क है। इसे बडे प्रयत्नसे इस शहरकी किसी भूतपूर्व म्युनिसिपल सदस्याने शहरकी स्त्रियोके लिए बनवाया था। पार्कमे स्त्रियोके आकर्पणका बहुत-सा सामान

इकट्ठा किया गया था। स्वास्थ्य-रक्षणके लिए खुली हवाको वह वहुत आवश्यक मानती थी, अत शहरके निकट ही अपनी वहनोको खुली हवामे आकृष्ट करनेके लिए उन्होने यह कीमती जगह चुनी।

टावरलेज आ गया। खूव खुली जगहमे यह चिकित्सालय है और एक ऊची टेकडीपर स्थित है। बगलकी नीचेकी जगहमे चिकित्सालय-का वाग और हरी दूवका मैदान है। चिकित्सालयकी इमारत दोमजिली

प्राकृतिक चिकित्साके एक केंद्र—टावरलेज

और बडी शानदार है। मेरी टाक्सीके रुकते ही चिकित्सालयके दरवाजेपर मुझे लबे, दुबले, चेहरेपर [illegible] दाढी, [illegible] से नाचते हुए [illegible] एक वृद्ध मिले। [illegible]

पास इनसे अधिक क्या होता है ? इन्होने बढकर मुझसे हाथ मिलाया। "मै हू इलियट, चलिये अदर चले।" मेरा कुछ सामान इन्होने उठाया और कुछ मैने और ये मुझे दौडाते-से अदर ले चले। यह दौड रहे थे, मुझे दौडना ही पडा। हम लिफ्टमे चढे। "मि० मोदी, यह लिफ्ट यहा रोगियोके लिए और आप-जैसे मेहमानोके लिए है, हम तो सीढीका ही उपयोग करते है।"

"ठीक ही है, मनुष्यको हाथ-पैर हिलानेसे बचानेवाले इन साधनोको देखकर ही तो वैज्ञानिक डरने लगे है कि आगे आदमीके हाथ-पाव होगे ही नही।"
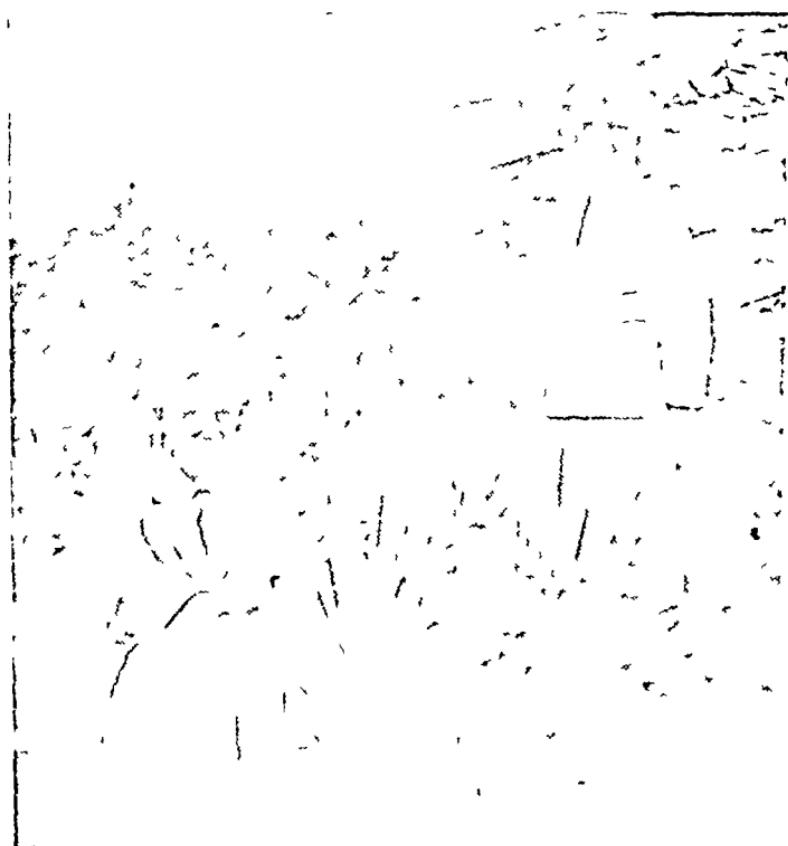
मिस्टर इलियट मुस्कराये और हम लोग दूसरी मजिलपर आ गये।

"यह है आपका कमरा। आप हाथ-मुह धोये और फिर जहासे हम लिफ्टसे चढे थे उसकी बाई तरफवाले कमरेमे आ जायं। वही भोजनालय है।"

भोजनालयमे मिस्टर इलियट ही मिले। पाच मिनट बाद मिसेज इलियट पधारी। "यह है मेरी पत्नी श्रीमती इलियट, जिनसे आपका पत्र-व्यवहार चलता रहा है।" मि० इलियटने कहा। मैने खडे होकर उन्हे नमस्कार किया। उन्होने झुककर प्रतिनमस्कार किया और भोजन शुरु हुआ। भोजन बहुत ही सादा था। सलाद, सलादके साथ खानेके लिए क्रीम, चोकरसमेत आटेके बिस्कुट, मक्खन और किसी तरकारीमे मिले हुए बहुतसे काजू और अतमे मिला सेबका मुरब्बा।

भोजन चलता रहा और ये पति-पत्नी मुझसे मेरे और हिंदुस्तानके बारेमे औपचारिक प्रश्न करते रहे। मैने भी उनसे उनके और चिकित्सालयके सबधमे अनेक प्रश्न पूछे। मिस्टर और मिसेज इलियट अमरीकामे पैदा हुए थे। वहा इन्होने अपने परिवारके सदस्योपर प्राकृतिक चिकित्सा आजमाई और अच्छा फल देखकर दोनो ही प्राकृतिक चिकित्साकी ओर इतने आकृष्ट हुए कि दोनोने चार वर्षतक अमरीकाके एक

शिक्षणालयमे प्राकृतिक चिकित्साकी शिक्षा प्राप्त की और ब्रिस्टल आकर प्राकृतिक चिकित्सालय स्थापित किया। इनके साथ मिसेज इलियट-की बहन भी काम करती है, जो काइरोप्रेक्टर है। लदनके आस्टियोपैथिक कालेजकी एक स्नातिका भी इनकी सहायिका है। यो कुल कार्यकर्ता

डा० इलियट और उनकी पत्नी

तीन हैं। बातें करते हुए मिसेज इलियटने मुझसे कहा, 'मि० गांधी मुझे अभी बाहर जाना है, यदि [illegible] तो मैं [illegible] कि आप भी मेरे साथ [illegible]। [illegible]

तो आपको देखनेको मिल ही जायगा।" मैंने स्वीकृति दी। "मि० डलियट, आप भी तो चल रहे है ?" मैंने पूछा।

"नही, मुझे यहा कई काम करने है। आप लोग हो आवे।"

हम कारमे बैठे और मिसेज डलियट कार चलाने लगी। यहासे चालीस मील दूर किसी गावमे ये अपनी बहनकी वर्ष-गाठमे सम्मिलित होने जा रही थी। इनकी यह बहन ही इनके चिकित्सालयमे काइरोप्रैक्टका काम करती है। कार मैदान और खेतोमेसे गुजर रही थी। कभी-कभी कोई छोटी बस्ती भी आ जाती थी। मैंने बात शुरू करनेके हिसाबसे कहा, "आपका पिछला पत्र तो मुझे चिली (अमरीका) से मिला था।"

"जी हा, मै वहा अपनी बडी बहनसे मिलने गई थी। सालमे एक-दो बार टावरलेज एक-दो महीनेके लिए छोड ही देती हू। अमरीका इस बार कई वर्षोके बाद गई। उफ ! वह कितना बदल गया है, पर लोगोकी परेशानी ही बढी है। जिसके पास जितनी बडी कार है, उससे बडी कार खरीदनेकी वह फिक्रमे है। कारमे बैठे-बैठे लोग सिनेमा देखते है। ऐसे हॉल बने है, जहा जाकर कार लग जाती है। लोग कारसे उतरकर हॉलमे जाना और कुर्सीपर बैठनेका भी श्रम उठाना नही चाहते और भोजन भी कारमे ही मगवाकर करते है। फिर भी ईर्ष्यासे जलते रहते है।"

"पर अमीरी आपके यहा भी तो कुछ कम नही है।"

"आप लदनसे आ रहे है न ? वैसी अवस्था हर जगह यहा नही है।"

इतनेमे सडकके किनारे कुछ घर दिखाई दिये। "देखिये, ऐसे घर भी यहा है और इनमे भी लोग रहते है। इनमे रहनेवाले अपने खानेसे अधिक कमा नही पाते।"

छोटे-छोटे साफ-सुथरे पक्के मकान थे, जिनकी खिडकियोसे घरका बढिया फर्नीचर, पूरे कपडे पहने हुए स्त्री-बच्चे, खिडकीपर रखे फूलोके गमले दिखाई दे रहे थे। मै समझ गया कि मिसेज डलियट और मेरी

गरीबीकी कल्पनामे बडा अतर है। मैंने प्रतिरोध नही किया और उन्हे रौमे बहने दिया। उन्हे निश्चय ही असतोष था कि इस व्यवस्थामे कुछ लोग बहुत अमीर हो जाते है और कुछ लोग बहुत गरीब रह जाते है।

"हिदुस्तानमे हमारे प्रति आप लोगोकी क्या भावनाए है ?"

यह प्रश्न मुझसे ब्रिटेनमे प्राय किया गया था और हर बार मैंने बडे ही रोषपूर्ण शब्दोमे अग्रेजोने ब्रिटेनके हितके लिए हिदुस्तानका जो नुकसान किया, वह विस्तारसे बताया था। वही मैंने मिसेज इलियटसे भी कहना शुरू किया। मिसेज इलियट स्तभित-सी सुनती रही। लगा जैसे उनके हाथ पत्थर होकर स्टीयरिंग व्हीलपर पड गये है। मैंने उनकी यह दशा देखकर अपनी बातोकी कडवाहट कम कर दी।

"मि० मोदी, करते दो-चार लोग है और सारी जाति बदनाम होती है। जनमत क्या है, इसका ख्याल थोडे ही कोई करता है।"

मुझे बात खत्म करनी थी, अत मैंने कहा, "आपकी बात सही है, साधारण जनता तो हर जगहकी एक-सी ही होती है।"

गतव्य स्थान आ गया। एक बगलेके आगे मैदानमे चार वृद्धाए आराम-कुर्सी डाले बैठी थी। हमारी कार देखते ही मिसेज इलियटकी बहन भी आ गई और उनके पति भी। उन्होने घूम-घूमकर हमे अपना बाग दिखाया, जो इन लोगोने फुरसतके समय स्वय तैयार किया है। बागमे बहुत तरहकी बेरिया थी। रासबेरी, गूजबेरी, ब्लूबेरी आदि जिन अनेक बेरियोके नाम किताबोमे पढता रहा हू, उनसे यहा उनके पौधे-समेत परिचय हुआ। तोडकर कुछ खाई भी। इतनेमे तीन-चार दम्पती और आ गये और वर्षगाठ मनानेका कार्य शुरू हुआ। कुछ खेल हुए, कुछ गाने गाये गए और जब इन लोगोने मुझसे कोई हिदुस्तानी खेल शुरू करनेको कहा तो मै परेशान हो गया। आखिर मुझे उन्हे [illegible] पडी। फिर खेलमे जीतनेवालोको इनाम दिये गए और स्वागत करके हम घरकी ओर लौटे।

"मि० मोदी, डा० लीफका चिकित्सालय आप देख ही चुके है, टावरलेज आप कल देखेगे। बहुत अतर नही है। मै आपको एक ही नई बात बता सकती हू—वह है सैटोनिज्म। यह विचार अमरीकामे आया है। जैसी कि उनकी आदत है, वे इसे भी बडे शब्दाडबरके साथ पेश करते है। वस्तुत बात बहुत थोडी है, पर है हमारे कामकी चीज। इससे हम लोग लाभ उठा सकते है।"

मै इस विषयपर दो-चार किताबे पढ चुका था, पर चुप रहा और मिसेज इलियट कहती गई—"मै इसे आपको एक उदाहरणद्वारा समझाती हू। मेरे पास गठिया रोगसे पीडित एक रोगिणी है। कल उसके जोडोमे दर्द बहुत बढ गया था। मै उसके पास गई और उसे एक आरामकुर्सीपर बिठाकर बोली, "तुम शरीर नही हो, शरीरसे बाहर आ जाओ। शरीरके निकट खडी हो जाओ, तुम्हारे किसी जोडमे कोई दर्द नही है।" तीन मिनट मै चुप रही, फिर पूछा, "कही दर्द है ?"

"बहुत आराम है।"

"यह कार्य तीन मिनटमे ही हो गया। मैने रोगिणीको बताया कि जब दर्द हो, वह ऐसा ही करे। बस, यही सैटोनिज्म है।"

"मिसेज इलियट, यह तो शरीर और आत्माकी बात हुई। शरीर और आत्माका भेद रोगीको और प्रत्येक व्यक्तिको बताना बहुत अच्छा है, पर हमारे यहा तो यह सभी जानते है। वहा यह विषय विद्वानोतक ही सीमित नही है, सुबह नदी नहाने जानेवाली ग्रामीण स्त्रिया भी, जिनको कोई स्कूली शिक्षा नही मिली है, गाती जाती है कि शरीर तो पिजडा है, पछी इसमेसे उड जानेवाला है।"

मिसेज इलियट भौचक्की-सी रह गई! फिर तो दर्शनपर ही बात चल पडी। हम कारमे उतरे तो बोली, "मैने कभी हिदुस्तान-यात्राकी बात नही सोची थी, पर अब तो हिदुस्तानकी यात्रा करनी ही पडेगी।"

मिसेज इलियट मुझे मेरे कमरेतक पहुचाने आई और बोली—

"यदि आपको कष्ट न हो तो सुबह आठ बजे आप मुझे तैयार मिलें। मैं उस समय आपको अपने प्रत्येक रोगीसे मिलाना चाहूँगी।"

"मुझे उनसे मिलकर खुशी होगी।"

"अच्छा तो नमस्कार।"

मैंने भी नमस्कार किया और सोनेकी तैयारीमें लगा।

सुबह मुझे मिसेज इलियट अपने प्रत्येक रोगीके पास ले गई। वह हर रोगीसे मेरा परिचय कराती, उनका रोग और रोगकी स्थिति और उनकी चलती चिकित्सा मुझे बताती और उनकी चिकित्सा-पर मेरी राय पूछती। चिकित्सामें वह उपवासको प्रधानता देती हैं और साथ-साथ जलोपचार, मालिश, आस्टियोपैथी, काइरोप्रैक्टिक चलाती हैं। चालीस रोगी थे। प्रत्येक रोगीको वह स्वयं देखती और चिकित्साके समय भी उपस्थित रहनेकी कोशिश करती हैं। रोगियोंको देखना छोड़-छोड़कर वह बीच-बीचमें चिकित्साका कार्य देखनेके लिए चिकित्सालयमें भी चली जाती थी।

अन्तमें मुझे वह एक महिलाके कमरेमें ले गई। उन्हें आर्थ्राइटिस था। वह कभी वर्धामें गांधीजीके आश्रममें [illegible] और उन्होंने गांधीजीपर एक पुस्तक भी लिखी है। उन्हें मेरा परिचय [illegible] साथ-साथ मिसेज इलियटने उनसे यह भी कहा कि मि० [illegible] अंग्रेजोंने हिन्दुस्तानसे सब लिया-ही लिया है, कुछ दिया नहीं।

बड़े ही शान्त भावसे उक्त महिलाने कहा, "मि० [illegible] ठीक है कि हमने हिन्दुस्तानसे लिया-ही-लिया है, पर [illegible] न्याय और शासन छोड़ा है।"

और मुझे उक्त महिलाके इन [illegible] न्याय और भारतकी शासन-पद्धतिके इतिहास[illegible] मजबूर किया।

अब मुझे मिसेज इलियट [illegible]

चार-पाच व्यक्ति तरकारिया साफ करने और भोजन बनानेमे लगे थे। चूल्हे सभी बिजलीके थे और सारा वातावरण बडा स्वच्छ था। बगलके कमरेमे एक महिला बहुत छोटे-छोटे गिलासोमे कुछ सावला-सा रस भर रही थी। मैने पूछा, "यह क्या है ?"

"यह जडी-बूटियोका रस है।"

"जडी-बूटियोका नाम ?"

"नाम कुछ नही, इस बागमे जो भी दस-पाच किस्मकी हरी पत्तिया खाने लायक मिलती है, उन्हे हम इकट्ठा कर लेते है और उनका सुरस रोगीको देते है।"

"किस रोगमे देते है ?"

"कोई नियम नही है। हर रोगीको देते है।"

टावरलेज चिकित्सालय देखते एक बज गया, फिर मैने भोजन किया और दो बजे जब मै लदन जानेवाली गाडी पकडनेके लिए स्टेशन चलनेकी तैयारी करने लगा तो मिसेज इलियट फिर मिली। मेरे पास अग्रेजी अनुवादसहित गीताकी एक प्रति थी, वह मैने उन्हे भेट की और स्टेशनके लिए चल पडा।

रास्तेभर मिस्टर और मिसेज इलियटकी मूर्ति आखोके आगे फिरती रही। इन पैसठ और साठ वर्षके पति-पत्नीके काम करनेकी शक्ति, उत्साह और उनका मानसिक चैतन्य और जीवन जीनेकी पद्धति देखते हुए क्या यह प्रमाणित नही हो जाता कि स्वास्थ्य बहुत थोडेसे नियमोपर आश्रित है और जवानी तनकी नही, मनकी चीज है ?

: १८ :

पेरिसमें

मुझे इंग्लैंडमें जिनसे मिलना था, पंद्रह जुलाईतक उन सबसे मिल चुका था और जो संस्थाएं और चीजें मुझे देखनी थीं उन्हें भी देख चुका था। तबीयत भर गई थी, इसलिए मैंने सोचा, अब सीधे यहांसे हिंदुस्तान लौट चलूं। अपना यह विचार मैंने अपने मित्र श्रीनारायणस्वरूप शर्माको बताया तो वह बोले, "आप चाहे और कहीं न जायं, पर पेरिस तो अवश्य ही हो आवें। पेरिस न जाना तो वैसा ही रहेगा जैसा किसीका गोरखपुर पहुंचकर लखनऊ न जाना—पेरिसका रास्ता यहांसे केवल सात घंटेका है।" मुझे उनकी बात जंच गई। मैंने कहा, "शर्माजी, बिना फ्रांसकी भाषा जाने और अकेले पेरिसमें घूमनेमें शायद ही कुछ आनंद आवे. आप भी चलें तो पेरिस चलनेका कार्यक्रम बना सकता हूं।"

"यदि मेरा साथ चाहते हैं तो एक महीनेका समय निकालिये—फ्रांस, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, इटली सभी जगह चलिये। मुझे तो देशोंकी यात्रा एक वर्ष बाद करनी ही है, वह अभी सही।" मेरे [illegible] देनेपर [illegible] सारा कार्यक्रम बना लिया और हम लोग १८ जुलाईको सुबह ग्यारह बजे पेरिसके लिए रवाना हो गये। दो घंटेमें रेल हमें [illegible] ले आई। उसे हमने जहाजद्वारा सवा घंटेमें पार किया। जहाजपर चढ़ते ही '[illegible]' याद आ गया, जिससे मैं बंबईसे ब्रिटेन पहुंचा था। जहाज छोटा था, पर सुविधाएं वैसी ही थीं। जहाज यात्रियोंसे भरा हुआ था। [illegible] तो सैर करनेवाले ही थे। [illegible] ऐसे थे जिन्हें [illegible] कहते हैं। ये जहांतक होता है, पैदल यात्रा [illegible] हैं। [illegible]

खर्च करके किसी वाहनका उपयोग नही करते, अपना भोजन स्वय बना लेते है और यात्राका सारा सामान अपनी पीठपर बाधकर चलते है। अट्ठारह-बीस वर्षके लडके-लडकिया, श्रमके कारण कठोर शरीर, चेहरेपर कोमलताकी जगह मजबूती, अदम्य उत्साह—इनको देखते ही बनता है। पता नही ये कहा-कहाकी यात्रा करके फ्रास जा रहे थे।

इग्लिश चैनलको पारकर हम फ्रासकी सीमामे पहुच गये। किनारेपर ही फ्रासकी ट्रेन खडी थी। स्टेशनपर, ट्रेनपर तथा अन्य जगहोपर सकेत फ्रासीसी भाषामे लिखे थे। हम यात्रियोका अनुसरण करते रेलमे आ बैठे और रेल द्रुतगतिसे चल पडी। फ्रासकी रेले अपने आराम और तेजीके लिए ही नही, ठीक समयसे खुलने और पहुचनेके लिए भी दुनिया-भरमे प्रसिद्ध है। लदनसे जिस डब्बेमे हम चले थे, उसमे एक महिला अपनी दस वर्षकी पुत्रीके साथ थी। वे ही इस डब्बेमे मिली। जब हम ट्रेनमे जगह पानेके लिए परेशान हो रहे थे उस समय उन्होने ही बुलाकर हमे जगह दी थी। उनकी हर समय मुस्कराती रहनेवाली लडकीसे तो हमारी दोस्ती ही हो गई थी। जब मैने उसे चेरी दी तो उसने बडी झिझकके साथ एक ली, पर जब मैने उसके सामने बहुत-सी डाल दी तो जैसे वह आश्चर्यचकित रह गई। यहा भी वह हमसे कुछ-कुछ बात करती रही। शामको छ बजे हम पेरिस पहुच गये। सूरजके छिपनेमे अभी तीन घटेकी देर थी, अत सध्या आती प्रतीत होती थी, पर सब जगह पूर्ण प्रकाश था।

स्टेशनसे निकलकर हमने एक टैक्सीवालेको उस होटलका पता बताया, जो हमे एक मित्रने दिया था। टैक्सी तेजीसे चलती दस मिनटमे ही हमारे इच्छित होटलके सामने रुक गई। फ्रासीसी सिक्के हमारे पास थे नही, कमरा मिल जानेपर टैक्सीवालेको मैने होटलवालेसे ही किराया दिलवाया और हम लोग पेरिससे परिचित होनेके लिए निकल पडे। निकलनेके पहले होटलके व्यवस्थापकने हमे पेरिसके दो नक्शे, जिनपर होटलके

स्थानपर एक निशान लगा था और होटलके पतेके कार्ड दिये, जिससे हम खो भी जाय तो लोगोसे पता पूछते होटल पहुच जाय। टैक्सीवालेको किराया दिलानेपर वह समझ गया था कि इनके पास फ्रासीसी सिक्के नही है, इसलिए उसने हमे खर्चके लिए दो हजार फ्रैंक भी दिये। उसे अग्रेजीके दस-पाच ही शब्द आते थे, पर उसने हमे समझा दिया कि ये पैसे खर्च कीजिये कल बैंकसे पौड भुनाकर मेरे पैसे वापस कर दीजिये।

शर्माजी पेरिसकी ट्यूब (जमीनके अदर सुरगमे चलनेवाली रेलगाडी) देखनेको बहुत उत्सुक थे, अत हम लोग नजदीकके एक स्टेशनसे नीचे उतरे। हमे कही खास जाना तो था ही नही। एक गाडीमे बैठे और चार-पाच स्टेशन बाद उतरकर सडकपर आ गये। यह बडी जगह थी। लबी-लबी आठ-दस सडके एक जगह आकर मिली थी। पेरिसमे सडके प्राय सभी सीधी होती है और यहा तिराहे, चौराहे कम, पाच, सात, दसराहे ही अधिक होते है। एक तो ग्यारहराहा भी है। जहा हम जा रहे थे वही एक गिर्जा था, जिसके द्वारपर बडी कलापूर्ण सुदर मूर्तिया बनी थी। थोडी दूर हम चले तो एक पार्क आ गया—[illegible] लबा-चौडा, मूर्तियोसे खूब सजा हुआ। [illegible] जिसे पानीके कुडमे खडी एक स्त्री उठाये हुए थी और [illegible] कई अश्वारोही तेजीसे अपने घोडे दबाते [illegible] जैसे गति भरी हो और सवार जल्द [illegible] हो। बहुत देरतक हम पार्ककी मूर्तिया ही देखते रहे, [illegible] बच्चोके ये मूर्तिया ही हमे अधिक सुदर लग रही थी।

अब हमने दसवा अनुभव भी प्राप्त [illegible] चढ गये। टिकट कलक्टरके आनेपर हमने [illegible] ग्यारहसे अधिककी माग की। मैने [illegible] दो टिकटे दे सको, दे दो। उसने [illegible] कि यह [illegible]। मैने सोचा, दसपर [illegible]

ना, हम तो यही उतरे जाते है, इतना आना ही बहुत हो गया और आगे जब बस रुकी तो हम उतर पडे।
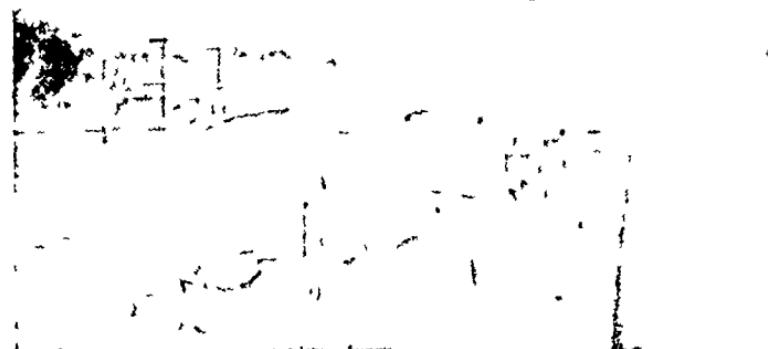
अब जरा भूख लग आई थी, इसलिए एक फलवालेकी दुकानपर पहुचे। फलोकी टोकरियोपर दाम लिखे थे—एक किलो केलेका २०० फ्रैंक, चेरीका १६० फ्रैंक और एक खरबूजेका २७० फ्रैंक। दाम बहुत अधिक जान पडे, पर जब हमने देखा कि सभी लिखित भावपर ही खरीद रहे है तो हमने भी आधा किलो केले, आधा किलो चेरी और एक खरबूजा जो लगभग एक सेरका होगा, २७० फ्रैंकमे लिया। हमारे तो सभी फ्रैंक ही खर्च होते जा रहे थे। हम इन फलोको लेकर एक पार्कमे आये और यहाके सिक्केका हिसाब समझने लगे तो समझमे आया कि एक फ्रैंक एक पैसेके बराबर होता है और किलो एक सेरके बराबर—तो डेढ सेर फल हमने साढे छः रुपयेमे खरीदे है। इग्लैंडमे भोजन-सामग्रीका मूल्य भारतसे दो-तीन गुना है और फ्रासमे हमे बताया गया था कि उससे भी दूना। तो यह ठीक ही था और हमारी समझमे आया कि दस फ्रैंक देकर हम जो बसमे सारी पेरिसकी यात्रा करना चाहते थे वह गलत था और कडक्टर जो पचासका नोट हमसे माग रहा था वह पचास रुपयेका नही, बल्कि पचास पैसेका था।

दूसरे दिन सुबह नौ बजे हम लोग टैक्सीसे भारतीय राजदूतावास पहुचे। हमे पेरिसके थोडे ही अनुभवसे ज्ञात हो गया था कि यहा ट्यूब या बससे यात्रा करना हमारे बसका नही है, इसलिए हर जगहके लिए हमने टैक्सी लेना ही तय किया। भाषाका ज्ञान न होनके कारण केवल इशारोसे ही बात होती थी। यदि पच्चीस-तीस फ्रासीसी शब्द भी हमने सीख लिये होते तो काम आसानीसे चल सकता था। कुछ सीखे थे, पर मुझे तो अब केवल एक शब्द 'लेह' अर्थात् दूध याद रह गया था—शायद इसलिए कि दूध ही इस यात्रामे मेरे भोजनका आधार बना हुआ था।

राजदूतावासमे बडे प्रेमसे लोग हमसे मिले। हमारा परिचय पूछा और हमारी सहायता करनेकी इच्छा प्रकट की। हमने उन्हे बताया कि हम यहा

पाँच-सात दिन रहना चाहते हैं। हमें ऐसी तरकीब बताइये जिससे हम पेरिस आसानीसे देख सकें। उन्होंने बताया कि यहाँ यात्रा करानेवाली बसें चलती हैं। एक दिन नया पेरिस देखिये, एक दिन पुराना पेरिस, एक दिन वार्सेलीज चले जाइये, एक दिन म्यूजियममें लगाइये और दो दिन यहाँके बाजार वगैरा देखिये। यहाँके तीन-चार अच्छे ओपेरा, थियेटर तथा नाइट क्लबोंके नाम भी उन्होंने हमें दिये कि हम अपनी संध्या वहाँ बिता सकें।

यात्रा करानेवाली ये टूर-बस बड़ी व्यवस्थित हैं। दुनियाके हर देशसे हजारों यात्री यहाँ आते रहते हैं। बस हर होटलसे यात्री इकट्ठा करती हैं और फिर भाषाके हिसाबसे यात्रियोंको विभाजित कर उनको उसी भाषाके जानकार पथ-प्रदर्शकके साथ शहरके प्रसिद्ध स्थान दिखानेको भेजती हैं।

पेरिस नगर—पृष्ठभूमिमें [illegible]

एक-एक दिनमें हमने नया और पुराना [illegible] बड़ा ही सुंदर शहर है। बीचमें नदी बहती है, [illegible] है। पेरिसके बीचमें जगह-जगह [illegible]

सारा शहर बडी-बडी मूर्तियोसे बडे ढगसे सजाया गया है। असलमे पेरिसके बाहरी रूपको ही आकर्षक बनानेकी कोशिश की गई है और यह कोशिश सैकडो वर्षसे चली आ रही है। शहरमे बहुत-सी ऐतिहासिक सुदर इमारते है। गिर्जे, नेपोलियनका स्मारक, ओपेराकी भव्य इमारत, एफिल टावर आदि मिलकर पेरिसको बहुत खूबसूरत बनाते है। यहा बाजारमे दुकाने फुटपाथपर भी फैली रहती है। हर चायकी दुकानके सामने सौ-पचास कुर्सिया और मेजे पडी रहती है और इनपर बाहर ही लोग बैठना पसद करते है। यह दृश्य तो हिंदुस्तान ही-जैसा है। हिंदुस्तान-मे लोग चाय-शर्बत पीते है, यहा अधिकतर शराब। शराब जैसे इनके लिए पानी है। पानी तो लोग यहा पीते ही नही। लदनमे भी पानी मागनेपर लोगोको आश्चर्य होता है और यहा तो लोग और भी ताज्जुबमे पड जाते है।

यहा आते ही एक पत्र मैने श्री जार्ज विकार्ट कोडालको लिख दिया था। इनका पता मुझे मेरे शिष्य श्री एलबर्ट मासुरेने लिखा था, जो मिस्रसे आरोग्य-मदिरमे प्राकृतिक चिकित्सा सीखने आये थे। उनका बडा अनुरोध था कि मै इनसे अवश्य मिलू। इन्होने मेरा पत्र पाते ही मुझे फोन किया और दूसरे दिन सुबह नौ बजे मेरे होटलमे मुझसे मिलने आये। यह पच्चीस वर्षके नवयुवक है और प्राकृतिक चिकित्साके प्रेमी। लोगोकी चिकित्सा भी करते है, पर जीविकाके लिए किसी दफ्तरमे काम करते है। अग्रेजी थोडी जानते है। शाकाहारी है—अर्थात् भोजनमे फल, सलाद, मेवे और रोटी लेते है। दूध और अडेके विरोधी है और प्राकृतिक चिकित्सामे शेल्टनके भक्त। इन्होने मुझसे अनुरोध किया कि मै श्रीमती पिचारोसे अवश्य मिलू और बताया कि श्रीमती पिचारो प्राकृतिक चिकित्साकी प्रचारिका है और अग्रेजी भी जानती है। इन्होने मेरे कमरेमे बैठे-बैठे ही फोन करके उनसे हमारे मिलनेका वक्त भी ग्यारह बजेका तय कर दिया अर्थात् इनके जाते ही हमे श्रीमती पिचारोसे मिलने जाना था।

हमने साढ़े दस बजे टैक्सी ली और श्रीमती सिचानीसे मिलने चले। टैक्सीने हमे एक गलीके मोडपर लाकर छोड दिया और बताया कि हम आगे पैदल ही चले जाय, क्योंकि टैक्सीसे जानेपर भीडमे हमारा बहुत-सा समय नष्ट हो जायगा। इस गलीकी हर दुकानकी खिडकीमे प्रदर्शनके लिए चित्र रक्खे गये थे। पाच-सात दुकानोकी खिडकिया देखकर समझमे आ गया कि यह चित्रकारोकी गली है। हर तरहके चित्र थे। कई तो बडे ही कलापूर्ण थे, जो बरबस हमारी दृष्टि आकृष्ट कर रहे थे और रुककर उन्हे देखनेको मजबूर करते थे। एक चीनी दुकानपर तो हमे रुकना ही पडा। एक चीनी लडकी अन्दर बैठी रेखाओसे चित्र बना रही थी और सारी दुकानमे केवल पाच-सात चित्र थे जो बडे ही कलापूर्ण ढगसे सजाये गए थे। ११ बज रहे थे अत इन चित्रो और दुकानोको देखनेका लोभ सवरण-कर हम आगे बढे। पर यह क्या? यहा तो दुकानकी खिडकीमे गाधीजीकी मूर्ति रक्खी हुई है और खिडकीमें किताब भी। गीता और वेदान्त है। विनोबापर भी एक किताब है और एक पुस्तक गाधी भी मै पढ सका।

"मैने इनमेसे कुछके दर्शन भी किये है।"

"ओह! तब तो आप बडे सौभाग्यशाली है।"

"यह किसकी तस्वीर है ?"

श्रीमती पिचारोकी दुकानकी खिडकी

"कृष्णमूर्तिकी, पर यह इनके बचपनकी है।" तभी श्रीमती पिचारोने अपनी मेजकी एक दराजसे बडी श्रद्धासे एक तस्वीर निकाली और हमे दिखाते हुए बोली, "यह देखिये, यह इनकी अबकी तस्वीर है।"

"मैने इनका प्रवचन सुना है।"

"आप मद्रास गये है ?"

"नहीं, सन् १९३५में वह बनारस पधारे थे। उस समय मैं विद्यार्थी था और बनारसमें पढ़ता था। उसी समय यह सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था।

"आप तो बड़े भाग्यवान हैं। यही बड़ा भाग्य है कि आप भारतमें पैदा हुए। मैं भारत जाना चाहती हूं और वहांके महात्माओंके दर्शन करना चाहती हूं।" यह कहते-कहते वह एक अनिर्वचनीय आनंदसे अभिभूत हो उठी।

"भारत आकर क्या कीजियेगा? यहां भी तो आप उसका ही काम कर रही हैं। सत्-साहित्य और शाकाहारका प्रचार भी तो उसका ही कार्य है। प्राकृतिक चिकित्सापर ये किताबें लोगोंतक पहुंचाकर आप कम महत्त्व-पूर्ण कार्य नहीं कर रही हैं।

"मैं समझती हूं कि सत्कार्य भी ईश्वर-प्रार्थना ही है। मेरे पति और मेरे बच्चोंकी मृत्यु हो चुकी है। मैं अकेली ही दुःखके दिन इस शान्तिसे यहां काट रही हूं।

और हिंदुस्तानकी भूरि-भूरि प्रशंसा करती रही। उन्होंने मुझे 'बायो नेचरल' मासिकके, जिसकी ये प्रकाशिका हैं, संपादकसे भी मिलाया। वह अंग्रेजी नही जानते थे। कुछ देर उनसे श्रीमती पिचारोकी मार्फत बात हुई, जिससे पता चला कि दो वर्षसे 'बायो नेचरल' मासिक निकलता है और उसके पांच हजार ग्राहक हैं। फ्रांसमें शाकाहारका प्रचार धीरे-धीरे हो रहा है और साथ-साथ प्राकृतिक चिकित्साका भी, पर अभीतक यहां कोई प्राकृतिक चिकित्सालय नही खुला है।

थोडी देर उस दुकानमें और ठहरकर मैं किताबें देखता रहा। अधिकांश किताबें अध्यात्मपर थी। कुछ और भी भारतीय किताबें थी, जिनमें रवीन्द्र और शरत्के ग्रंथोका अनुवाद, गांधीजीकी पुस्तक 'आरोग्य-की कुंजी'का अनुवाद तथा नेहरूजीकी सभी पुस्तकें थी। विनोबापर सुरेश राम भाईकी लिखी एक पुस्तकका अनुवाद था और प्राकृतिक चिकित्सा-की भी कुछ पुस्तकें थी, जिनमें अलबर्ट मासुरेकी फ्रेंचमें लिखी पुस्तकें विशेष रूपसे थी।

"आपको यहातक पहुचनेमे कष्ट तो नही हुआ ?" शात चालमे कमरेमे आते हुए बडे ही मधुर स्वरमे श्रीखेलरने हमसे पूछा।

"जी, मै विट्ठलदास मोदी हू और आप मेरे मित्र नारायणस्वरूप शर्मा।" हाथ मिलाये गए और हम लोग बैठ गये।
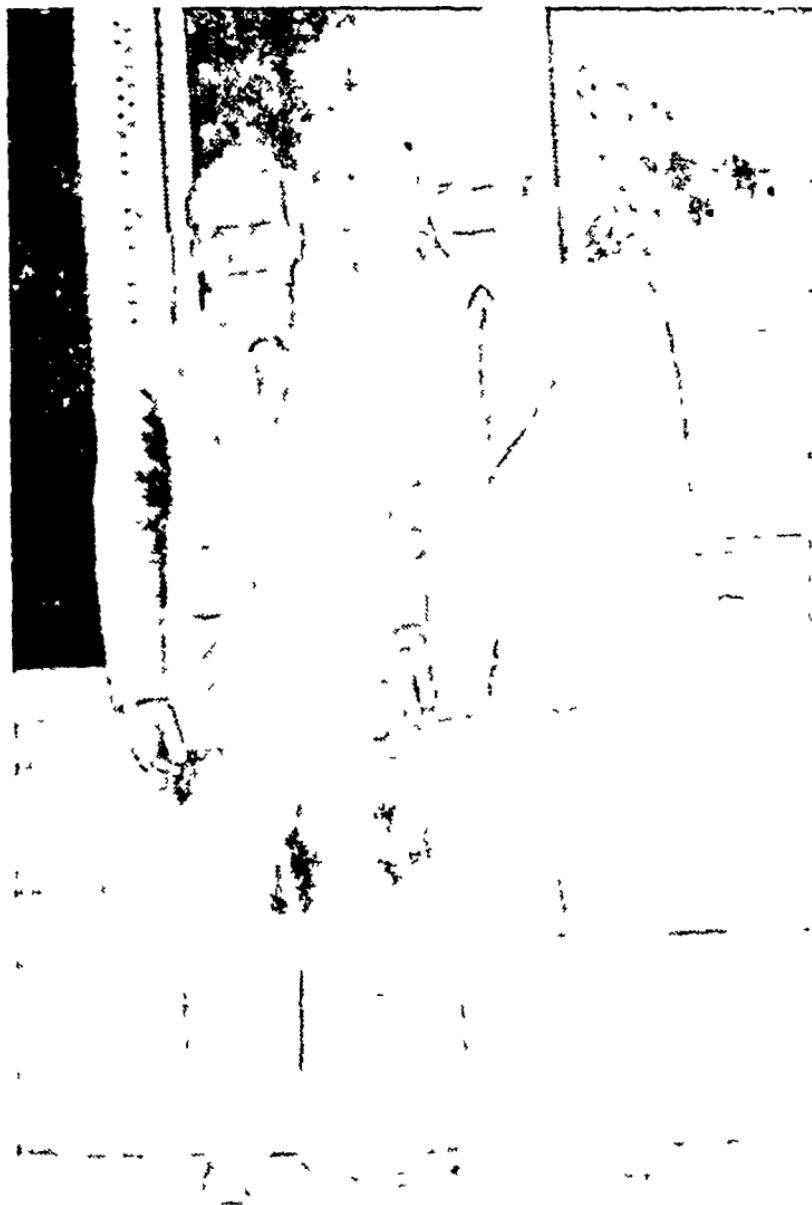
न जाने क्यो, मै अमरीकीके नामपर हमेशा एक मोटे-ताजे शरीरकी कल्पना किया करता हू, पर यहा इकहरा बदन, चेहरेपर आयुकी गभीरता और शरीरमे बच्चो-जैसी तत्परता, चेहरा बिना मुसकराये खिल उठे और आखोमे बात करनेकी शक्ति। सौजन्यके वातावरणमे मेरी उत्सुकता जाग उठी। श्रीखेलर अतर्राष्ट्रीय निरामिषभोजी सघके उपप्रधान है और फ्रासमे निरामिष भोजनके प्रचारके लिए पेरिसमे रह रहे है। पिछले आठ वर्षोंमे इस सघर्ष-कार्यके लिए उन्होने अपना सारा समय दे रक्खा है।

औपचारिकताके बाद बातचीत आगे बढ चुकी थी—"आपकी रुचि निरामिष आहारमे कैसे हुई ?" मैने पूछा।

दस वर्ष पूर्वकी बात है। "मै बीमार पडा था। बीमार क्या पडा था, समझ लीजिये मेरे शरीरमे लकवा मार गया था। सभी प्रकारका इलाज करानेके पश्चात् प्राकृतिक रहन-सहनपर कुछ साहित्य पढनेको मिल गया और प्राकृतिक चिकित्सामे दिलचस्पी हुई। इसमे मुझे अपनी पत्नी-से विशेष प्रेरणा और सहयोग मिला और आज आप मुझे जीवित देख रहे है। ६५ वर्षकी आयुमे न केवल मै नीरोग हू, अपितु अपनेमे दिन-प्रति-दिन नया उत्साह अनुभव करता हू। मुझे लग रहा है जैसे मै निरन्तर जवान होता जा रहा हू। प्राकृतिक रहन-सहनपर मेरी निष्ठा बढती जाती है और अब तो मैने अपना शेष जीवन ही अतर्राष्ट्रीय निरामिषभोजी सघको दे डाला है।"

"तो आपकी पत्नी भी निरामिषभोजी है ?"

"जी हा, हम दोनो एक-से है, बल्कि वह मुझसे इस बारेमे अधिक उत्साही है। वह इस बारेमे मेरी प्रेरणा है।"

"क्या आप उन लोगोसे सहमत है, जो दूधको भी मासाहारमे समझते है ?"

"जी नही, मै दूध लेता हू। मेरे भोजनमे फल, अनाज, दूध, मक्खन, पनीर तथा सब्जिया शामिल है ।"

"यूरोपमे निरामिष आहारके भविष्यके सबधमे आपका क्या विचार है ?"

"अलग-अलग देशोमे अलग-अलग स्थिति है, लेकिन फ्रासमे हालत बहुत पिछडी हुई थी। हम लोगोने प्रचारका कार्य तीन वर्षसे प्रारभ किया है। भारतीय तो भारतके कुछ प्रातोमे जन्मसे ही निरामिषभोजी है। आप हमारी कठिनाइयोको जरा मुश्किलसे समझ पायेगे। आपके यहा परपरागत रूपमे चपाती या चावल निरामिष आहारके रूपमे लेते है, इस-लिए आपको समझना नही पडेगा कि निरामिष आहारसे आपका क्या मतलब है। पर यहा निरामिष आहारकी रूपरेखा समझानेके लिए हमे भोजनालय खोलने पडे है। इनमे स्वादिष्ट और भोजनकी दृष्टिसे पूर्ण निरामिष भोजनकी विभिन्न तश्तरिया देना एक समस्या है। आप गये है यहा निरामिष भोजनालयमे ?"

"जी, लदनमे तो वेगा रेस्तरामे हम लोग गये थे, पर पेरिसमे मुझे पता नही था कि इस प्रकारके भोजनालय होगे।"

"आप अवश्य जाइये। पता लिख लीजिये।" और उन्होने हमे दो पते लिख दिये ।

शर्माजीने 'रिवोली'के फरवरीके किसी अकमे पढा था कि युद्धके दिनो-मे राशनके लिए जिन्होने ब्रिटेनमे अपनेको निरामिषभोजीके रूपमे रजि-स्टर्ड कराया था, उनके लिए ब्रिटेनकी बीमा कपनियोने जीवन-बीमाके प्रीमियम कम कर दिये थे, क्योकि निरामिषभोजियोके जीवनकी अवधि गणितज्ञोने अधिक लगाई थी । इस प्रकार युद्धकालमे राशनके लिए निरामिषभोजियोके रूपमे रजिस्टर्ड व्यक्तियोकी सख्या डेढ लाखसे ऊपर

थी। उन्होने श्रीखेलरसे पूछा, "क्या इस प्रकारके कोई आकडे या सुविधाए फ्रासमे भी उपलब्ध है ?"

"नही, फ्रास इस बारेमे ब्रिटेनसे बहुत पीछे है। ब्रिटेनमे निरामिष-भोजी आदोलन १८५०मे प्रारभ हो गया था और वहा यह आन्दोलन दिन-प्रति-दिन जोर पकडता जा रहा है। आप लदनमे रहते है तो इस सबध-मे जानते ही होगे।"

हम थे कि हमारे प्रश्नोका क्रम टूटता ही न था और खेलर व उत्साह भरे, बातचीत टूट न जाय इसके लिए प्रयत्नशील। शर्माजीने मुझे याद दिलाया कि हमे कमरेका भी उपयोग करना है। मैने श्रीखेलरसे आग्रह किया कि मै उनका सपत्नीक फोटो लेना चाहता हू। खेलर अपनी पत्नीको बुलाने अदर गये। मैने घडी देखकर शर्माजीसे कहा—"आठ तो बज गये पर अभी हमारा आधा घटा ही चल रहा है।

शानीमे पट गया। अमरीकाकी पत्नी स्मी ! पर वह हमारे आश्चर्यको नही समझ पाई, बोली—"मुझे प्राकृतिक जीवनमे विश्वास करनेवाले व्यक्ति बहुत पसद है और भारत-यात्राके बादसे मै भारतको सबसे अच्छा देश मानती हू। मै भारतकी भक्त हू और मुझे भारतीय प्यारे है।"

"क्या आप भारत हो आई है ?"

"जी हा, पिछले वर्ष मै और खेलर दोनो बबईमे होनेवाले निरामिष-भोजी सघके विश्व-अधिवेशनकी भूमिका तैयार करनेके लिए भारत-यात्रा-पर गये थे। यात्रासे पूर्व हमने भारत जानेवाले यूरोपीय यात्रियोके लिए अग्रेजीमे प्रकाशित कुछ साहित्य पढा। पढकर मेरी धारणा थी कि मै एक गर्म जगली देशमे जा रही हू, जहा गदे और असभ्य लोग रहते है, पर सुनिये, मै दुनियामे घूम चुकी हू और मै यह दावेके साथ कह सकती हू कि भारतीय सबसे अधिक साफ होते है। आप चौंकते है। देखिये, मेरा मतलब सडकोकी सफाईसे नही है। मै तो यह कहती हू कि उनके कपडे गदे भले ही हो, पर वे त्वचापर कृत्रिम चीजे लपेट और गदगी छिपाकर साफ नही कहलाते। उनके शरीरसे दुर्गंध नही आती। लीजिये, खेलर आ गये, मेरी गवाही देगे। मै कहती हू, भारतीयोके शरीरसे दुर्गंध नही आती।"

"जी हा," खेलरने समर्थन किया, "हम लोग बबईसे दिल्ली रेलमे यात्रा कर रहे थे। सर्दीके कारण डब्बेकी सब खिडकिया बद कर दी गई थी और हमारे डब्बेमे पाच भारतीय और थे। उनकी श्वास-वायु इतनी निर्गंध थी कि सारी रात हम लोग सोये और सुबहतक भी डब्बेमे गध नही थी। आपने शायद महसूस नही किया। खैर, मै आपको बताता हू। अगर भारतीयोकी जगह पाच मास-भक्षी यूरोपीय उस डब्बेमे होते तो दो घटेमे पूरा डब्बा असह्य बदबूसे भर जाता।"

श्रीमती खेलर बोल पडी, "हा, मुझे मास-भक्षणसे इसलिए घृणा है कि श्वास और त्वचासे बदबू आने लगती है और फिर पाउडर लगाने-की जरूरत पडती है। फिर वह पाउडर भी सडेगा और फिर बदबू। छि-

छि !" और कुछ ऐसा चेहरा उन्होंने बनाया कि मांस-भक्षणसे उत्पन्न होनेवाली अरुचिकर त्वचा-गंध साकार हो उठी।

मैं पूछ बैठा, "आप भारतसे क्या-क्या लाये हैं?"

"लाया तो पता नहीं क्या-क्या हूँ, पर नेहरूजीके साथका हमारा चित्र मुझे सबसे अधिक प्रिय लगता है और वह मुझे एशियाकी राजनीतिके उस पितासे अपनी कुछ देरकी भेंटकी याद दिला देता है। हम एक छोटी उम्रके हिंदुस्तानी फोटोग्राफरको अपने साथ ले गये थे, और न जाने क्यों मैं उस दृश्यको नहीं भूल पाता जब श्रीनेहरूने उस फोटोग्राफरके कंधेपर हाथ रखकर पूछा था कि तुम भारतके किस स्थानसे आये हो। मैं उस महान् व्यक्तिके इस सौजन्यको कभी नहीं भूल सका। मैं तो यह सोचता हूँ कि भारतीयोंमें कुछ इस प्रकारकी शक्ति है कि वे अपने हो जाते हैं या अपना बना लेते हैं। दिल्लीके एक समारोहमें मुझे गांधीटोपी भेंट की गई। मैंने उसे वहीं पहनकर देखा तो जैसे गोरी त्वचामें भारतीय रंग उसमें पट गया। मैं ऐसा कहे जानेमें गौरव मानता हूँ। मैंने [illegible] अपनापन पाया। और ऋषिकेश! आप गये हैं कभी [illegible]?

यात्राके उपरात मुझमें जो परिवर्तन हुआ है वह ठीकसे मैं आपको नहीं बता सकता। केवल इतना कह सकता हूं कि मेरे जीवनकी अन्तिम अभिलाषा यह रह गई है कि मेरी मृत्यु भारतमें ऋषिकेशके पुण्य वातावरणमें हो और मैं अगले जन्ममें भारतीय बनूं। भारत महान् है।"

खेलरके स्वरमें उनकी आत्माकी गहराई झलक रही थी और वह यह कहते-कहते इतने द्रवित-से हो उठे कि मन-ही-मन मैं अमरीकाके भारत-प्रेमी इस वृद्ध संतको प्रणाम किये बिना न रह सका।

"आप आज सन्ध्याको हमारे ही साथ भोजन करेंगे; तबतक आप मेरी भारत-यात्राका वर्णन पढ़िये।" और-उन्होंने मुझे 'वर्ल्ड फोरम'का ग्रीष्मांक, जिसमें उनका यात्रा-वर्णन छपा था, भेंट किया।

फोटो सन्ध्याके भोजनपर ही लिये जायं, यह तय कर विदा लेकर हम बाहर आये तो घड़ीमें साढ़े ग्यारह बजे थे। मार्टिन एवेन्यूकी चौड़ी सड़कपर मैं और शर्माजी धीमी चालसे वापस आ रहे थे। हम मौन थे क्योंकि सोचनेके लिए जैसे बहुत-कुछ था। रह-रहकर मेरे मनमें यूरोपके प्राकृतिक जीवनके अध्यवसायी प्रचारक इस अमरीकी वृद्धके शब्द गूंज रहे थे—"मेरी अभिलाषा है कि मेरी मृत्यु भारतमें ऋषिकेशके पुण्य वातावरणमें हो!"

: २० :

स्विट्जरलैंडमें

पेरिस एक सप्ताह रहकर मैं स्विट्जरलैंडके जूरिक शहरके लिए चल पड़ा। तीन घंटे फ्रांसकी रेल चलकर हमें स्विट्जरलैंडकी सीमामें ले आई। यहांसे रेल चली तो रास्तेके दृश्य देखकर काश्मीर याद आ गया। लगा कि यहां कोई आंखोंपर पट्टी बांधकर छोड़ जाता तो भी मैं समझ जाता कि यह स्विट्जरलैंड है। ऊंची-नीची पहाड़ियां, नाले, छोटी-छोटी नदियां, चारों तरफ हरियाली, हरियालीमेंसे झांकते हुए गांव और उनके बंगले—सब कुछ बड़ा सुहावना लग रहा था। कभी-कभी गांव नजदीक आ जाता और हम गांवके छोटे-छोटे अहातोंमें छोटे-छोटे [illegible] अहाते फूलोंकी क्यारियोंसे दबे, घरकी छतपर [illegible] पर लताएं और फूलोंके गमले—सारी-सारी [illegible] होते थे। चार बज रहे थे और जूरिक [illegible]

आशा है कि भारत यूरोपको शातिके सदेशके साथ-साथ आध्यात्मिकताका भी सदेश देगा। आपके नेता गाधीजीने तो राजनीतिके साथ हिंदुस्तानकी आध्यात्मिकता भी बढाई।"

यहा मै जरा चौका, पर कुछ ऐसी ही बाते मुझसे यहा मिले प्राय हर वृद्धने कही थी। फर्क इतना ही था कि वृद्धाकी बाते तीव्र आलोचनात्मक थी। "जी हा, वह साध्यके लिए साधनकी पवित्रतामे विश्वास करते थे, अत राजनीतिमे उन्होने अहिसाका प्रतिपादन किया।"

"आपके यहा भगवान् बुद्धके बोये अहिसाके बीज भी तो थे।"

"बीजोके तो एक देशसे दूसरे देशमे जानेमे देर नही लगती। कोई न ले जाय तो भी वे उडकर चले जाते है।"

मेरी यह उक्ति सुनकर उक्त महिला मुस्करा पडी। तभी पोर्टरने सूचना दी—"जूरिक आनेवाला है।"

मैने कहा, "यहा पोर्टर सूचना देता है ?"

"जी हा, यह स्विट्जरलैंड है। यहाके लोग बडे ही अतिथि-प्रेमी है और उनकी सुविधाका बहुत ध्यान रखते है।"

स्टेशनके निकट ही बढिया होटल मिल गया। यहा होटलोकी कमी नही है। अकेले जूरिकमे ही इतने होटल है कि छ हजार आदमी एक साथ ठहर सके। दस मिनटमे ही होटलका आदमी स्टेशनसे सामान ले आया और हम नहा-धोकर शहर देखने निकले।

आते ही मैने बिर्चर बेनर क्लीनिककी सचालिकाको फोन कर दिया था और उन्होने मुझे छ बजे क्लीनिक देखने बुलाया था। उनकी इच्छा थी कि मै वहा भोजन भी करू। बिर्चर बेनरका क्लीनिक अपने भोजनसबधी अनुसधानोके लिए प्रसिद्ध है। इन अनुसधानोका असर सारे स्विट्जरलैंडपर पडा है। बिर्चर बेनरने भोजनमे पचास प्रतिशत कच्ची तरकारिया और फल रखनेकी सिफारिश की है। उन्होने सेवको बहुत ही महत्त्वपूर्ण फल माना है। परिणाम यह हुआ है कि आपको स्विट्जरलैडके हर होटलमे भोजनके

साथ कच्ची तरकारिया जरूर मिलेगी और मेवका ताजा रस तो आप कही भी खरीदकर पी सकते है।

मैने टैक्सी ली और सबसे पहले बिर्चर बेनर क्लीनिक गया। वहा मुझे क्लीनिककी सचालिका दरवाजेपर ही मिल गई। उन्हे पहचाननेमे देर नही लगी। उन्होने मुझे घूम-घूमकर क्लीनिक दिखाया। यह चिकित्सालय उनके पिताने स्थापित किया था। उनके देहावसानके बाद यह उनकी सपत्ति हो गई है। इनके पति इस चिकित्सालयके एक डाक्टर है और यहासे निकलनेवाली आहारसबधी जर्मन मासिक पत्रिकाके सपादक है। वह उस समय मौजूद नही थे, अत सचालिकाने चिकित्सालयके एक अन्य डाक्टरसे मेरी बात कराई। ये केवल जर्मन जानते थे, पर सचालिकाने इनके लिए दुभाषिएका काम किया। सीधी बात न होनेके कारण बहुत बात न हो सकी, पर ज्ञात हुआ कि ये उपवास, जलोपचार और भोजनद्वारा ही अधिकतर रोगियोकी चिकित्सा करते है। कभी-कभी किसी रोगीको जरूर दवा भी देते है। कुल पचास रोगी रहते है। तीन डाक्टर है और [illegible] नर्स।

काश्मीरकी डल झील याद आ गई, पर डलसे इसकी तुलना यदि की जाय तो डलको भिक्षुणी कहे तो जूरिक झीलको नवविवाहिता दुलहन कहना पड़ेगा।

दूसरे दिन हमने एक ऐसी बस ली, जिसने हमे दो घंटेमे जूरिक दिखा दिया। जूरिक चार लाखकी आबादीवाला यूरोपका अपनी स्वच्छताके

जूरिक झील

लिए प्रसिद्ध शहर है। शहर झीलके इधर-उधर पहाड़ीपर बसा है, जहा ट्राम, बसें और स्थानीय रेलें जाती है। ये सभी यहा बिजलीसे चलती है। जूरिकमें बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटिया है, इजीनियरिंग तथा प्रसिद्ध मेडिकल कालेज भी है। यहा ससारकी सबसे बड़ी बीमा-कपनिया है, घड़ियोंके

तथा कई तरहके अन्य व्यवसाय हैं। जूरिकके नजदीक बहुत-सी सुंदर जगह हैं, जिनसे आकृष्ट होकर स्विटजरलैंड आनेवाले कम यात्रियोंमेंसे ही कोई जूरिक जरूर जाते हैं।

तीसरे दिनके लिए प्राकृतिक सौंदर्य दिखानेवाली मोटरमें हमने सीट रिजर्व करा ली। छोटी-सी साफ बस थी, अठारह आदमी बैठ चुके थे। दो हम बैठे और बस चल पड़ी।

दो घंटे बाद हमें बर्फ भी दिखाई देने लगी। काश्मीरमें नंगे पर्वतोंकी चोटियोंपर बर्फ देखी थी, पर यहां तो हरे पर्वतोंपर बर्फ थी। बर्फ कभी-कभी हमारे नजदीक आ जाती और आगे तो बर्फ-ही-बर्फ दिखाई देने लगी।

११ बजे हमारी बस रोन नदीके उद्गमके नजदीक फुरकामें रुक गई। यहां आबादी बिल्कुल नहीं है, पर यात्रियोंके लिए एक बड़ेसे कमरेमें बाजार लगा हुआ था, जहां गांवोंमें बनी चीजें, खिलौने, घटियां, बच्चोंके जूते आदि बहुत-सी वस्तुएं बिक रही थीं। कुछ रंग-बिरंगे पत्थर भी थे, जिनके ये पहाड़ बने हैं।

बाजारके पास बैठा एक आदमी एक-एक फ्रैंक (अठारह आने) लेकर बाजारसे लोगोंको बाहरकी ओर ले जा रहा था। हम भी गये। यहां तो बर्फका पहाड़ ही था और बर्फमें यह गुफा! लोग गुफामें जा रहे थे और एक दूसरी गुफासे निकल रहे थे। क्या इस गुफामें जाना ठीक रहेगा?——यह विचार मस्तिष्कमें एक क्षणको ही रुका होगा। जब सब लोग जा रहे हैं तो डर क्या है? गुफा बर्फका ही एक भाग थी। बर्फ तो सफेद होनी चाहिए, पर यह नीली क्यों? शायद बाहर गुफापर चमकती सूर्यकी किरणें इसे नीला ही नहीं, पारदर्शक भी बना रही थीं। नीले रंगकी यह गुफा इतनी सुंदर लग रही थी कि शरीरका रोम-रोम आंखें हो जाना चाहता था। मस्तिष्क मनकी अनुभूतियां गहराईसे पकड़कर अपने अंदर संजोकर रखनेके लिए तीव्रतासे क्रियाशील था। क्या इतना स्पंदित करनेवाली दूसरी अनुभूति भी दुनियामें होगी? आदमी शरीरको जमा देनेवाली बर्फमेंसे गुजर रहा है और आनंद मना रहा है। डेढ़सौ गज चलकर हम एक छोटे गोलाकार कमरेमें आ गये। यहां दो दीपक जल रहे थे। यहां आकर प्रेमी और प्रेमिकाएं एक-दूसरेको चूमने ही लगे। प्यारके स्मृतिचिह्न अंकित करनेका इससे बढ़कर दूसरा उपयुक्त स्थान इस पृथ्वीपर और हो भी कौन-सा सकता था? चारों तरफ शिव-ही-शिव व्याप्त था, सुंदर भी सजग हो उठा था।

मुडकर हम बाहर निकलनेवाली गुफामें चले और एक नूतनिकर आनंदा-
नुभूति लिये बाहर निकले। बाहर लोग बर्फमें खेल रहे थे। इन्होंने गेंद

पर बस चलनेका समय हो गया था, अत खेल छोडकर बसमे आना पडा।

अब तो बस बर्फकी दीवारोके बीच चल रही थी। बर्फ कभी सरसे ऊची हो जाती, कभी नीची। बर्फकी अनेक आकृतिया बनी हुई थी।

बर्फकी यह गुफा समुद्रतलसे केवल २२०० फुटकी ऊचाईपर है। अबतक हमारी बस ऊचाईपर चढती आई थी, उसकी गति बहुत धीमी थी, अब ढाल मिलनेपर उसकी गति तीव्र हो गई। बर्फ कम होने लगी और हरियाली अधिक दिखाई देने लगी। मीलो नीची घाटिया, उनके करार-परसे चलती बस, बडा विचित्र दृश्य था। घाटियोको घेरे गगनचुबी पर्वत घाटियोमे रहनेवाले ग्रामीणोके सजग प्रहरीसे लगते थे। गुफातक पहुचनेके लिए बस सर्पाकार रास्तोसे चढती आई थी, अब वैसे ही रास्तोमे उतरने लगी। ज्यो-ज्यो वह उतरी, घाटीके घर बडे होने लगे और घाटी अधिक स्पष्ट।

कुहासा तो जैसे जादूगर ही बना बैठा था। कभी रास्ता दिखाई देना कठिन हो जाता तो कभी वह हटकर मीलो लबा दृश्य स्पष्ट कर देता, सूर्य चमकने लगता और मै दौडती बससे ही फोटो लेनेके लिए कैमरा ठीक करने लगता। एक-एक दृश्य देखकर मन नाच उठता था। मै उन्हे कैमरेमें बाध लेना चाहता था, पर कैमरेकी इस अनत सौंदर्यके सामने क्या बिसात!

हमारी बसको देखकर हर गुजरती कार और बसमेसे हाथ निकलकर हिलने लगते। रास्तेके गावोमे ग्रामीण बालाए और युवक हमे देखकर मुस्करा-मुस्कराकर हाथ हिलाते, हमारा स्वागत करते। उनकी मधुर सरल फूलो-सी मुस्कान हृदयमे उतर जाती, गैर अपने बन जाते।

यहाके सारे पहाडोको फूलोका बाग कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। हर जगह तेज, हलके, चटकीले रगोके फूल-ही-फूल थे—कोई कमलसे बडे तो कोई सरसोके फूलसे छोटे। हर पडावपर इनके गुलदस्ते बिकते दिखाई
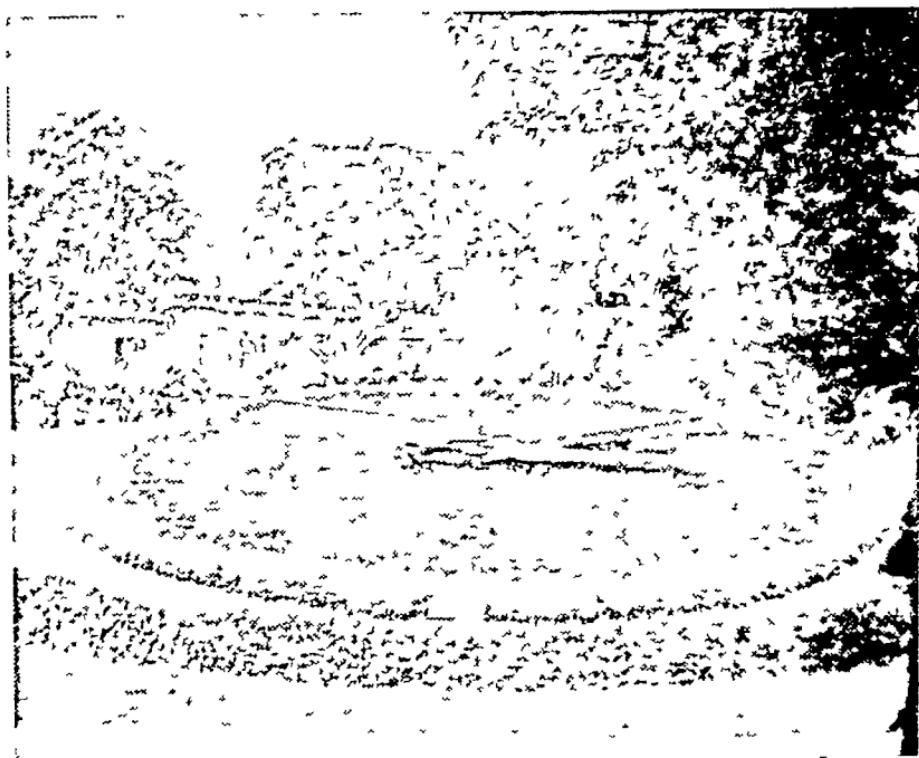
देते और बच्चे हमारी बस रोककर इन फूलोंके गुलदस्ते बेचनेकी कोशिश करते। जहा भी बस रुकती, हमारी बसकी पथ-प्रदर्शिका पहाड़ियोंपर दौड़ती चढ जाती, फूल चुन-चुनकर गुलदस्ते बनानेमें लग जाती और जब हम बसमें चलते तो कभी किसीको और कभी किसीको अपनी तरह हँसते-मुस्कराते फूलोंके गुलदस्ते भेंट करती।

: २१ :

सुंदर झीलवाला नगर जिनेवा

जूरिकसे सुबह दस बजे चलकर हम लोग—मैं और मेरे मित्र श्री-नारायणस्वरूप शर्मा—शामको पाच बजे जिनेवा पहुच गये। स्टेशनपर एक बोर्ड लगा था, जिसमे जिनेवाके सभी होटलोके नाम थे और वे प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणीमे विभक्त थे। हर विभागका एक दिनका मूल्य भी लिखा था। हमने अपना सामान स्टेशनके क्लाकरूममे रक्खा और कुछ होटलोके नाम लिखकर स्थान देखने निकले। स्टेशनके सामनेकी सडक सीधे जिनेवा झीलकी ओर जा रही थी और उसपर इस समय चहल-पहल भी खूब थी। पाच मिनटमे ही हम जिनेवा झीलके किनारे पहुच गये। यह झील कोई साठ मील लबी है और जिनेवा शहरके निकट यह केवल एक फर्लांग चौडी है। शहर इसकी दाई ओर बसा है। झीलके दोनो किनारोको एक करनेके लिए जगह-जगह पुल है। अधिकाश होटल झीलके किनारे ही है। हमने कई होटल देखे। सभीके कमरे बडे करीनेसे सजे थे—फर्शपर कालीन, दरवाजो और खिडकियोपर रेशमी परदे, दूधके फेन-सरीखे धवल बिछावन, आकर्षक फर्नीचर। प्रथम श्रेणीके होटलोके कमरोमे टेलीफोनके साथ रेडियो भी था। हमने एक अच्छे होटलमे झीलकी तरफका एक कमरा चुना और स्टेशनसे सामान मगाकर शहर घूमने निकले। इस वक्त सूर्यास्त हो चुका था और झीलके चारो ओरका सारा पथ और इमारते बिजलीकी रोशनीसे जगमगा रही थी। झीलके चारो ओर बल्बकी दुहरी झालरे थी, जिनकी रग-बिरगी रोशनी बडी ही सुदर लग रही थी। दूसरे किनारेके निकट झीलमे एक चारसौ फुट ऊचा फुहारा उड रहा था,

जैसे झीलका ही वह अंग हो। अगल-बगलसे उसपर उज्ज्वल प्रकाश डाला जा रहा था, जो फुहारेके जलपर पड़कर इन्द्रधनुषी छटा दिखा रहा था।

स्विट्जरलैंड और उसमें भी खास तौरसे जिनेवा दुनियामें अपनी घडियोंके लिए प्रसिद्ध है। जितनी घडीकी कंपनियोंके नाम आपने सुन रक्खे हैं उन सबकी दुकानें आपको इस झीलके किनारेके रास्तोंपर मिल जायगी। यात्री जिनेवामें ही अपनी घडी खरीदनेका कार्य-क्रम बनाते हैं।

जिनेवाके एक पार्कमें फूलोंसे बनी घडी, जो स्विट्जरलैंडके घडियोंका देश होनेकी प्रतीक है। यह घडी बहुत ठीक समय बताती है।

हाथ और जेबघडीके अलावा यहां तरह-तरहकी टेबुल वाच और दीवार-घडियां मिलती हैं। इनमें इतनी विभिन्नता और वैचित्र्य होता है कि आप देखते ही रह जायं।

बड़ी देरतक घूम-फिरकर हम लोग विश्रामके लिए अपने होटल पहुंचे और दूसरे दिन जिनेवा देखनेका प्रोग्राम बनाया।

सुबह दस बजे हम लोग संसारप्रसिद्ध यू० एन० ओ०का दफ्तर देखने पहुंचे। वहां तो भीड़ ही लगी थी। जिनेवा आये हुए दुनियाके हर कोनेके व्यक्ति वहां पहुंचे हुए थे। इस इमारतको दिखानेका भी बहुत बढ़िया इंतजाम था। दस-दस मिनटपर गाइड २०—२५ एक भाषा-भाषी दर्शकों-को साथ लेकर इमारत और उसके कमरे दिखाने ले जाते थे।

हमारे पहुंचते ही फाटकपर एक व्यक्तिने हमसे पूछा, "अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इटालियन?" वह हर यात्रीको यू० एन० ओ०के संबंधमें जानकारी करानेवाली पुस्तिका दे रहा था।

शर्माजीने कहा—"हिंदी प्लीज।" (हिन्दीमें दीजिए।)

"नो हिंदी प्लीज।" (हिन्दीमें नहीं है।)

सैकडो कमरे है, दर्जनो बडे हाल। प्रधान हाल भी देखा, जहा यू० एन० ओ० की मीटिंग होती है। इसकी दीवारे-विख्यात कलाकारोने अपने चित्रोमे सुसज्जित की है। एक ओर युद्धकी विभीपिकासे पीडित मानव है, तोप-तलवारे टूटी पडी है और उनके बीच मानवता दबकर कराह रही है। दूसरी ओर शातिका सितारा उदित हो रहा है, जिसे स्त्री, पुरुप, बच्चे आशाभरी निगाहोसे निहार रहे है। सारा वातावरण बडा कलापूर्ण तथा आशादायक है। हर सीटपर रिसीवर लगे है, जिनके द्वारा भापण चाहे जिस भापामे हो रहा हो—इग्लिश, फ्रेंच, रशियन, जर्मन और इटालियन इन पाचमेसे किसी भी एक भापामे—सुना जा सकता है। बात यह है कि भापणका अनुवाद भापणकर्ताके साथ-साथ होता और प्रसारित किया जाता है।

यू० एन० ओ०के दफ्तरके निकट ही वर्ल्ड लेबर आर्गनाइजेशनका दफ्तर है। यह भी कम बडा नही है। यहा मजदूरोकी समस्यासे सबधित एक बहुत बडा पुस्तकालय भी है। यह सस्था मजदूरोसे सबद्ध विशेप कानूनोका अध्ययन करनेके लिए विद्यार्थियोको छात्र-वृत्ति भी देती है।

इन दोनो सस्थाओको देखते हमे शाम हो गई। सामने ही झीलका किनारा था और किनारेके निकट सुदर सडक। हम पैदल ही शहरकी ओर चले। झीलके किनारे-किनारे बहुतसे चायघर है, जहा इनके बागमे लोग बैठे चाय पी रहे थे और बच्चे वही बागमे किरायपर मिलनेवाली घोडेकी गाडियोसे खेल रहे थे। यहा बहुतसे घाट भी है, जहासे मोटर-बोटपर घूमने जाया जा सकता है और कई घाटोसे कुछ बडे जहाज भी छूटते है, जो झीलके किनारेके स्थानोकी यात्रा एक और दो दिनमे कराते है। हमने भी मोटरबोटकी सवारी की। मोटरबोट उस पार हमे जिनेवा स्विमिंग क्लब ले गई, जहा सैकडो जवान लडके-लडकिया तैरनेकी विशेप पोशाक पहने नहा रहे थे, तैर रहे थे, ऊपरसे झीलमे कूद रहे थे और नाव खेनेका अभ्यास कर रहे थे। सारे वातावरणमे बडी चुहल थी, जैसे खुद जवानीने यह अखाडा जमाया हो।

यहां हमने नाव छोड़ दी और हम घाटपर कुछ देर बैठे नानारंगोंका दृश्य देखते रहे। इस समय तो सैकड़ों नावें झीलमें चल रही थीं। आगे बढ़े तो एक लंबी चहारदीवारीका अहाता आया, जिसके अंदर बहुतसे घर थे, बड़ा-सा फाटक। शर्माजीने एक राहीसे पूछा—

"यह क्या है?" सौभाग्यवश वह अंग्रेजी जानता था। बोला "जिनेवाका सबसे सस्ता होटल।" और जरा मुस्कराकर "क्यों, इसमें प्रवेश पानेका उपाय जानना चाहते हैं?"

हमने कोई जवाब नहीं दिया तो वह फिर बोला, "मेरा तो कहना है, किसीका सिर तोड़ दीजिये, प्रवेश मिल जायगा।"

"तो यह जेल है। महाशय, हम आपका या और किसीका सिर नहीं तोड़ेंगे, चिंता न करें।"

सैकडो कमरे है, दर्जनो बडे हाल। प्रधान हाल भी देखा, जहा यू० एन० ओ० की मीटिंग होती है। इसकी दीवारें-विख्यात कलाकारोने अपने चित्रोमे सुसज्जित की है। एक ओर युद्धकी विभीषिकामे पीडित मानव है, तोप-तलवारे टूटी पडी है और उनके बीच मानवता दबकर कराह रही है। दूसरी ओर शातिका सितारा उदित हो रहा है, जिसे स्त्री, पुरुष, बच्चे आशाभरी निगाहोसे निहार रहे है। सारा वातावरण बडा कलापूर्ण तथा आशादायक है। हर सीटपर रिसीवर लगे है, जिनके द्वारा भाषण चाहे जिस भाषामे हो रहा हो—इग्लिश, फ्रेंच, रशियन, जर्मन और इटालियन इन पाचमेसे किसी भी एक भाषामे—सुना जा सकता है। बात यह है कि भाषणका अनुवाद भाषणकर्ताके साथ-साथ होता और प्रसारित किया जाता है।

यू० एन० ओ०के दफ्तरके निकट ही वर्ल्ड लेबर आर्गनाइजेशनका दफ्तर है। यह भी कम बडा नही है। यहा मजदूरोकी समस्यासे सबधित एक बहुत बडा पुस्तकालय भी है। यह सस्था मजदूरोमे सबद्ध विशेष कानूनोका अध्ययन करनेके लिए विद्यार्थियोको छात्र-वृत्ति भी देती है।

इन दोनो सस्थाओको देखते हमे शाम हो गई। सामने ही झीलका किनारा था और किनारेके निकट सुदर सडक। हम पैदल ही शहरकी ओर चले। झीलके किनारे-किनारे बहुतसे चायघर है, जहा इनके बागमे लोग बैठे चाय पी रहे थे और बच्चे वही बागमे किरायेपर मिलनेवाली घोडेकी गाडियोसे खेल रहे थे। यहा बहुतसे घाट भी है, जहासे मोटर-बोटपर घूमने जाया जा सकता है और कई घाटोमे कुछ बडे जहाज भी छूटते है, जो झीलके किनारेके स्थानोकी यात्रा एक और दो दिनमे कराते है। हमने भी मोटरबोटकी सवारी की। मोटरबोट उस पार हमे जिनेवा स्विमिंग क्लब ले गई, जहा सैकडो जवान लडके-लडकिया तैरनेकी विशेष पोशाक पहने नहा रहे थे, तैर रहे थे, ऊपरसे झीलमे कूद रहे थे और नाव खेनेका अभ्यास कर रहे थे। सारे वातावरणमे बडी चुहल थी, जैसे खुद जवानीने यह अखाडा जमाया हो।

यहा हमने नाव छोड दी और हम घाटपर कुछ देर बैठे नौकारोहणका दृश्य देखते रहे। इस समय तो सैकडो नावे झीलमे दौड रही थी। आगे बढे तो एक लबी चहारदीवारीका अहाता आया, जिसके अदर बहुतसे घर थे, बडा-सा फाटक। शर्माजीने एक राहीसे पूछा—

"यह क्या है ?" सौभाग्यवश वह अग्रेजी जानता था। बोला, "जिनेवाका सबसे सस्ता होटल।" और राही मुस्कराया, "क्यो, इसमे प्रवेश पानेका उपाय जानना चाहते है ?"

हमने कोई जवाब नही दिया तो वह खुद बोला, "मेरा छोडकर किसीका सिर तोड दीजिये, प्रवेश मिल जायगा।"

"तो यह जेल है। महाशय, हम आपका या और किसीका सिर नही तोडेगे, चिता न करे।"

राहीने हमसे हाथ मिलाया और आगे बढ गया। आगे एक घाटका साइनबोर्ड देखकर हम ठिठक गये। बोर्डपर हिंदीमे लिखा था—"नदीकी सवारी।" इसे देखकर मेरे आश्चर्यका ठिकाना नही था और शर्माजीकी खुशीका।

"मोदीजी, मैने कहा नही था कि हिंदी बढ रही है।"

मै इस बोर्डका फोटो लेने लगा तो किसीने मेरे कधेपर हाथ रख दिया। बोला, "आप इस बोर्डका फोटो क्यो ले रहे है ?"

"क्योकि इसपर हमारी राष्ट्र-भाषा लिखी है।"

"आप पाकिस्तानी है ?"

"जी नही, हिंदुस्तानी। पर आप यह क्यो पूछ रहे है ?"
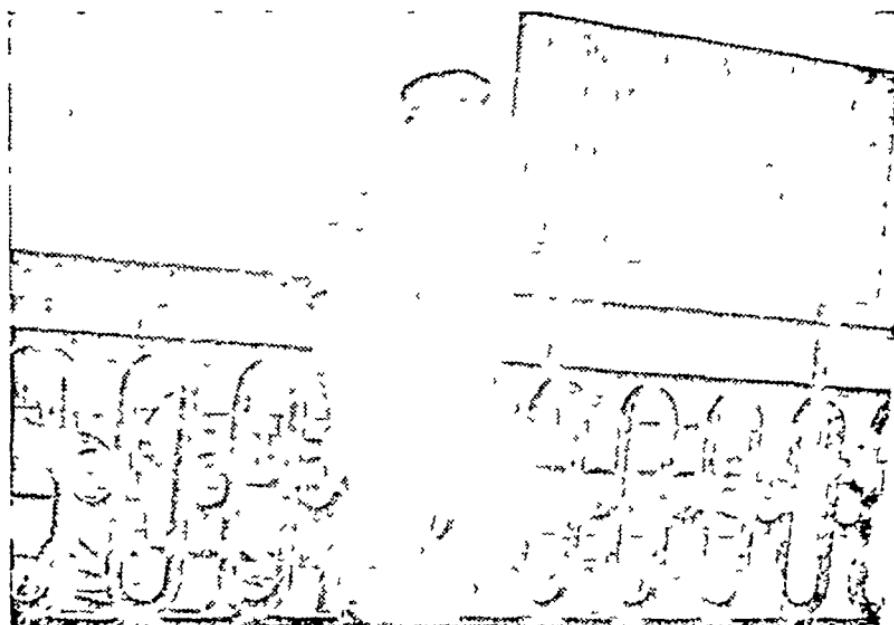
"यह बोर्ड मेरे घाटका है।"

"आप हिंदी जानते है ?"

उसने अपनी जेबमे एक कार्ड निकाला और उसपर कुछ लिखकर बोला, "पढिये।" नागरी अक्षरोमे लिखा था—'जाकी'।

"तो आप हिंदी जानते है ? कहा पढी ?"

"मैं बबईमे रहा हू। वहा मेरे मित्र हैं और उनके प्रेमकी स्मृतिस्वरूप मैंने अपने बोर्डपर भी हिंदी लिखी है।" अब तो वह हमे मुफ्तमे झील घुमानेके लिए तैयार हो गया। हमने अभी-अभी झीलकी सैर की थी, अत उसे धन्यवाद दिया और आगे बढे।

जिनेवा झीलके किनारे एक घाटका साइनबोर्ड— इसपर हिंदीमें 'नदीकी सवार' (सवारी) लिखा है।

झीलके पासकी इमारतोमे जो सबसे ज्यादा खूबसूरत है वह है एक इजीनियरकी कब्रपर बना एक छोटा-सा मकबरा। जिनेवाको खूबसूरत बनानेमे इस इजीनियरका बहुत बडा हाथ रहा है। बहुत-सी सडके और यहाकी अनेक प्रसिद्ध इमारते इस इजीनियरने ही बनाई थी। इस कार्यमे उसने धन भी बहुत कमाया। वह नि सतान था और अपनी यह कब्र वह स्वय बनवा गया था। लोगोको उम्मेद थी कि वह अपना सारा धन जिनेवा-

ी सार्वजनिक सस्थाओको दे जायगा, पर उसके मरनेके वाद जव उसकी
सीयत पढी गई तो पता चला कि उसने अपना सारा धन अपने दूरके
बधियोको दे दिया है। वसीयतमे यह भी लिखा था कि मुझे मेरी बनाई
ुई कब्रमे दफनाया जाय और मेरा सिर झीलकी ओर रहे। लोगोने सिरका
र्थ सिर ही लिया और इस प्रकार गाडा कि कब्रकी छतपर बना उसका
ुतला झीलकी ओर नही, उसकी विपरीत दिशाकी ओर देख रहा है।
दला लेनेके जनताके भी ढग निराले है!

: २२ :

अंगूरवालोंका मेला

जिनेवासे मैं माट्रे एक मित्रसे मिलने रेलमें जा रहा था। दिनमें ही यात्रा की, जिससे रास्तेके दृश्य देखे जा सकें। जिनेवासे माट्रेका दो घंटेका रास्ता था। ज्यों-ज्यों जिनेवा दूर होता गया, आबादीकी जगहें कम होने लगीं और पर्वत-शृंखलाएं और उपत्यकाएं बढने लगीं। एकाएक हमारी गाडी खेतोंमेंसे गुजरने लगी—हरे-हरे खेत, सुविस्तृत खेत! आंखें जहांतक देख सकती थीं वहांतक खेत-ही खेत! खेतोंमें एकरूपता ऐसी थी, जैसे सारी खेती किसी एक व्यक्तिने ही की हो। मुझे यह खेत मकोयके-से लग रहे थे। डेढ-दो हाथ ऊंचे पौधे, पत्तियां खूब हरी। पर स्विट्जरलैंडमें मकोय कहां! पूछनेपर पता चला कि ये अंगूरके बाग हैं और स्विट्जरलैंड-में ये बाग अपने स्वादिष्ट अंगूरोंके लिए प्रसिद्ध हैं। यहांकी सुनहरी शराब बहुत ही स्वादिष्ट समझी जाती है। तभी ट्रेन खेतोंके बिल्कुल नजदीक आ गई।

एकाएक एक पहाडी आई और उसकी ओट दूर होते ही जिनेवा झील प्रकट हुई। वायु मंद-मंद गतिसे बह रही थी। झीलपर उठती निर्मल स्फटिक-सी तरंगोंसे सूर्यकी किरणें प्रमुदित खिलवाड कर रहीं थीं। इतना सुंदर जल, इतनी सुंदर झील देखकर तृप्ति ही नहीं होती थी। पानीपर बहती इक्की-दुक्की नावें झील सुंदरीके मुखपर तिल-सी प्रतीत होती थीं।

झीलका दायां किनारा आया और किनारेसे ऊपर ऊंचाईकी ओर उठते हुए मीलों लंबे अंगूरके खेत-ही-खेत थे। हमारी बिजलीसे चलती ट्रेन

विना ठहरे सुदर झीलको छोडती, तेजीसे ऊचाईकी ओर भागी जा रही थी और खेतके सारे अगूरके पौधे झीलकी ओर, झीलतक पहुचनेको आतुर दौडे जा रहे थे। प्राकृतिक सौदर्यमे इतना आकर्षण था कि जड चेतन हो उठा।

तभी गाडी धीरे-धीरे रुकी और लोजान आया। ऐसी भीड तो किसी छोटे स्टेशनपर नही होती—सैकडो युवक-युवतिया, एक-सी पोशाक पहने, सैकडो विद्यार्थी, स्काउट, अपनी माताओके साथ गुडियोकी तरह सजे बच्चे। ट्रेनके रुकते ही सभी धीरे-धीरे गाडीमे सवार हुए। बहुतसे हमारे डब्बेमे आये। मैंने अपने निकट बैठे एक युवकसे पूछा, "यहा इतनी भीड क्यो है ?" वह मेरी बात समझ नही सका। मेरे पुन पूछनेपर वह उठा और डब्बेमे कई व्यक्तियोसे बात करनेके पश्चात् एक युवतीको मेरे निकट बुला लाया। उसे अपनी जगहपर बिठाते हुए मुझे इशारा किया कि "इनसे पूछो।" मैंने युवतीसे वही प्रश्न किया।

"महाशय, अगला स्टेशन वेवे है, वहा यह सारी भीड उतर जायगी। वहा मेला हो रहा है।"

अब समझमे आया कि मेरे पडोसी युवकने स्वय अग्रेजी न जाननेके कारण अग्रेजी जाननेवाली लडकीसे मेरा परिचय कराकर मेरी सहायता की है।

"मेला ! कैसा मेला ?"
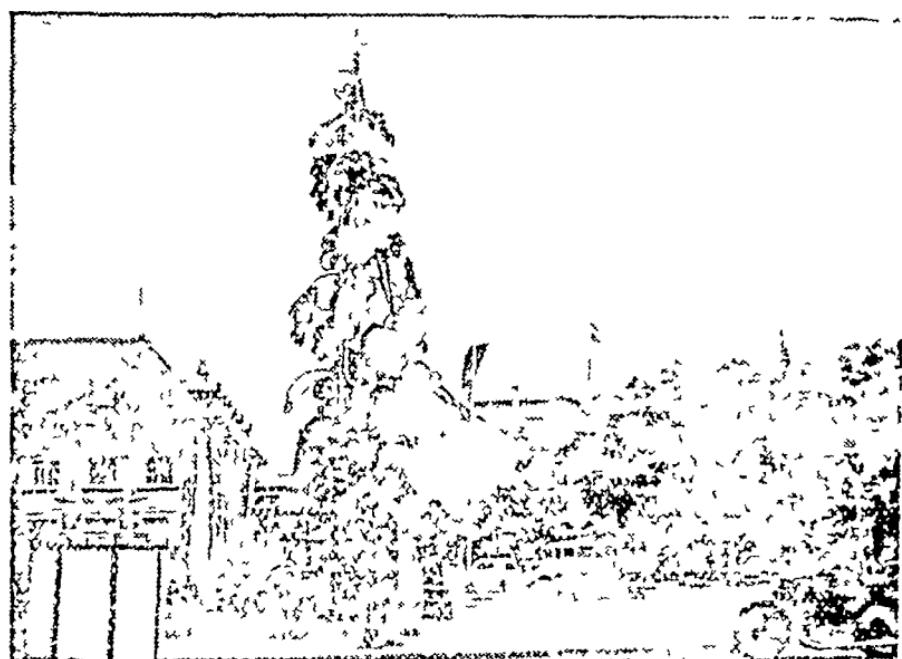
"यह अगूरवालोका मेला है। इस प्रदेशमे अगूर बहुत होते है और अगूर पैदा करनेवाले वेवेमे हर पच्चीस वर्षपर अगूर-पक्ष मनानेके लिए मेला लगाते है।"

"ऐसे कितने मेले हो चुके है ?"

"यह तीसरा है। आप पर्यटक प्रतीत होते है। मै आपसे प्रार्थना करूगी कि आप यह मेला अवश्य देखे। आप मेला देखकर निश्चय ही प्रसन्न होगे।"

मैंने इस सूचना और सलाहके लिए उसे धन्यवाद दिया। तभी वेवे आ गया और भीड उतर पडी।

माट्रे पहुचनेपर ज्ञात हुआ कि हमे मेला दिखानेका कार्यक्रम मेरे मित्रने पहलेसे ही बना रक्खा है। दूसरे दिन आठ बजे हम वेवे पहुचे। छोटा-सा साफ-सुथरा गाव, सीधी पक्की सडके, पक्के मकान। इस समय तो सारा
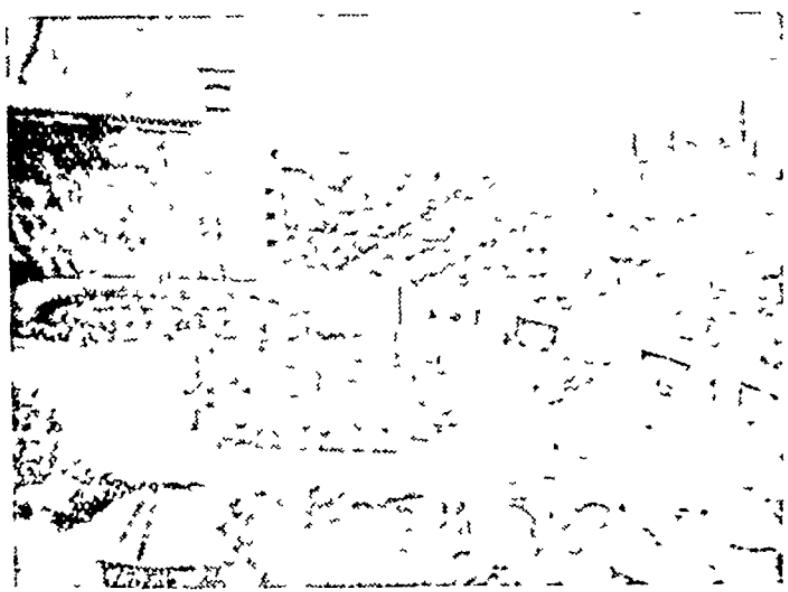
वेवे गांवका अंगूरकी लतासे सजा एक चौराहा

गाव, हर सडक और प्रत्येक मकान फूल-पत्तो, झडियो तथा वदनवारोसे सजाया गया था—सजानेमे अगूरोको प्रधानता दी गई थी। गावके चौराहेपर एक विस्तृत लता एक खभेपर चढी हुई थी, जिसके बडे-बडे पत्ते और फुटवाल जितने बडे-बडे अगूर बिलकुल स्वाभाविक रगके थे। मकान-के दरवाजोपर अगूरके गुच्छे लटक रहे थे। हर दुकानकी 'शो विंडो'मे अगूर थे, जिनकी ताजगी और रग देखते ही बनता था। पता नहीं,

वे नीलमके बने नकली अगूर थे या डालसे तोडे असली, पर लगते असली ही थे।

मेलेकी जगह पहुचनेमे हमे कठिनाई नही हुई। भीड हमे स्वय वहा ले गई। मेला देखनेके लिए जिनेवा झीलके किनारे एक स्टेडियम बना था, जिसमे पचास हजार आदमी बैठ सकते थे। स्टेडियममे प्रवेश पानेके लिए हमने टिकट खरीदे और अपनी जगहपर जा बैठे। स्टेडियम रगमचके

अगूरवालोका मेलेका स्टेडियम

इर्द-गिर्द लोहे और काठकी सीढियोका अडाकार बना था। इन सीढियोका उत्तरी और दक्षिणी भाग रगमचका ही भाग था। उत्तरी भागके निकट दोसौ व्यक्तियोका आर्केस्ट्रा था। धीरे-धीरे स्टेडियम खचाखच भर गया और नौ बजे खेल शुरू हुआ। एक ओरसे इस प्रातके हर गावके प्रतिनिधि निकले। उनके हाथोमे अपने-अपने गावके रग-बिरगे झडे थे। उनके पीछे यहाकी राष्ट्रीय पोशाकमे लगभग ढाईसौ महिलाए थी। पीछे वेवेके मेयर एक शानदार घोडेपर सवार थे और उनके पीछे थे बहुत-से घुडसवार

सिपाही। गावोके प्रतिनिधि अपने झडे ऊचे किये ऊपर स्टेडियमपर चढ गये और चारो तरफ फैल गये। स्टेडियममे सौदर्यकी एक नई छटा फैल गई।

रगमचपर ऋतुओका नृत्य हुआ। पहले शरद् ऋतु आई। दो-ढाई-सौ व्यक्ति इसमे भाग ले रहे थे। उनके टोपका रग सफेद था, जो हिमका प्रतीक था, उसके नीचेका भाग नीला था और उसके नीचेका पहाडोंके रग-का।

इस ऋतुके विभिन्न दृश्य भी दिखाये गये—घोडे-गाडियोसे और पैदल यात्रा करनेवाले यात्री, कटते जगल, चीरी जाती हुई लकडिया। पुरुषोने टगुलिया लेकर नृत्य किया और आरा चलाते समय गाने गाये।

शरद्के बाद वसत आया। सूखे वृक्ष हरे हो गये। वसतके आगमनकी सूचना देनेके लिए फूलोसे भरी टोकरिया लिये, फूलोसे रग-बिरगे वस्त्र पहने लडकिया आई। उनके पीछे था वसतकी रानीका रथ—जो फूलो-मे सजा था। वसतकी रानी पीत रेशमी वस्त्रका परिधान पहने थी। उनके रथके चारो ओर वैसे ही वस्त्र पहने महिलाओकी टोली चल रही थी।

अब अगूरकी बेले खेतोमे दिखाई देने लगी। धीरे-धीरे बेले बढी, उनमे अगूर आये।

फिर ग्रीष्म ऋतुकी रानीका आगमन हुआ। उनके और उनकी परिचारिकाओंके वस्त्र गुलाबी थे। उनका चार बैलोका रथ गुलाबी और सफेद फूलोंसे सजा था।

स्त्रिया अगूर चुनने लगी। उन्हे ओखलीमे कूटकर रस निकाला गया और टकीमे भरा गया। बैलगाडिया वह रस लादकर गावोकी ओर चली और पीछे-पीछे खेतोमे काम करनेवाला प्रमुदित जनसमूह।

गाये खेतोमे चरने आ गईं। उन्हे सभालनेवाले लाठी लिये गा रहे थे। भेड़ोके रेवड आये, जिन्हे रखवालोके साथ दौड-दौडकर भोकते हुए कुत्ते सभाल रहे थे।

एक तरफसे हजारोकी तादादमे कबूतर छूटे, जो सारे स्टेडियमपर छा गये। जिधरसे वे निकले, उन्होने सूरजको ओटमे कर लिया।

गावमे लोग पहुच गये। वहा खेतसे आये गेहू पीसे गये। पुरानी पत्थर-की चक्की थी। अगूरसे शराब बनी।

अगूरवालोके मेलेके कुछ अभिनेता

डेरीका दृश्य उपस्थित हुआ। गाये दुही गई। छेना बना। दूध और छेना टकियोमे भरा गया और उन्हे बैलगाडियोपर लादा गया।

इस प्रकार सारी ऋतुए और उनके दृश्य, गावोंके जन-जीवनपर पडनेवाला उनका प्रभाव, उस समय होनेवाले कार्यकलाप आदि प्रस्तुत किये गए। सारे दृश्य सत्रहवी सदीके थे। आज सारी कार्य-पद्धति वदल गई है, पर अतीतकी स्मृतियोको सुरक्षित रखनेके लिए लाखो रुपये और हजारो स्त्री-पुरुषोका श्रम इस मेलेमे लगता है। केवल रगमचपर भाग लेनेवाले एक हजार स्त्री-पुरुप और वच्चे थे। इस मेलेकी रचनामे पता नही, कितने हजार व्यक्ति उल्लासपूर्वक लगे होगे।

वारह वजे मेला समाप्त हुआ। वाहर अभिनेताओ और अभिनेत्रियोको लोगोने घेर लिया। जिस वेशमे उन्होने मेलेमे भाग लिया था उसी वेशमे ये अपने घर जा रहे थे। जिधरसे ये निकले, एक जलूस-सा बन गया। कैमरेवालोने इनका रास्ता जगह-जगह रोक लिया और लोगोने हजारो चित्र उतारे। कुछ मैने भी लिये।

शामको हम माट्रेमे झीलके किनारे एक भोजनालयमे वैठे भोजन कर रहे थे। अधेरा हो गया था, तभी दूर, बहुत दूर, आतिशवाजी छूटनेके दृश्य दिखाई देने लगे। भोजनालयकी सभी परिचारिकाए वाहर निकल-निकलकर आतिशवाजी देखने लगी। दो मील दूर यहासे वेवे था, जहा यह आतिशवाजी छूट रही थी।

वेवेमे सुवह हमने उल्लासपूर्ण वातावरणमे अगूरवालोका मेला देखा था। यह आतिशवाजी देखकर लगा, वेवे अपनी खुशीमे अव भी हँस रहा है।

: २३ :

स्विट्जरलैंडका गौरव

माट्रेमे हमारे साथ डाक्टर गोपाल कृष्ण सर्राफ आ मिले। उनकी इच्छा 'मैंटरहार्न' जानेकी थी। हम तो वहा जानेको उत्सुक थे ही अत मैंटरहार्न जानेका पूरा बानक बन गया। दूसरे दिन सुबह ही हमने वहा जानेका प्रोग्राम बनाया।

असलमे स्विट्जरलैंडमे सबसे ऊचा स्थान जहातक जाया जा सकता है 'ग्रोनरग्राड' है। यहाके लिए गाडी माट्रेसे जाती है। माट्रेसे जरमाटतक बडी लाइन है। आगे दो डब्बोकी पहाडी गाडी तीन पटरियोपर चलकर जाती है। गाडीसे ही दृश्य देखनेको मिलते है। काश वहातक बस जाती होती! पर ऐसी सडकोपर बसका चलना मुश्किल है। रेलकी एक बीचकी पटरी और बीचका पहिया दातीवाला होनेके कारण गाडीके रास्तेमे फिसलनेका डर नही रहता, अत रेलगाडीसे यह सीधी चढाई सभव हो सकती है।
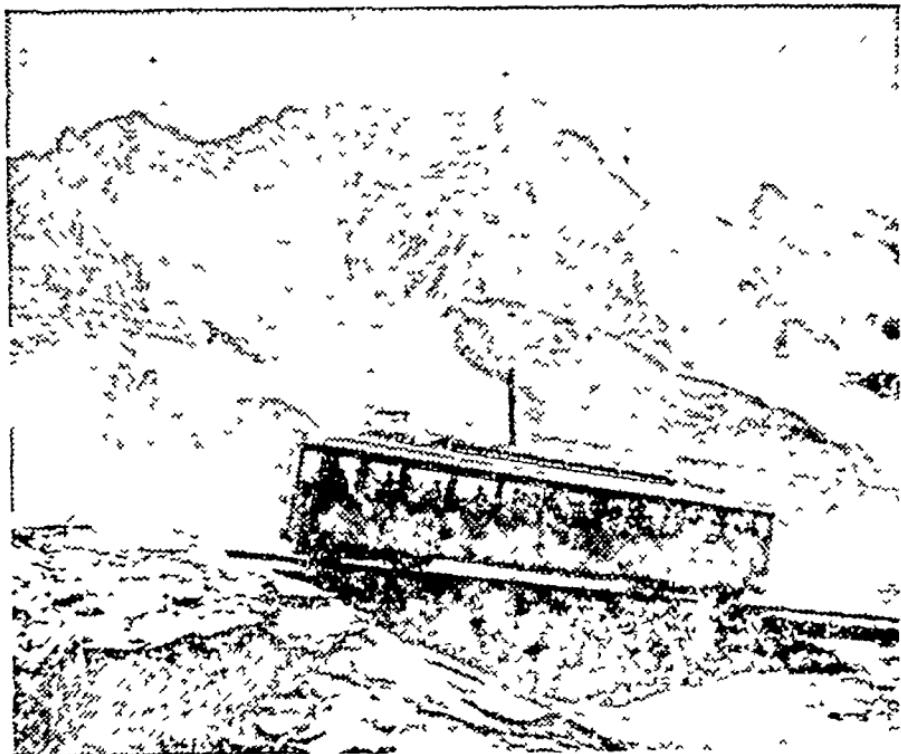
जरमाटतक तो दृश्य जैसे हम पहले देख चुके थे करीब-करीब वैसे ही रहे, फिर भी हम इस छोटी लाइनपर कुछ नवीनकी कल्पना कर रहे थे, क्योकि हर जगह हमे कोई-न-कोई रोमाचकारी दृश्य अवश्य देखनेको मिला है, अत यह आजकी यात्रा उसके विरुद्ध कैसे जाती!

जरमाटसे जो पहाडी गाडी चली तो दृश्य अधिक भव्य हो गये। कुछ ना छोटे-छोटे डब्बोवाली इस गाडीकी सवारी ही बडी अच्छी लग रही थी। उसमे हम अपनेको अधिकारी महसूस कर रहे थे। धीमी वह इतनी थी कि चलती गाडीपरसे आसानीसे उतरकर फिर चढा जा सकता था।

जरमाट छोडते ही बरफ दिखाई देने लगी। आसमानकी ओर जाती

हुई, पहाडकी चोटिया सीधी फिर उनकी शृखलाए और अनत शृखलाए जैसे चुनौती-सी दे रही हो कि हमे गिन लो तो जाने। देखो हमे कितना देखोगे।
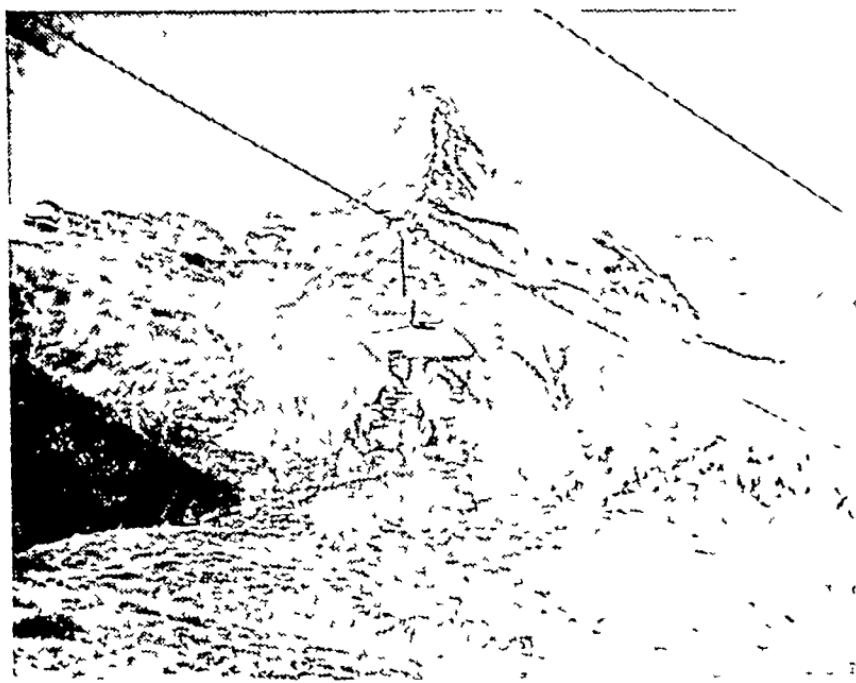
जब हम ग्रोनरग्राड पहुचे तो ये चोटिया हमे अपनी-सी लगने लगी--सगी-सी, जैसे हम इन्हे देखने नही, इनसे मिलने आये हो। चोटियोके नीचे मक्खन-सी बरफ फैली थी, जैसे वह चलकर जरा विश्रामके लिए ठहर गई हो।

मैटरहार्न जाती हुई एक डब्बेकी गाडी

ग्रोनरग्राडकी ओर हम बढे तो हमारे और इन पहाडोके बीच मीलो लबी-चौडी एक खाई थी। झाकनेपर वहा भी बरफ-ही-बरफ दिखाई दे रही थी। ऊपरसे बरफकी फूइया गिर रही थी। नीचेकी तरफ देखने-से जी अघा नही रहा था। कितना आकर्षक निमत्रण था! जो चाहता

था कि अभी नीचे कूद पड़ू, उड चलू। वहातक पहुचनेमे कितना गतिपूर्ण अनुभव होगा और उस सौदर्यके निकट पहुचनेपर कितनी रसमय अनुभूति होगी। भावनाए इतनी तीव्र थी कि लग रहा था कि मै शरीरी नही, भावनाए हू, मेरे चारो तरफ, आगे, पीछे, नीचे भावना और कल्पना दोनो ही साकार बनी बैठी थी। हम वहासे आगे पगडडीसे दूसरे पहाड़-

मैटरहार्न शृग

पर गये। सामने तो रास्ता भी बरफपर ही था, जो मैटरहार्नकी ओर जाता था। सामने मैटरहार्न खडा था। कुछ क्षणोके लिए बादल फटे और ऊचाईपर अकेला खडा मैटरहार्न चादीकी तरह चमकने लगा। कितना भव्य, कितना विशाल, कितना स्थिर जैसे युग-युगसे हमारी प्रतीक्षा कर रहा हो। लगा कि दौडकर उसके पास पहुच जाय और अकमे भर ले

पर मैंटरहार्न हमसे बहुत दूर था। हम उसकी ओर चले भी, दौड़े भी, पर जितना ही हम उसके निकट पहुचे वह हमसे दूर भागता गया। शिवकी जटापर सुशोभित चद्रकी तरह वह बहुत ही कमनीय लग रहा था। हम थोड़ी देरमे समझ गये, मैंटरहार्न यो हमारे हाथमे आनेवाला नही है। हम उसे

'कुम' होटलके सामनेके मैदानमें दूरतकके
पहाड़ोंको देखनेके लिए रखी हुई दूरबीन

रुककर देखने लगे। उसे चलते-चलते देखनेसे रुककर देखना अधिक अच्छा लगा। देखकर तृप्ति ही नही होती थी, पैर आगे बढनेको जोर मार रहे थे। पैरो और आखोमे लडाई-सी होने लगी। आखे देख-देखकर अघाती नही थी और पैर इस बरफकी पगडडीपर चलकर अपनी गतिशीलताके गौरवका अनुभव करना चाहते थे। मन विशालमे विशालतर हो जाना चाहता था। कितना विराट् रूप उसके सामने था, जैसे कल्पना-विशालने इस विराट्की कल्पना की हो।

पर मनुष्यकी महत्त्वाकाक्षा भी कितनी विशाल है ! वह किसीको सिर

उठाये देरतक देख नही सकता। उसे पददलित करनेकी उसकी इच्छा हो ही उठती है। मैटरहार्न शृगकी इतनी ऊची अनीपर सन् १८५२ से १८६५ तक पहुचनेके अनेक अभियान हुए और इस १४७४० फुट ऊची चोटीपर सन् १८६५ की १४ जुलाईको विपर नामक एक अग्रेज पहुच ही गया। अपने निकट ही स्विस आल्प्सकी लगभग १२६०० फुट ऊची पचास चोटियोके बीच खडा मैटरहार्न बडा गौरवशाली लगता है।

पलोमे दो घटेका समय निकल गया, एक घटेमे वापसी गाडी जायगी—घडीने इस धक्केके साथ इस चोटीपर बने एकमात्र होटल 'कुम'की ओर हमे मोड दिया। होटलके सामनेके मैदानमे लोहेकी तिपाईपर एक बडी दूरबीन लगी थी, जिसमेसे कुछ यात्री दूरके दृश्य देख रहे थे। जब मै उसके निकट पहुचा तो खटकी आवाज हुई और देखनेवाले दूरबीनमे दूर हट गये। दूरबीनसे दिखाई देना बद हो गया था। मैने दूरबीनकी जेबमे एक-चौथाई फ्रेंक डाला और दूरबीनसे फिर दिखाई देने लगा। दूर, बहुत दूर तक बरफके पहाड-ही-पहाड दिखाई दे रहे थे, सारी घाटिया बरफसे पटी थी। उनके बीच बहुत दूरीपर कुछ घर दिखाई दिये तो मेरे आश्चर्यका ठिकाना नही रहा। वहा आदमी कैसे रहता है, पर इस सौंदर्यमे रहनेकी कल्पना जब मुझे हुई तो मै रोमाचित हो उठा।

होटलके डाइनिंग हॉलमे हम जाकर बैठे तो डा० गोपालने चायका आर्डर दिया। जो लडकी हमारा आर्डर लेने आई थी इस आर्डरपर उसने जो उत्तर दिया वह हमारी समझमे नहीं आया, इसलिए वह बोलनेके साथ-साथ अपनी बात समझानेके लिए इशारेसे भी कहने लगी। उसका आशय था कि यहा लच मिल सकता है, चाय दूसरे कमरेमे मिलेगी। वह जर्मन भाषामे बोल रही थी। स्विट्जरलैंडके इस हिस्सेमे जर्मन ही बोली जाती है। वस्तुत. स्विट्जरलैंडकी अपनी कोई भाषा है ही नहीं। यहा तीन भाषाए चलती है—फ्रेच, जर्मन और इटालवी। फ्रासकी तरफके हिस्सेमे लोग फ्रेच बोलते है, जर्मनीकी तरफके हिस्सेमे

जर्मन और नीचेके हिस्सेमे इटालवी। लडकी आगे-आगे चलकर हमें चायघरमे ले गई। चायघरमे भीड लगी थी। सामने कोनेकी तरफ एक टेबुलपर एक भारतीय महिला बैठी थी। उन्होने हमारी तरफ देखा। उनकी आखोमे निमत्रण था कि यदि हम चाहे तो उनके निकट बैठ सकते है। वहा कुर्सिया खाली थी, हम तीनो जाकर बैठ गये। उक्त महिलासे परिचय हुआ। आप है कुमारी स्वर्ण कौर, दिल्लीकी रहनेवाली। लदनमे रहकर राजनीतिपर अनुसधान कर रही है। जिनेवा लेबर वेलफेयरके वार्षिकोत्सवमे शामिल होने आई थी और वहीसे इस सौदर्य-स्थलीका दर्शन करने आ गई है। यह जानकर कि यह सारी यात्रा उन्होने हिच-हाइ-किगद्वारा की है, हमारे कौतूहलका ठिकाना नही रहा।

"और आपने यह यात्रा अकेले की ?"

"जी हा, बिल्कुल अकेले।"

"यहा पहुचनेमे कितना समय लगा ?"

"केवल एक दिन—सुबह चली थी, चार जगह गाडी बदलनी पडी और शामको जरमाट पहुच गई।"

हिच-हाइकिग यूरोपकी अपनी चीज है। यात्री सडकके मोडपर अपना थोडा-सा सामान लिये खडा हो जाता है और पाससे जानेवाली कारको यदि उसमे जगह हुई तो रुकनेका इशारा करता है। कार रुक जाती है और यात्रीके गतव्य स्थानकी ओर जाती हुई हो तो उसे बिठा लेती है और जहातक उसे रास्तेपर ले जा सकती है ले जाकर छोड देती है। यात्री वहासे दूसरी कार पकडता है और इस प्रकार अपने गतव्य स्थान-तक पहुच जाता है। यह सेवा यहाके लोग बिल्कुल मुफ्त और खुशी-खुशी करते है और इससे अधिकतर फायदा विद्यार्थी ही उठाते है। यदि समय और थोडा धन हो तो सारे यूरोपकी यात्रा कर लेते है। इनके रहनेके लिए भी जगह-जगह सस्ते स्थान बने हुए है, जिनकी व्यवस्था हिच-हाइकरोकी मदद करनेवाली सस्थाए करती है।

"रास्तेमे आपके साथ कोई अशिष्ट व्यवहार तो नही हुआ ?"

यह प्रश्न मै कर तो गया, पर फिर मुझे लगा कि इतने थोडे परिचयमे ही मुझे स्वर्णजीसे ऐसा प्रश्न नही करना चाहिए था, पर उन्होने मेरे प्रश्नके बेढगेपनका जरा भी खयाल नही किया। बोली—

"यह सब तो अपने यहा ही होता है। यहा तो गाडीमे पीछे बिठा लेनेके बाद लोग प्राय देखते भी नही और न बात करते है और यदि बात करते भी है तो बडी शिष्टतासे और उसका मकसद भी यात्रीकी सूचनाओ-द्वारा मदद करना ही होता है।"

डा० गोपालकी चाय आई और मेरा दूध। दूध ही खाद्य पदार्थोमे यहा सबसे सस्ता है। दो प्याली चायके यहा जबकि सवा रुपये लगते है एक पौड दूध नौ आनेमे मिल जाता है। दूध एक बोतलमे था और बिल्कुल ठडा। मैने उसे गरम कराया और उसे पीकर हम होटलके बाहर निकले। स्वर्णजी हमारे साथ थी। तभी एक आदमी दौडता-सा आकर मेरे सामने रुक गया। उसके कधेपर कैमरा लटक रहा था। उसने अपनी जेबसे एक फोटो निकाला और उसे हमारे सामने बढाते हुए बोला—

"यहा आप लोग मुझसे फोटो खिचवाइये। इस पार्श्वभूमिमे आप लोग बहुत सुदर लगेगे।"
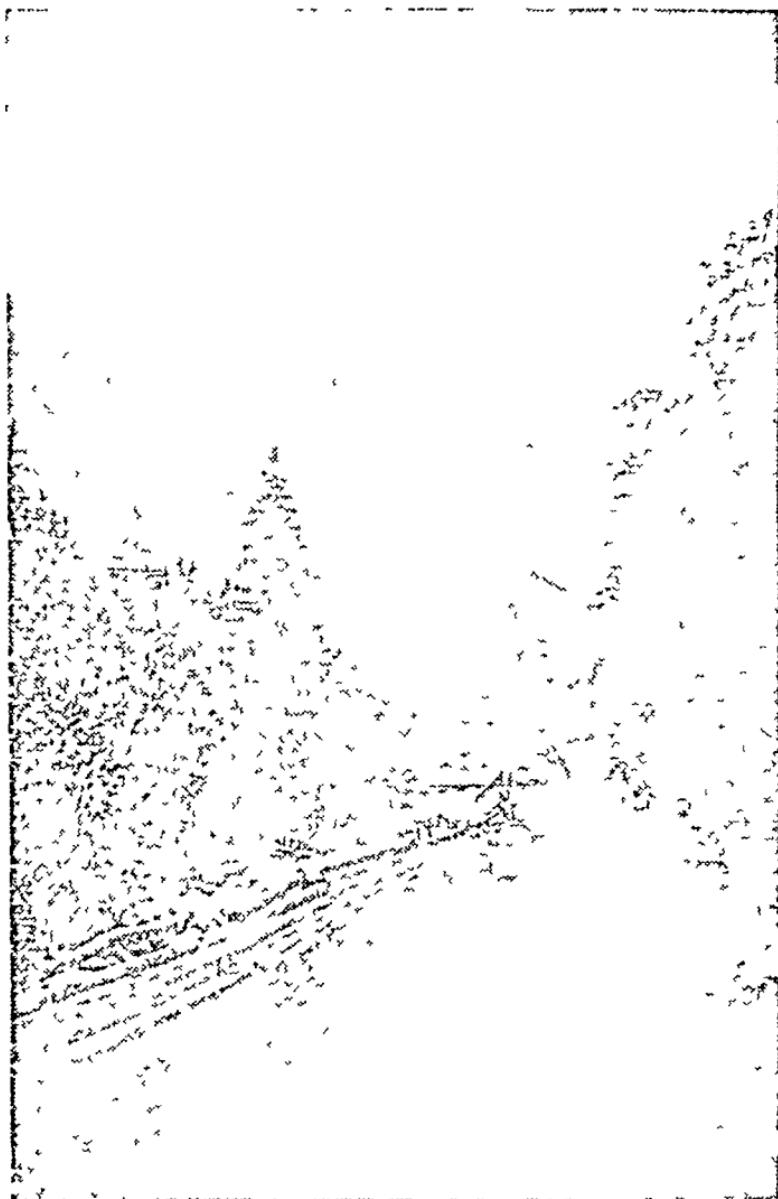
हा, सचमुच हमारे पीछे बरफसे ढकी पहाडिया चमक रही थी। कैमरा मेरे पास भी था, पर यहा फोटो लेनेके लिए हममेसे जो फोटो लेता, वह चित्रके बाहर रह जाता, अत मुझे उसका प्रस्ताव जचा।

"मूल्य ?"

"दस फ्रैक।" (दस रुपया।)

मैने एक फ्रैक उसके हाथमे रक्खा और उसे अपना कैमरा देते हुए कहा, "लो उतारो।"

फोटोग्राफर मुस्कराया। उसने फ्रैक अपनी जेबके हवाले किया और हमारी तस्वीर उतार दी।

ग्रोनरग्राड नदी

स्टेशनपर गाडी खडी ही थी। हम बैठे और गाडी चल पडी। स्वर्णजी

हमे देरतक देखती और हाथ हिलाती रही।

गाडी जब चलकर ग्रोनरग्राड पहुची तो दिन ढल रहा था। हम यह गाव देखनेके लिए इधर-उधर घूमने लगे।

छोटा-सा गाव। एक ही मुख्य सडक थी, जिसके दोनो ओर थोडी-सी दुकाने थी, बाकी सारा गाव इधर-उधर पहाडियोपर बसा था। जगह जगह दो-दो चार-चार घर बने थे। घर कुल लकडीके बने थे, रगे-सजे दूरसे गुडियाके घरोदे-से दिखाई दे रहे थे। गावके बीचमे एक छोटी-सी नदी अपने किनारोमे बधी तेजीसे बह रही थी। गावके एक छोरपर रोपवे-का स्टेशन था, जहासे नजदीककी पहाडियोपर पहुचकर मैटरहार्नके दर्शन किये जा सकते थे। गाव बडा ही शात, स्वच्छ और सुदर दृश्यावलीवाला था। लगता था, सारा गाव ही एक भव्य पार्कमे बसा है।

हमारी गाडीके चलनेका समय निकट आया तो हमने गावकी एक दुकानसे कुछ फल और मेवे खरीदे और माट्रे जानेवाली गाडीमे जा बैठे। गाडी जब चली तो काफी अधेरा हो गया था और बाहर अधकारके सिवा कुछ भी दिखाई नही देता था। मुझे कश्मीर याद आया और पहलगावसे अमरनाथकी वह घोडेपर की गई २७ मीलकी यात्रा। रास्ते-मे तीन दिन लग गये थे और दर्जनो बार उन आडे-टेढे, सकरे और पथ-रीले रास्तेपर मृत्युसे भेट हुई थी। वापस सकुशल लौटनेपर मैने इसे भगवान्का अनुग्रह माना। उस रास्तेके दृश्योमे भी सौंदर्य कम नही था, जो अभी हमने देखा था, उससे तो किसी तरह कम नही, पर मैटर-हार्नतक पहुचना कितना आसान था और अमरनाथतक पहुचना कितना कठिन! अमरनाथ पहुचनेके लिए श्रद्धाका सबल आवश्यक था, मैटरहार्न-तक पहुचनेके लिए केवल अर्थका बल। सभवत दार्शनिकता और औद्योगी-करणमे भी इतना ही अतर है।

: २४ :

प्राकृतिक चिकित्साकी जन्म-भूमि जर्मनीमें

स्विट्जरलैंडमे मैंने केवल एक सप्ताह रहनेका कार्य-क्रम बनाया था, पर वह देश इतना सुदर लगा कि दो सप्ताह लग गये और मेरे भारत वापस आनेकी तिथि बहुत निकट आ गई। फिर भी जर्मनीमे प्राकृतिक चिकित्सा-की स्थिति समझनेकी तीव्र इच्छा थी—वह जर्मनी जहासे प्राकृतिक चिकित्सा चली है और जहा विसेंट प्रिसनिज, क्नाइप, लूई कूने, एडोल्फ जस्ट, आदि प्राकृतिक चिकित्साके सभी उन्नायकोने जन्म लिया और कार्य किया। हिंदुस्तानके कई व्यक्तियोके जर्मनी जाने और लूई कूनेसे मिलने अथवा उनका कार्य देखनेके प्रयत्नकी कहानिया मैं सुन चुका था। मैंने राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसादजीकी आत्मकथामे यह भी पढा था कि वह गाधीजीके अनुरोधपर अपनी यूरोप-यात्राके दौरानमे जर्मनी गये थे और कूनेके पुत्रसे अपने दमारोगके निवारणार्थ चिकित्सा-क्रम भी लिखवाकर लाये थे। अत मैंने यदि अधिक सभव न हो तो जर्मनीके कम-से-कम एक-दो प्राकृतिक चिकित्सकोसे मिलनेका कार्य-क्रम बनाया।

इग्लैंड और स्विट्जरलैंडमे यह कई जगह ज्ञात हुआ था कि जर्मनीके बादन-बादन स्थानमे एक बहुत ही योग्य और अनुभवी प्राकृतिक चिकित्सक है और पश्चिमी जर्मनीके जो चिकित्सासबधी नक्शे मिले थे, उनमे प्राकृतिक चिकित्साके स्थानोमे बादन-बादनको ही प्रधानता दी गई थी, अत बादन-बादन जाना ही मैंने तय किया।

बादन-बादनके लिए जब मैं बाजलसे चला तो खयाल था कि जर्मनी-मे इस समय भी सभवत गरीबी दिखाई देगी और मकानात टूटे-फूटे होगे,
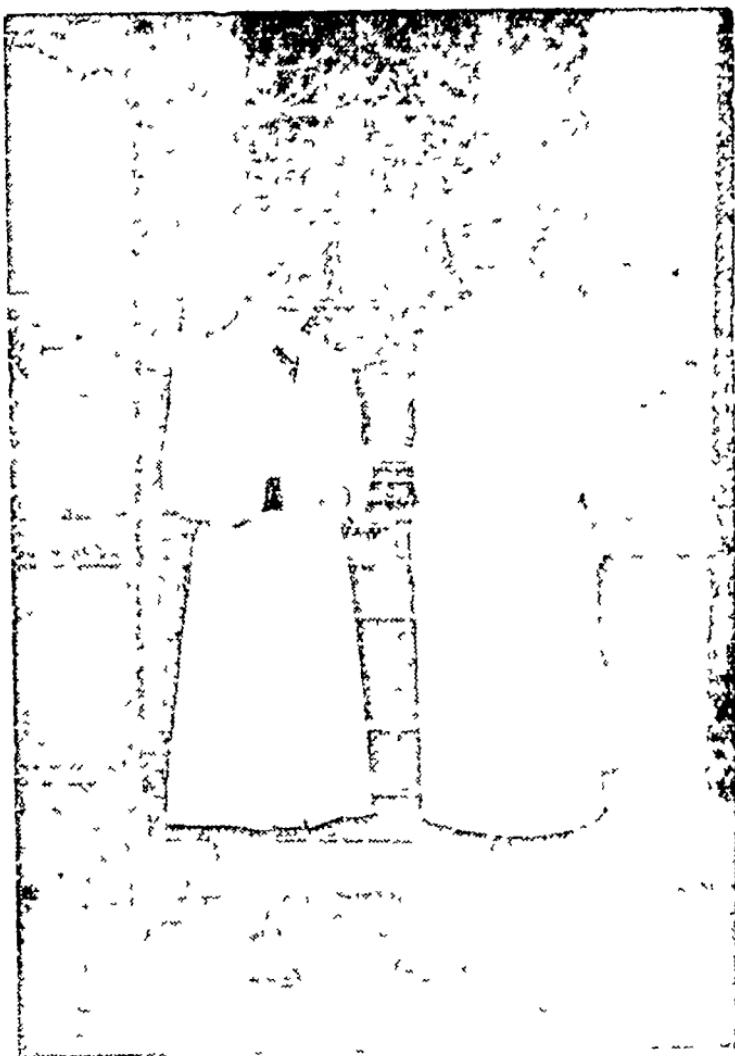
पर जर्मनीमे प्रवेश करनेपर बहुत देरतक तो दृश्य स्विट्जरलैण्ड-जैसे ही रहे—खेतोमे अगूर-ही-अगूरकी लताए, सुदर प्राकृतिक दृश्य, पहाडिया और नदी-नाले। बस्तियोके निकटसे भी हमारी ट्रेन गुजरी। बहुतसे स्टेशनोपर भी वह रुकी, पर कही गरीबी, अवसाद या टूट-फूटका नामोनिशान नही था। जर्मनवासियो और उनकी बस्तियोको देखकर यदि कुछ अनुमान होता था तो यही कि इन लोगोने धोबीसे धुलवाकर कपडे नही पहने है, बल्कि दर्जीसे नये बनवाकर पहने है। कितने अल्पकालमे इन्होने अपनी क्षति पूरी कर ली, नैराश्य, अवसाद, अपमान और विफलताको अपने दिल और देशसे निकाल फेका।

बादन-बादन मै रातको आठ बजे पहुचा। पानी बरस रहा था, अत स्टेशनके निकटके एक होटलमे जाकर ठहर गया। सुबह मैने बादन-बादन देखा। छोटा-सा गाव, इसे थोडी आबादीका आधुनिकतम शहर ही कहिये—दोनो तरफ पहाडिया, पहाडियोके बीचकी जगह सकरी, अत शहर बहुत लबाईमे बसा हुआ, दो मजिलेसे अधिक ऊची कोई इमारत नही, इमारते दूर-दूर, बाजार भी बहुत घना नही, अत बडा ही स्वच्छ और सारा शहर बहुत ही सुदर, पार्क इतने कि लगता था, जैसे सारा शहर ही पार्क-सा हो।

आदमियोमे भी यूरोपके अन्य देशोके लोगोसे कुछ फर्क लगा। ये लोग अधिक विचारशील, अधिक गभीर, दिखावा कम, इग्लैंडकी तरह जबर-दस्तीका मौन नही, बोलते ही कम है।

होटलके मालिकने ही मुझे बादन-बादनके प्राकृतिक चिकित्सक डा० हैन्स माल्टेनका पता बता दिया और मै उनके दफ्तरसे उनसे मिलनेका समय निश्चित करके उनसे मिलने पहुचा। वैसे तो बादन-बादन ही बागमे बसा एक शहर लगता है, पर डा० हैन्सका चिकित्सालय तो कुजोमे ही बना निकला—सडकके दोनो किनारोपर सघन वृक्ष और चारो तरफ हरियाली। टैक्सीसे मै डा० हैन्सके चिकित्सालयके सामने उतरा तो टैक्सी लेकर ड्राई

लगा। इतनी दूर तो मैं पैदल ही आ सकता था और संभवत रास्तेके दृश्योको अधिक देख भी सकता था।

डा० हेन्स माल्टेन और उनकी पत्नी

डा० माल्टेन मुझसे बड़े प्रेमसे मिले। ७० वर्षकी उम्र, ऊंचा पहलवान-

सा शरीर, चेहरेपर गभीर अध्ययन, मनन और चितनकी रेखाए, होठोपर ऐसी मुस्कराहटकी रोशनी कि जिसपर पडे उसे अपना बना ले। उनकी मुस्कराहटका साथ मेरी मुस्कराहटने भी दिया और डा० माल्टेन मेरा हाथ पकडकर अपने निजी कमरेमे ले गये।

बात शुरू ही हुई थी कि मै समझ गया कि डा० हैन्स माल्टेनका अग्रेजीका ज्ञान इतना अल्प है कि इनसे बात करना मुश्किल है, फिर भी डा० माल्टेनकी कोशिश जारी थी। यूरोपमे मुझे हर जगह लगा और यहा तो विशेष रूपमे कि अग्रेजी सीखनेमे व्यर्थ इतना समय लगाया। यदि इसके बजाय जर्मन या फ्रेंच सीखी होती तो अधिक लोगोसे बातचीत हो सकती थी। मैने कहा, "डाक्टर, जिस महिलाने मुझसे फोनपर बात की थी वह तो अच्छी अग्रेजी जानती है। यदि आप उन्हे बुला ले तो उनकी मार्फत हमारी बात मजेमे हो सकती है।"

"वह तो मेरी बहन ही है, पर वह भी अग्रेजीके पारिभाषिक शब्दोंसे अपरिचित है, फिर भी उन्हे बुलाता हू।"

उक्त महिला आ गई और हमारी बात शुरू हुई। डा० हैन्स माल्टेन एलोपैथिक डाक्टर है। यह केवल मधुमेह और रक्तसचारसबधी बीमारियोका इलाज करते है। लगभग पाचसौ रोगी उन्हे सालमे मिलते है और हर रोगी इनसे प्राय आठ सप्ताह चिकित्सा कराता है। ये रोगियोको घरपर नही रखते। इनके यहा रोगी सुबह-शाम आते है और उपचार कराकर चले जाते है। भोजन इनके बताये अनुसार करते है। आजकल ये अपक्वाहारका अश अधिक रखते है, जिनमे फल और तरकारियोको प्रधानता देते है। मास, शराब, सिगरेटके यह विरुद्ध है। चाय, काफी कभी-कभी बता देते है।

मैने विषयपर आनेके लिए उनसे एक सीधा प्रश्न किया—"आप यहा किस चिकित्सककी पद्धति चलाते है?"

"क्नाइपकी पद्धति।"

"कूने और जस्टका आपकी चिकित्सामे क्या और कितना स्थान है ?"

"हमारे यहा केवल क्नाइपकी पद्धति चलती है । यहा लोग कूनेका नाम भी भूल गये है । जस्टको तो कुछ लोग जानते है ।"

फादर क्नाइप

मुझे बडा आश्चर्य हुआ कि जिन कूनेकी पद्धति हिदुस्तानकी प्राकृतिक चिकित्साका आधार है, उन्हे यहाके लोग भूल गये है और क्नाइप, जिनकी चिकित्सा भारतमे बिल्कुल नही चलती, यहाके सर्वेसर्वा है। मैंने डा० माल्टेनको भारतकी स्थिति बतलाई ।

"भारतमे तो कूनेकी ही पद्धति चलती है । केवल उनकी पुस्तके पढकर लोग रोगियोकी चिकित्सा मजेमे कर लेते है ।"

"पर उतना ज्ञान तो काफी नही है ।"

"पर उनकी चिकित्सा एक तरहसे पूर्ण है, क्योकि उन्होने भोजनपर भी विचार किया है, जबकि क्नाइपने भोजनपर बिल्कुल विचार नही किया ।"

"हा, भोजनपर उन्होने एक शब्द भी नही लिखा।"

"तो क्या बिना भोजन-परिवर्तनके केवल जलोपचारसे रोग दूर किया जा सकता है ?"

"हा जरूर, पर भोजन बदलना भी उपयोगी है। जलोपचारके साथ रोगीको उचित भोजन भी मिलना चाहिए और रोगीको भोजनके सबधमे इसलिए भी बताना चाहिए कि वह तदुरुस्त हो जानेके बाद तदुरुस्त रहे।"

अब डाक्टरकी बहनने प्रश्न किया, "भारतमे तो लोग मास-मदिराका प्रयोग ही नही करते, आप भोजन क्या बदलते होगे ?"

मेरे लिए यह प्रश्न आश्चर्यजनक नही था, क्योकि भारतके सबधमे यहाकी यह आम धारणा मैने जान ली थी कि भारतीय पूर्ण शाकाहारी है, पर उन्हे यह कहा पता है कि जो शाकाहारी है वे भी शाकाहारी नही विशेष रूपसे अन्नाहारी ही है।

"हम चीनी बद करवाते है, नमक कम करवाते है और रोगीके भोजनमे फल-तरकारियोकी मात्रा अधिक करवाते है। डा० हैन्स अपने रोगियोके लिए भोजनकी कौन-सी पद्धति अपनाते है ?"

अब डाक्टरने ही जवाब दिया, "स्विट्जरलैडके डाक्टर बिर्चर बेनरकी पद्धति। वह बहुत ही स्वाभाविक और वैज्ञानिक है।"

"डाक्टर केलागकी पुस्तक 'न्यू डाइटेटिक्स' आपने पढी है ? वह अमरीकी लेखक है। उनकी पुस्तक अग्रेजीमे है।"

"मैने उनकी कोई पुस्तक नही पढी। बिर्चर बेनरकी ही पुस्तक पढी है। उनकी सभी पुस्तके जर्मनमे है। कुछ पुस्तके फ्रचमे भी प्रकाशित हुई है। अमरीकी लेखकोमे मैने केवल गाइलार्ड हाउजरकी पुस्तके पढी है, पर उनमे कोई दम नही है।"

बिर्चर बेनरकी भोजन-पद्धतिका परिचय मुझे स्विट्जरलैडमे उनके चिकित्सालयमे मिल चुका था, अत अब मेरी जिज्ञासा डा० हैन्सके उनके

उपवाससबधी विचार जाननेकी हुई। मैंने पूछा, "उपवासको अपनी चिकित्सामे आप कोई स्थान नही देते ?"

"उपवास बहुत कठिन चिकित्सा है। हा, हम धूप-चिकित्साको अवश्य स्थान देते है और रोगीको खूब टहलाते है।"

"प्रतिदिन कितने मील ?"

"एकसे बीस मीलतक। हा, यहासे थोडी दूरपर एक उपवासविशेषज्ञ है। वह केवल उपवासद्वारा रोगियोकी चिकित्सा करते है।"

डा० हैन्सनने मुझे उक्त विशेषज्ञका पता लिखकर दे दिया, पर मै उनसे मिल नही सका। मैंने उनसे अब जर्मनीमे प्राकृतिक चिकित्साकी स्थिति समझनेके लिए पूछा, "जर्मनीमे कितने प्राकृतिक चिकित्सक है ?"

मेरा यह प्रश्न सुनकर उन्होने एक फाइल निकाली और उसमेंसे मुझे एक कागज दिखाते हुए बोले, "केवल इस सस्थाके छ सौ चिकित्सक सदस्य है। वे सभी मेडिकल डाक्टर है। सभी प्राकृतिक चिकित्सा नही करते, पर उसमे विश्वास करते है। इनकी कान्फरेन्स यहा २८ अगस्तसे ३ सितम्ब तक होगी, जिसमे प्राकृतिक चिकित्साके शिक्षणार्थ व्याख्यान होगे। आप उस समय रहे तो बडा अच्छा होगा।"

"पर मै तो जर्मन जानता नही, इसमे लाभ कैसे उठा सकूगा ?"

मेरा यह जवाब सुनकर डाक्टर चुप हो गये। फिर मैंने अपना प्रश्न बढाया, "आपके यहा प्राकृतिक चिकित्सापर पत्रिकाए निकलती है ?"

"जी हा, कई निकलती है। 'हिपोक्रेटिस' डाक्टरोके लिए है। साधारण जनताके लिए कई पत्र प्रकाशित होते है।"

मैंने दो-तीन ऐसी पत्रिकाए उनके प्रतीक्षालयकी मेजपर देखी थी, जिनमे 'कास्मस' भी थी। मुझे लगा कि इसका सबध प्रसिद्ध कास्मोथिरैपिस्ट एडमाड जेकलेसे है, पर पूछनेपर पता चला कि इसका सबध एडमाड जेकलेसे नही है। यहाके लिए यह विषय अपना और पुराना है।

"जलोपचारपर कोई वृद्धि नही हुई ? कुछ अन्य पुस्तके लिखी गई ?"

"क्नाइप काफी है ।"
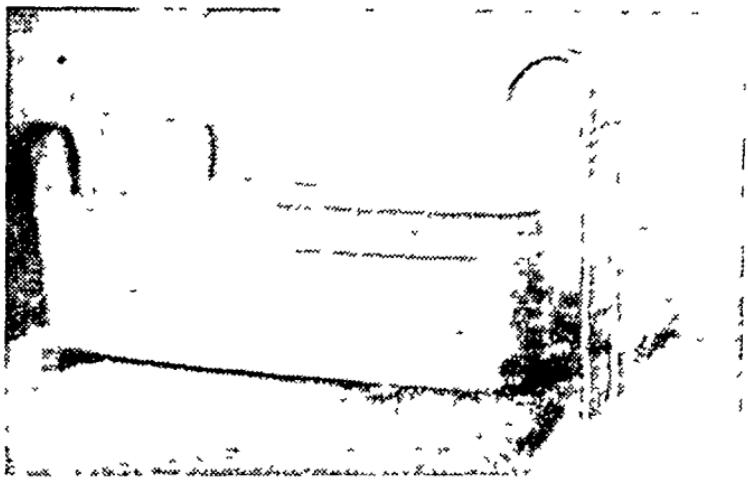
उनकी बहनने बताया कि मेरे भाईने एक लिखी थी, जिसका सस्करण बहुत पहले समाप्त हो चुका है । ये उसका सशोधन कर रहे है, पुस्तक जल्द छपेगी ।

मैंने जलोपचारपर डाक्टरसे कई प्रश्न किये, पर भाषामे यहा पारिभाषिक शब्द होनेके कारण वह समझ नही सके । इसके जवाबकी उन्होने एक बढिया युक्ति निकाली । वह बोले, "एक जलोपचार आप मुझसे लीजिये । बोलिये, तैयार है ?"

मै आज सुबह ही नहाकर आया था । यहा जिस दिन नहाओ, दो रुपये लगते है । फिर भी मैंने डाक्टरसे कहा, "जरूर, मै स्नान करूगा ।" उनकी बात मेरी समझमे बहुत नही आई थी । मेरा कुछ ऐसा भी ख्याल हुआ था कि यह जलोपचार लेनेको नहीं, बल्कि जलोपचार देखनेको कह रहे है । खैर, डाक्टर मुझे नीचे अपने साथ चिकित्सालयमे ले गये । वहा एक व्यक्तिसे उन्होने मुझे जलोपचार देनेको कहा । वह थोडी अग्रेजी जानता था । कपडे उतारकर तौलिया पहन लेनेपर वह मुझे एक कमरेमे लिवा गया, जहा उसने मुझे एक टेबुलपर लिटाकर सामने और पीठकी ओर दो बार एक-एक मिनट अल्ट्रावायलेटरेज दी और फिर स्नानागारमे ले गया ।

स्नानागार दस गज लबा, पद्रह गज चौडा बडा कमरा था, वहा क्नाइप-पद्धतिके तीन लबे टब और कई पैर रखनेके लिए काठकी नादे थी । वहा चार-पाच व्यक्ति नादमे पैर रखे बैठे थे । मुझे एक कुर्सीपर बिठाकर एक नादमे पैर रखनेको कहा गया । पानीकी गर्मी असह्य थी, उसे सहने लायक बनानेके लिए उसमे दो बार ठडा पानी मिलाना पडा । पैर मैंने नादमे दस मिनट रक्खे होगे । इस समयमे दो बार मेरे पैर बाहर निक-

वाकर उनपर खूब ठडा पानी आधा-आधा मिनट डाला गया और नादमें अधिक गरम पानी मिलाया गया।

डा० माल्टेनके उपचार-गृहका एक टब

डा० माल्टेनके उपचार-गृहका दूसरा दृश्य

डाक्टर वही मौजूद थे। मैंने कहा, "डाक्टर, क्नाइपने तो गरम जलके अधिक प्रयोगकी बात नही कही है।"

"उस समय गरम जलकी सुविधा अधिक नही थी (अर्थात् इस प्रकार कल दबाते ही गरम-ठडा पानी लेनेकी विधिका प्रचलन नही हुआ था)। हम यहा गरम जलका प्रयोग ठडेकी प्रतिक्रिया अधिक हो, इसलिए करते है।

दस मिनट बाद मुझे एक चौकीपर खडाकर सामने सहारेके लिए एक कुर्सी रख दी गई। पहले पीठपर हलका गरम पानी फुहारेसे डाला गया, फिर सामने। आधे-आधे मिनटपर मैं घूमता रहा। पानी कुल सात-आठ मिनट डाला गया होगा। फिर ठडे पानीका फुहारा दो-तीन मिनट चला और अतमे ठडे पानीकी मोटी धार रीढपर, सिरपर और सामने बडी आतकी जगहपर डालकर नहान समाप्त कर दिया गया।

डाक्टरने कहा, "यह हमारा स्टैंडर्ड ट्रीटमेंट है, जो हम रोगीको प्रतिदिन दो बार देते है।"

उसी कमरेमे मैंने नादसे पैर निकाल लेनेपर गरम पानीके टबमे भी एक रोगीको लिटाते देखा था।

मैं कपडे बदलकर कमरेसे बाहर निकला तो एक महिला मिली। बोली, "मैं श्रीमती हॅन्स मारटेन हू। चलिये, आपको [illegible] धूप-चिकित्सा-गृह दिखा दू।"

मैं उनके पीछे हो लिया। वह मुझे दो मंजिलेकी छतपर [illegible], वहा चारो ओर आदमीके सिर जितनी ऊची दीवार थी और [illegible] लेटने जितनी जगह। उन्होने वहा एक गद्दा बिछाकर दिखाया कि [illegible] हर रोगी यहा धूप हो तो एक घटा लेटता है। उस समय बदली [illegible] वहा कोई रोगी नही था। एक तरफ बीच दीवारपर [illegible] लगा था, जिससे रोगीके लेटनेपर धूप [illegible] और [illegible]।

मैं नीचे आया तो डाक्टर फिर मिले। उन्होने मुझे [illegible] पुस्तक 'एजाइना पैक्टोरिस' भेट की और मैंने डाक्टर और उनकी [illegible]

चिकित्सालयके सामनेकी सघन कुजोंसे ढकी सडकपर मैं पैदल ही अपने होटलकी ओर चला। इस समय मैं जलोपचारसे आई ताजगीको तीव्रता-से महसूस कर रहा था और सोच रहा था कि क्नाइपकी पुस्तक 'माई वाटर क्योर' हिंदीको कैसे जल्द-से-जल्द मिल सकती है।

: २५ :

उपसंहार

जर्मनीमे चलते समय मेरा खयाल था कि हम ८-१० घंटेमें रोम पहुच जायगे, पर यह यात्रा २२ घंटेकी निकली। सुबह ६ बजे चलकर हमने ११ बजे जर्मनी और शामको ७ बजे स्विट्जरलैंड पार किया। बाजलमे हमे इटलीकी ट्रेन पकडनी थी जो रात १० बजे चलकर सुबह ७॥ बजे रोम पहुच रही थी। रातको सोनेके तिरपन रुपये टिकटके मूल्यसे अतिरिक्त लग रहे थे, पर अब यात्रा शेष हो रही थी और रुपये थोड़े रह गये थे। यात्राके अंतके पहले ही रुपये समाप्त न हो जाय, इस डरसे हमने रात बैठकर ही काटना तय किया। जगह हमें एक ऐसे डब्बेमें मिली, जिसमें एक युवक, उसकी पत्नी तथा दो बच्चे और दो युवतियां थीं, जो आपसमें सहेलियां लगती थीं। हम दोके आनेपर पूरे आठ हो गये। [illegible] याद आया कि उनके पास मिठाई तो है ही नहीं। वे मिठाई लेनेको बाहर भागे। मिठाई इस सारी यात्रामें दोस्ती जोड़नेका, मुस्कराहट पानेका, अच्छा साधन बनती रही है। किसीको प्रेमसे मुस्कराते [illegible] मिठाई दो बच्चे, जवान, बूढ़े सभी हँसकर और कृतज्ञतापूर्वक उसे स्वीकार लेते हैं। मिठाई मिठाईके खयालसे नहीं, बल्कि उसके पीछे जो सद्भावना रहती है उसके लिए लेते हैं, मुस्कराते हैं, धन्यवाद देते हैं। मिठाई स्वीकार करना बात करनेकी भूमिका भी है। जो बात नहीं करना चाहता वह मिठाई स्वीकार नहीं करता, पर ऐसा होता बहुत कम है। [illegible] आते ही सबको मिठाई दी। सबने ली। स्वाद देखते, [illegible]। बात होने लगी, पर बात हो क्या? हमारे सिवाय कोई भी तो अंग्रेजी नहीं

जानता था। युवक दस-बीस शब्द अंग्रेजीके जानता होगा, अत सारी बाते इशारोमे हो रही थी। युवकने बताया, मै इजीनियर हू। मैने उसके बच्चेकी नब्ज पकडकर बताया कि मै यह अर्थात् चिकित्सक हू। मेरा मित्र बैरिस्टर है, यह बतानेके लिए मैने दो हाथोमे हथकडिया पहनाकर शर्माजीसे खुलवा दी, पर वे लोग समझ नही सके। समझानेके लिए कोर्ट, जज, ला आदि बहुतसे शब्द कहे, पर वे समझे नही।

दोनो युवतियोने भी अपना परिचय दिया। छोटीने अपना नाम मेरिडा बतलाया और बतलाया कि वह एक दफ्तरमे काम करती है और उसकी बडी बहन एक पुलिसके अधिकारीसे ब्याही है और ये दोनो रोमा जा रही है। रोमा (रोम) तो हम भी जा रहे थे। इटलीमे रोमको रोमा कहते है और इटलीको इटालिया। अंग्रेजोने सब जगहोके नाम अपनी सुविधाके लिए बिगाड लिये है और वही हमारे लिए सही हो गये है। बडा सतोष हुआ कि यात्राके अततकके लिए दो साथी मिले।

धीरे-धीरे बारह बजे। लोगोको झपकी आने लगी और अपनी जगहपर बैठे-बैठे सोनेका प्रयत्न करने लगे। जगह गद्देदार, आरामकुर्सी-की तरह बडी ही आरामदेह थी। मुझे भी नीद आ गई। सुबह ६ बजे नीद खुली तो शर्माजीको जगाया। ट्रेनके बाहरके दृश्योको देखकर हमने अनुमान किया कि हम लोग रोम पहुचनेवाले है। सात बजे हम लोग रोमकी सीमामे पहुच गये। मेरिडा खुशीसे 'रोमा-रोमा' चिल्ला उठी। मेरिडा एक बच्चेको लेकर खिडकीके पास खडी हो गई और वह उसे खेतोमे चलते हल, कुए, झोपडिया और पशु दिखाने लगी। यह सारा दृश्य यूरोपके अन्य देशोसे बहुत भिन्न है। यह सब कुछ तो हिदुस्तान-जैसा ही लगा। रोमका स्टेशन आ गया और मुझे याद आया वह प्रश्न, जो मुझसे स्कूलके पाचवे दरजेकी परीक्षामे भूगोलके प्रश्न-पत्रमे पूछा गया था। उसमे हिदुस्तान और इटलीकी तुलना करनेको कहा गया था और मैने लिखा था कि दोनो देशोके उत्तरमे बहुत ऊचे-ऊचे

पहाड है, दोनो देशोके तीन तरफ पानी है, दोनो देशोमे विभिन्न जलवायु-वाले अनेक प्रदेश है, दोनो देशोमे खरबूजे होते है और दोनो देशोके स्त्री-पुरुषोके बाल और आखे काली होती है। अब हमने समझा कि नीली आखे और भूरे बाल हमे कितने अरुचिकर लग रहे थे और काली आखे और काले लबे बालोके प्रति हमारा कितना स्नेह है, और इटलीके खरबूजे तो हम फ्रासकी सीमामे प्रवेश करनेके बादसे ही खाते आये है। पेरिसमे एक खरबूजा चार रुपयेमे मिलता था, स्विट्जरलैंडमे तीन रुपयेमे, जर्मनी-मे दो रुपयेमे और अब वही उसके जन्मस्थान इटलीमे एक रुपयेमे मिल रहा था।

रोमका स्टेशन पेरिसके स्टेशनसे भी भव्य था। स्टेशनसे निकलते ही सामान हमने स्टेशनके क्लोक रूममे छोडा और होटल खोजने निकले। एक-दो स्टेशनके सामने ही देखे, पर वे पसद नही आये। हमे डाक देखनेकी जल्दी हो रही थी। पद्रह मिनटके अदर ही हमने एयर इडियाका दफ्तर खोज लिया, जहा हमारी डाक रखी थी। वहा यह भी ज्ञात हुआ कि मुझे कल शामको ही हिंदुस्तान जानेवाले जहाजमे जगह मिली है। एयर इडियाके दफ्तरके लोगोकी सहायतासे नजदीकके [illegible] होटलमे हमे कमरा मिल गया और हम दो दिनतक घूम-घूमकर रोम देखते रहे। हमे यह कहावत ठीक ही जान पडी कि 'रोमका निर्माण एक दिनमे नही हुआ था।' जरूर ही इसके बननेमे हजारो वर्ष और बहुत अधिक परिश्रम लगा होगा। सचमुच रोम ऐतिहासिक इमारतोका अजायबघर है। सारा रोम ही अजायबघर है। बडे-बडे गिर्जे, मकबरे, चौराहे, [illegible] बडी-बडी मूर्तिया, बडे-बडे थियेटर, फुहारे और अनेक स्तम्भ भी है। रोम नगरके बीचमे पोपका नगर, नगरके अदर [illegible] नगर है, वही सत्ता भी—पोपकी अपनी पुलिस, अपना डाक-टिकट और अपने कायदे-कानून है। यह सब अजायबघर ही है न!

रोमके [illegible] है [illegible] लगता है [illegible]-

जानता था। युवक दस-बीस शब्द अंग्रेजीके जानता होगा, अत सारी बातें इशारोंमे हो रही थी। युवकने बताया, मैं इजीनियर हू। मैंने उसके बच्चेकी नब्ज पकडकर बताया कि मैं यह अर्थात् चिकित्सक हू। मेरा मित्र बैरिस्टर है, यह बतानेके लिए मैंने दो हाथोमे हथकडिया पहनाकर शर्माजीसे खुलवा दी, पर वे लोग समझ नही सके। समझानेके लिए कोर्ट, जज, ला आदि बहुतसे शब्द कहे, पर वे समझे नही।

दोनो युवतियोने भी अपना परिचय दिया। छोटीने अपना नाम मेरिडा बतलाया और बतलाया कि वह एक दफ्तरमे काम करती है और उसकी बडी बहन एक पुलिसके अधिकारीसे ब्याही है और ये दोनो रोमा जा रही है। रोमा (रोम) तो हम भी जा रहे थे। इटलीमे रोमको रोमा कहते है और इटलीको इटालिया। अंग्रेजोने सब जगहोके नाम अपनी सुविधाके लिए बिगाड लिये है और वही हमारे लिए सही हो गये है। बडा सतोष हुआ कि यात्राके अततकके लिए दो साथी मिले।

धीरे-धीरे बारह बजे। लोगोको झपकी आने लगी और अपनी जगहपर बैठे-बैठे सोनेका प्रयत्न करने लगे। जगह गद्देदार, आरामकुर्सी-की तरह बडी ही आरामदेह थी। मुझे भी नीद आ गई। सुबह ६ बजे नीद खुली तो शर्माजीको जगाया। ट्रेनके बाहरके दृश्योको देखकर हमने अनुमान किया कि हम लोग रोम पहुचनेवाले है। सात बजे हम लोग रोमकी सीमामे पहुच गये। मेरिडा खुशीसे 'रोमा-रोमा' चिल्ला उठी। मेरिडा एक बच्चेको लेकर खिडकीके पास खडी हो गई और वह उसे खेतोमे चलते हल, कुए, झोपडिया और पशु दिखाने लगी। यह सारा दृश्य यूरोपके अन्य देशोसे बहुत भिन्न है। यह सब कुछ तो हिदुस्तान-जैसा ही लगा। रोमका स्टेशन आ गया और मुझे याद आया वह प्रश्न, जो मुझसे स्कूलके पाचवे दरजेकी परीक्षामे भूगोलके प्रश्न-पत्रमे पूछा गया था। उसमे हिदुस्तान और इटलीकी तुलना करनेको कहा गया था और मैंने लिखा था कि दोनो देशोके उत्तरमे बहुत ऊचे-ऊचे

पहाड है, दोनो देशोके तीन तरफ पानी है, दोनो देशोमे विभिन्न जलवायु-वाले अनेक प्रदेश है, दोनो देशोमे खरबूजे होते है और दोनो देशोके स्त्री-पुरुषोके बाल और आखे काली होती है। अब हमने समझा कि नीली आखे और भूरे बाल हमे कितने अरुचिकर लग रहे थे और काली आखे और काले लबे बालोके प्रति हमारा कितना स्नेह है, और इटलीके खरबूजे तो हम फ्रासकी सीमामे प्रवेश करनेके बादसे ही खाते आये है। पेरिसमे एक खरबूजा चार रुपयेमे मिलता था, स्विट्जरलैडमे तीन रुपयमे, जर्मनी-मे दो रुपयेमे और अब वही उसके जन्मस्थान इटलीमे एक रुपयेमे मिल रहा था।

रोमका स्टेशन पेरिसके स्टेशनसे भी भव्य था। स्टेशनसे निकलते ही सामान हमने स्टेशनके क्लोक रूममे छोडा और होटल खोजने निकले। एक-दो स्टेशनके सामने ही देखे, पर वे पसद नही आये। हमे डाक देखनेकी जल्दी हो रही थी। पद्रह मिनटके अदर ही हमने एयर इडियाका दफ्तर खोज लिया, जहा हमारी डाक रक्खी थी। वहा यह भी ज्ञात हुआ कि मुझे कल शामको ही हिंदुस्तान जानेवाले जहाजमे जगह मिली है। एयर इडियाके दफ्तरके लोगोकी सहायतासे नजदीकके एक साफ होटलमे हमे कमरा मिल गया और हम दो दिनतक घूम-घूमकर रोम देखते रहे। हमे यह कहावत ठीक ही जान पडी कि 'रोमका निर्माण एक दिनमे नही हुआ था।' जरूर ही इसके बननेमे हजारो वर्ष और बहुत अधिक परिश्रम लगा होगा। सचमुच रोम ऐतिहासिक इमारतोका अजायबघर है। सारा रोम ही अजायबघर है। बडे-बडे गिर्जे, सडके, चौराहे, पार्कोमे बडी-बडी मूर्तिया, बडे-बडे थियेटर, फुहारे और अनेक अजायबघर भी है। रोम नगरके बीचमे पोपका नगर, नगरके अदर नगर, नगर ही नही सत्ता भी—पोपकी अपनी पुलिस, अपना डाक-टिकट और अपने कायदे-कानून है। यह सब अजायबघर ही है न !

रोममे इमारते कई तरहकी है, पर लगता है, रोमनोने सैकडो वर्षो-

तक गिर्जोंके बनानेमे ही सारी शक्ति लगाये रक्खी और गिर्जे ही रोमकी सारी स्थापत्यकला, मूर्तिकला और चित्रकलाका सगम-स्थल बने। सारी कारीगरीको देखकर लगता है कि रोमनोने कलामे सुकुमारतासे अधिक विशालताको महत्त्व दिया। साम्राज्यवादी थे न रोम-निवासी, करीब सारे यूरोपपर उनका अधिकार था। विस्तारने विशालताका वरण किया और सारी कला शक्तिका प्रतीक बनकर रह गई।

दूसरे दिनकी शाम आई और मै शर्माजीके साथ रोमके हवाई अड्डे-पर पहुचा। शीघ्र ही वह जहाज अड्डेपर पहुचा, जो हिंदुस्तानके लिए उडनेवाला था। जहाजमे यात्री नीचे उतरे और हवाई अड्डेके विश्रामालय और दुकानोमे फैल गये। वहा मैने देखा, एक भारतीय युवक एक दुकानमे इटलीमे बना सामान खरीदनेमे दत्तचित्त है। उसने कुछ सामान खरीदा और थामस कुक ऐंड ससके नोटोकी एक मोटी गड्डीमेसे एक नोट निकाल-कर दाम चुकाये तो मेरे मुहसे निकल ही गया, "ताज्जुब है, आप इतने रुपये यात्राके खर्चसे बचा लाये।"

"मै ऐसी जगह गया था, जहा रुपये खर्च हुए ही नही। रास्तेमे जो मिल जाता, ट्रामका टिकट खरीदता, सैर कराता, नाश्ता कोई कराता और भोजनके लिए कोई पकडता।"

मै सोच ही रहा था कि ऐसा देश रूसके अलावा और कौन हो सकता है कि उक्त युवकने कहा, "इसके अलावा बहुतसे रुपये तो मुझे थोडा-सा लिखनेसे मिल गये।"

"तो आप रूस गये थे, आपका शुभ नाम ?"

"जी हा, मै रूस ही गया था। मुझे जाफरी कहते है, सरदार जाफरी, और आप ?"

"मै हू विट्ठलदास मोदी।"

"ओहो, मोदीजी!"

हम कभी मिले नही थे, पर नाम सुनते ही हमे ऐसा लगा कि एक-दूसरे-से हम वर्षोसे परिचित है।

"बडा अच्छा है, आपसे भेट हो गई। मेरी सीटकी बगलमे एक जगह खाली है, मै चलकर वह आपके लिए रोकता हू। आप धीरे-धीरे आये। हम लोग जमकर बात करेगे।"

धीरे-धीरे जहाज छूटनेका वक्त आया। मैने शर्माजीसे विदा ली। यूरोपकी सारी यात्रामे वह मेरे साथ रहे, इग्लैडकी यात्रामे वह मेरे बडे-से-बडे मददगार रहे। बडी आनदमय हमारी यात्रा रही, इसका अधिकाश श्रेय शर्माजीकी जिदादिली और उनके स्नेहमय व्यवहारको है। उनसे बिछुडते बडी तकलीफ हो रही थी। सोच रहा था कि कितना अच्छा होता कि शर्माजी भी मेरे साथ हिदुस्तान चलते, पर उन्हे तो लदन लौटकर अपनी पढाई पूरी करनी थी। जहाज उडा, मै खिडकीसे शर्माजीको देख रहा था। वह अपना रूमाल हिला रहे थे। मुहपर उनके हृदयकी पीडा प्रतिबिबित हो रही थी। मेरे मनमे भी इस बिछोहकी टीस कम न थी।

रातको ग्यारह बजे काहिरा आया। मै और जाफरीसाहब बातोमे इतने मग्न थे कि पता ही नही चला कि पाच घटे कैसे गुजर गये। जाफरीसाहबने रूसके अपने अनुभव सुनाये और मेरे यूरोपके अनुभव सुने। मुझे उनकी जिदादिली बडी पसद आई। हर प्रसगको वह बडे रसके साथ सुनाते थे और हर चीजको सुनकर उसपर अपनी राय जरूर प्रकट करते थे।

काहिरासे जहाज दो बजे चला। दो घटे तो हमने घडीमे बढाये और एक घटा और जहाज वहा रुका। जहाजके उडते ही हमने सोनेकी तैयारी शुरू की और इस खुशीमे कि सुबह हिदुस्तान पहुचनेवाले है, शीघ्र नीद आ गई। सुबह उठे तो सात बजे थे। एक घटा मुह-हाथ धोने और नाश्ता करनेमे लगा, पर इसके बाद वक्त कटता ही नहीं था। जहाज-के बबई पहुचनेमे तीन घटेकी देर थी। अपना देश बडी तीव्रतासे याद

आ रहा था, पत्नी, बच्चो, सबधियो तथा मित्रोके चित्र बार-बार सामने फिर जाते थे।

"कहिये मोदीजी, मेरी बीबी हवाई अड्डेपर आयेगी या नही ?"

"क्यो, आपको शक क्यो हो रहा है ?"

"मैने रोमसे आर्डिनरी तार भेजा था, एक्सप्रेस भेजना चाहिए था।"

"रोमसे हिंदुस्तान कितने तार जाते होगे। आपका तार आपके घर रातको ही पहुच गया होगा और आपकी पत्नी हवाई अड्डेपर आपका स्वागत करती आपको जरूर मिलेगी।"

मैने समझा कि मेरी और जाफरीसाहबकी मानसिक दशा भिन्न नही है।

मैने वक्त काटनेके लिए कागज-कलम निकाला और कुछ लिखनेमें लग गया। लीजिये, जहाजमे लाल बत्ती जल गई, कमरमे पेटी बाधनेकी सूचना मिली और यह लीजिये हमारा जहाज बबईकी जमीनको, हमारे हिंदुस्तानकी पवित्र भूमिको, छू रहा है। जहाज अपने पहियोपर हवाई अड्डेपर दौड रहा है, उसकी गति धीमी हो रही है। लीजिये जहाज रुक गया। मेरे मुहसे निकला—'जय भारत! जय हिंद!'

●